Printed by Ramchandra Yesu Shedge at the Nirnayasagar Press No 26-28 Kolbhat Lane, Bombay

Published by Javeri Pa..chandra Bhagubhai Shri Jinadattasuri Jnan Bhandar Surat.

जीवविचारसूची ।

नवतत्त्वसूची ।

इति ।

दंडकसूची ।

इति ।

जम्बूद्वीपसंघयणीसूची ।

इति ।

आगमसार अनुक्रमणिका।

इति सूची ॥

नयचक्रसार अनुक्रमणिका



जीवविचारप्रकरणम् ।



प्रणम्य श्रीवर्द्धमानं, सर्वज्ञं सर्वदर्शिनं, जीवविचारबोधार्थं, क्रियते लोकभाषया १ व्याख्या इतिशेषः ।

भुवणपईव वीरं, नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं । जीवसरूवं किंचिवि, जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥१॥

(भुवणपईवं) तीनभुवनरूप संसारमें दीपकके समान, (वीरं) भगवान् महावीरको, (नमिऊण) नमस्कार करके, (अबुहबोहत्थं) अज्ञ लोगोंको ज्ञान करानेके लिये, (पुव्वसूरीहिं) पुराने आचार्योंने, (जह भणियं) जैसा कहा है वैसा, (जीवसरूवं) जीवका स्वरूप, (किंचिवि) संक्षेपसे (भणामि) मैं कहता हूँ ॥ १ ॥

प्रश्न—जीवका स्वरूप जाननेसे क्या लाभ है? उत्तर—उनको हम अपनी आत्माके समान समझ कर उनसे बर्ताव करें—उनको तकलीफ न पहुँचावें

१—शास्त्रका फरमान है कि— "पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए। अन्नाणी किं काही? किंवा नाहीय छेय पावगं?" पहले ज्ञान होगा तब ही अहिंसाधर्मका पालन हो सक्ता है ।

प्र०—यदि हम उनको सतावेंगे तो क्या होगा ? उ०—वे भी हमें सतावेंगे—बदला लेंगे, इस वक्त कमजोर होनेके सबब ये बदला न ले सकेंगे तो दूसरे जन्ममें लेंगे

प्र०—भगवान्‌को भुवन-प्रदीप क्यों कहा ? उ०—जैसे दीपक घट-पट आदि पदार्थोंको प्रकाशित करता है वैसे भगवान् सारे संसारके पदार्थोंको प्रकाशित करते हैं-खुद जानते हैं तथा समवसरणमें औरोंको उपदेश देते हैं-इसलिये उनको भुवन प्रदीप कहते हैं

—[illegible] अज्ञ किनको समझना चाहिये ? उ०—जो लोग, जीवके स्वरूपको नहीं जानते उनको

आचार्य कौन हैं ? उ०—गौतम स्वामी, सुधर्मा स्वामी आदि

[illegible]संसारिणो य, तस थावरा य संसारी । पुढवी-जल-जलण वाऊ, वणस्सई थावरा नेया ॥२॥

[illegible] जीव, दो प्रकारके हैं (मुक्का) १ मुक्त (य) और (संसारिणो) २ संसारी हैं (तस) त्रस जीव, (य) [illegible]) स्थावर जीव, (संसारी) संसारी दोप्रकारके हैं त्रसके भेद आगे कहेंगे (पुढवी जल जलण वाऊ [illegible]वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पतिको (थावरा) स्थावर (नेया) जानना ॥ २ ॥

भावार्थ—जीवके दो भेद हैं;-मुक्त और संसारी संसारी जीवके दो भेद हैं;-त्रस और स्थावर स्थावर जीवके पाँच भेद हैं;-पृथ्वीकाय, जलकाय-अप्काय, अग्निकाय-तेजःकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय

प्र०—जीव किसको कहते हैं ?   उ०—जो प्राणोंको धारण करे प्राण दो तरहके हैं, भाव-प्राण और द्रव्य-प्राण कहते हैं चेतनाको भाव-प्राण कहते हैं पाँच इन्द्रियाँ—आँख, जीभ, नाक, कान और त्वचा; त्रिविध बल—मनोबल, वचनबल और कायबल, श्वासोच्छ्वास और आयु ये दस द्रव्य-प्राण हैं

प्र०—मुक्त किसको कहते हैं ?   उ०—जिसका जन्म और मरण न होता हो—जो जीव, जन्म-मरणसे छूट गया हो

प्र०—संसारी किसको कहते हैं ?   उ०—जो जीव जन्म-मरणके चक्करमें फँसा हो

प्र०—त्रस किसको कहते हैं ?   उ०—जो जीव, सर्दी-गरमीसे अपना बचाव करनेके लिये चल-फिर सके, वह त्रस

प्र०—स्थावर किसको कहते हैं ?   उ०—जो जीव सर्दी-गरमीसे अपना बचाव करनेके लिये चल-फिर न सके, वह स्थावर ।

प्र०—पृथ्वीकाय आदिका क्या अर्थ है ?   उ०—कायका अर्थ है शरीर। जिस जीवका शरीर पृथ्वीका हो, वह पृथ्वीकाय। जिसका शरीर जलका हो, वह जलकाय, जिसका अग्निका हो, वह अग्निकाय। जिसका वायुका हो, वह वायुकाय। जिसका वनस्पतिका हो, वह वनस्पतिकाय

फलिहमणि-रयण विदुम , हिंगुल हरियाल-मणसिल-रसिंदा ।
कणगाइ धाउ-सेढी-, वन्निअ-अरणेट्टय पलेवा ॥ ३ ॥

अब्भय तूरी-ऊस, मट्टी-पाहाण-जाइओ णेगा। सोवीरंजण-लूणा-इ, पुढवि भेआइ इच्चाई ॥ ४ ॥

(फलिह) स्फटिक, (मणि) मणि–चन्द्रकान्त आदि, (रयण) रत्न–वज्रकर्केतन आदि, (विद्रुम) मूंगा, (हिंगुल) हिङ्गुल-इंगुर, (हरियाल) हरताल, (मणसिल) मैनसिल–मनःशिला, (रसिंद) रसेन्द्र–पारा–पारद, (कणगाइ धाउ) कनक आदि धातु–सोना, चान्दी, ताम्बा, लोहा, रांगा, सीसा और जस्ता, (सेढी) खटिका–खड़िया, (वन्निअ) वर्णिका–लाल रङ्गकी मिट्टी, सोनागेरु (अरणेट्टय) अरणेट्टक–पत्थरोंके टुकड़ोंसे मिली हुई पीली मिट्टी, (पलेवा) पलेवक–एक किस्मका पत्थर ॥ ३ ॥ (अब्भय) अभ्रक–अबरक, (तूरी) तेजनतूरी (ऊस) क्षारभूमिकी–ऊसरकी मिट्टी, पाषाणसार (मट्टी पाहाण जाइओ णेगा) मिट्टी और पत्थरकी अनेक जातियां, (सोवीरंजण) सुरमा, सायरिया (लूणाई) लवण–नमक, (इच्चाई) इत्यादि (पुढविभेआई) पृथ्वीकाय जीवोंके भेद हैं ॥ ४ ॥

भावार्थ—स्फटिक, मणि, रत्न, मूंगा, हिंगलू, हरताल, मैनसिल, पारा, सोना, चान्दी, ताम्बा, लोहा रांगा, सीसा–शीशा, जस्ता, खड़िया, सोनागेरु पाषाणके टुकड़ोंसे मिली हुई पीली मिट्टी, पलेवक नामक पत्थर, अबरक, तेजनतूरी नामक मिट्टी, ऊसरकी मिट्टी, और भी काली, पीली आदि रंगकी मिट्टी तथा पत्थर; सफेद, काला, लाल रंगका सुरमा; सांभर आदि नमक, इस प्रकार और भी बहुतसे पृथ्वीकाय जीवोंके भेद समझना चाहिये

प्र०—क्या इन सोने-चान्दीके गहनोंमें भी जीव हैं? उ०—नहीं, जब तक सोना–चान्दी खानमें रहता है

तब तक उसमें जीव रहता है, खानसे निकालनेपर गलानेसे जीव नष्ट हो जाता है इस तरह पत्थरोंका काटना — लने तथा मिट्टियोंको पैरोंसे घलने आदिसे भी जीव नष्ट होते हैं।

भोमतरिक्ख-मुदग, ओसाहिम-करग-हरितणू महिआ। हुंति घणोदहिमाई, भेआ णेगा य आउस्स॥५॥

(भोमं) भूमिका-कूँआ, तालाब आदिका जल, (अंतरिक्खमुदगं) अन्तरिक्षका-आकाशका जल (ओसा) ओस, (हिम) बर्फ, (करग) ओले, (हरितणू) हरित वनस्पतिके-खेतमें बोये हुए गेहूँ, जव आदिके-बालोंपर जो पानीके बूंद होते हैं, वे, (महिया) महिमा-छोटे छोटे जलके कण जो बादलोंसे गिरते हैं, (घणोदहिमाई) घनोदधि आदि, (आउस्स) अप्काय जीवके, (भेआ णेगा) अनेक भेद, (हुंति) होते हैं॥ ५॥

भावार्थ—कूँआ, तालाब आदिका पानी, वर्षाका पानी, ओसका पानी, बर्फका पानी, ओलोंका पानी, खेतकी वनस्पतिके ऊपरके जलीय कण, आकाशमें बादलोंके घिरनेपर कभी कभी सूक्ष्म जल-तुषार गिरते हैं, वे, तथा घनोदधि ये सब, तथा और भी अप्काय जीवके भेद हैं

प्र०—घनोदधि किसे कहते हैं? उ०—स्वर्ग और नरक-पृथ्वीके आधार-भूत जलीयपिण्डको

इंगाल जाल-मुम्मुर,-उक्कासणि-कणग-विज्जुमाईआ। अगणिजिआण भेआ, नायव्वा निउणबुद्धीए॥६॥

(इंगाल) अंगार-ज्वालारहित काष्ठकी अग्नि, (जाल) ज्वाला (मुम्मुर) कण्डेकी अथवा भरसाँयकी गरम राखमें

रहनेवाले अग्नि–कण, (उक्का) उल्का–आकाशसे जो अग्निकी वर्षा होती है वह, (असणि) अशनि–वज्रकी अग्नि, (कणग) आकाशमें उड़नेवाले अग्नि–कण, (विज्जुमाइया) बिजलीकी अग्नि इत्यादि, (अगणिजिआण) अग्निकाय जीवोंके (मेआ) भेद (निउणबुद्धीए) निपुण–बुद्धिसे–सूक्ष्म–बुद्धिसे (नायव्वा) जानना ॥ ६ ॥

भावार्थ—काष्ठ आदिकी ज्वाला–रहित अग्नि, अग्निकी ज्वाला, कण्डेकी अथवा भरसाँयकी गरम राखमें रहनेवाले अग्नि–कण, उल्काकी अग्नि, आकाशीय अग्नि–कण, वज्रकी अग्नि, विद्युत्की अग्नि ये तथा अन्य भी अग्निकाय जीवोंके भेद सूक्ष्म–बुद्धिसे जानना चाहिये

उब्भामग-उक्कलिया, मंडलि-मह-सुद्ध-गुंजवाया य। घणतणु-वायाईया, भेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥

(उब्भामग) उद्भ्रामक–तृण आदिको आकाशमें उड़ानेवाला वायु, (उक्कलिया) उत्कलिका–नीचे बहनेवाला वायु, जिससे धूलिमें रेखायें हो जाती हैं (मंडलि) गोलाकार बहनेवाला वायु, (मह) महावात–आन्धी, (सुद्ध) शुद्ध–मन्दवायु, (गुंजवाया य) और गुञ्जवायु–जिसमें गूँजनेकी आवाज होती है, (घणतणुवायाईया) घनवात, तनुवात आदि, खलु (वाउकायस्स) वायुकायके (भेया) भेद निश्चय हैं ॥ ७ ॥

भावार्थ—आकाशमें ऊँचा बहनेवाला, नीचे बहनेवाला, गोलाकार बहनेवाला, आन्धी, मन्द–वायु, गुञ्जारव करनेवाला वायु, घनवात, तनुवात, ये सब, तथा उ... भी वायुकायजीवोंके भेद हैं

प्र०—घनवात और तनुवातमें क्या फर्क है? उ०—घनवात जमे हुए घीकी तरह गाढ़ा है और तनुवात तपाये हुये घीकी तरह तरल है; घनवात स्वर्ग तथा नरक-पृथ्वीका आधार है और तनुवात नरक-पृथ्वीके नीचे है

साहारण-पत्तेआ, वणसइजीवा दुहा सुए भणिआ। जेसिमणंताण तणु, एगा साहारणा तेऊ ॥ ८ ॥

(सुए) सूत्रमें-शास्त्रमें, (वणसइजीवा) वनस्पति-कायके जीव, (साहारण पत्तेआ) साधारण और प्रत्येक ऐसे, (दुहा) दो प्रकारके (भणिया) कहे गये हैं (जेसिमणताणं) जिन अनन्त जीवोंका (एगा) एक (तणु) शरीर हो, (तेऊ) वे (साहारणा) साधारण कहलाते हैं ॥ ८ ॥

भावार्थ—सिद्धान्तमें वनस्पतिकाय जीवोंके दो भेद कहे गये हैं;—साधारण-वनस्पति-काय और प्रत्येक वनस्पति-काय जिन अनन्त जीवोंका शरीर एक हो वे जीव, 'साधारण-वनस्पतिकाय' कहलाते हैं

कंदा अंकुर किसलय,-पणगा-सेवाल-भूमिफोडा अ। अछ्य तिय-गज्जर-मो,-त्थ वत्थुला-थेग-पल्लंका ९ कोमलफल च सव्व, गूढसिराइं सिणाइपत्ताइं। थोहरि-कुआरि-गुग्गुलि, गलोय-पमुहाइ-छिन्नरुहा ॥ १० ॥

(कंदा) जमीकन्द—आलू, सूरन, मूलीका कन्द आदि (अंकुर) अङ्कुर, (किसलय) नये कोमल पत्ते, (पणगा सेवाल) पाँच रंगकी फुलि—जो कि वासी अन्न वगैरेमें पैदा होती है, और सेवाल पाणीपर जमती है (भूमिफोडा) भूमिस्फोट,—वर्षा ऋतुमें छत्रके आकारकी वनस्पति होती है, (अल्लयतिय) अद्रक, हल्दी और कर्चूर, (गज्जर) गाजर,

(मोत्थ) नागरमोथा, (वत्थुला) बथुआ, (थेग) एक किस्मका कन्द, (पल्लंका) पालका—शाकविशेष ॥९॥ (कोमलफलं च सव्वं) सब तरहके कोमल फल—जिनमें बीज पैदा न हुये हों, (गूढ सिराइं सिणाइ पत्ताइं) जिनकी नसें प्रकट न हुई हों, वे, तथा सन आदिके पत्ते, (थोहरि) थूहर, (कुंआरि) कुंवारपाठो, (गुग्गुलि) गुग्गुल, (गळोय) गिलोय—गुर्च, (पमुहाइ) आदि, (छिन्नरुहा) छिन्नरुह—काटनेपर भी उगनेवाली कुछ वनस्पतियाँ ॥ १० ॥

भावार्थ—आलू, सूरन, मूलीका कन्द, अङ्कुर, नये कोमल पत्ते, और कुम्भि जो कि बासी अन्नमें पाँच रंग की पैदा होती है और सेवाल, वर्षा ऋतुमें पैदा होनेवाली छत्राकार वनस्पति, अद्रक, हल्दी, कर्चूक, गाजर, नागरमोथा, बथुआ, थेग नामक कन्द, पालको, जिनमें बीज पैदा न हुये हों, ऐसे कोमल फल, जिनमें नसें प्रकट न हुई हों, वे, और सन आदिके पत्ते, थूहर, घीकुंवार, गुग्गुल तथा काटनेपर बोह देनेसे उगनेवाली गुर्च नीमगिलोय आदि वनस्पतियाँ, ये सब साधारण—वनस्पतिकाय कहलाते हैं, इनको अनन्तकाय और बादर निगोदके जीव भी कहते हैं यहाँ यह समझना चाहिये कि ये सब गीली वनस्पतियाँ ही सजीव होती हैं, सूखी नहीं

इच्चाइणो अणेगे, हवंति भेया अणंतकायाण । तेसिं परिजाणणत्थं, लक्खणमेयं सुए भणियं ॥११॥

(इच्चाइणो) इत्यादि, (अणेगे) अनेक (भेया) भेद, (अणंतकायाण) अनन्तकाय जीवोंके, (हवंति) हैं, (तेसिं) उनके, (परिजाणणत्थं) अच्छी तरह जाननेके लिये, (सुए) श्रुतमें—शास्त्रमें, (एयं) यह (लक्खणं) लक्षण (भणियं) कहा है ॥ ११ ॥

भावार्थ—नव और दसवीं गाथाओंमें जो अनन्तकायके भेद गिनाये हैं, उनसे भी अधिक भेद हैं, उन सबको समझानेके लिये सिद्धान्तमें अनन्तकायका लक्षण कहा है

गूढसिरसंधिपव्वं, समभंग-महीरुहं च छिन्नरुहं । साहारण सरीरं, तव्विवरीअं च पत्तेयं ॥ १२ ॥

जिनकी (सिर) नसें, (संधि) सन्धियाँ, और (पव्व) पर्व—गाँठें, (गूढ) गुप्त हों—देखनेमें न आवें, (समभंग) जिनको तोडनेसे समान टुकडे हों, (अहीरुहं) जिनमें तन्तु न हों, (छिन्नरुहं) जो काटनेपर भी उगें ऐसी वनस्पतियाँ—फल, फूल, पत्ते, मूलियाँ आदि, (साहारणं) साधारण, (सरीरं) शरीर है (तव्विवरीअं च) और उससे विपरीत, (पत्तेयं) प्रत्येक—वनस्पतिकाय है ॥ १२ ॥

भावार्थ—अनन्तकाय वनस्पति उसको समझना चाहिये "जिस वनस्पतिमें नसें, सन्धियाँ और गाँठें न हों; जिसको तोडनेसे समान भाग हों; जिसमें तन्तु न हो; जिसको काटकर बो देनेसे [illegible] उगे;" जिसमें उक्त लक्षण न हों, उस वनस्पतिको 'प्रत्येक—वनस्पति' समझना चाहिये ।

एगसरीरे एगो, जीवो जेसिं तु ते य पत्तेया । फल-फूल-छल्लि-कट्ठा, मूलगपत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥

(जेसिं) जिनके (एगसरीरे) एक शरीरमें (एगो जीवो) एक जीव हो (ते तु) वे तो (पत्तेया) प्रत्येक—वनस्पतिकाय हैं; उनके सात भेद हैं (फल, फूल, छल्लि, कट्ठा) फल, पुष्प, छाल, काठ, (मूलग) मूलियाँ, (पत्ताणि) पत्ते, और (बीयाणि) बीज॥१३॥

भावार्थ—जिन वनस्पतियोंके एक शरीरमें एक जीव हो अर्थात् एक शरीरका एक ही जीव, स्वामी हो, उन वनस्पतियोंको प्रत्येक-वनस्पतिकाय समझना चाहिये, प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवके सात भेद हैं—फल, पुष्प, छाल, काष्ठ, मूलियाँ, पत्ते और बीज

पत्तेयं तरु मोत्तुं, पंचवि पुढवाइणो सयललोए। सुहुमा हवंति नियमा, अंतमुहुत्ताउ अद्दिस्सा ॥ १४ ॥

(पत्तेय तरु) प्रत्येक-वनस्पतिकायको (मोत्तुं) छोड़कर, (पंचवि) पाँचों ही (पुढवाइणो) पृथ्वीकाय आदि, (सुहुमा) सूक्ष्म-स्थावर (सयल लोए) सम्पूर्ण लोकमें (हवंति) विद्यमान हैं—रहते हैं—और वे (नियमा) नियमसे (अंतमुहुत्ताउ) अन्तर्मुहूर्त आयुष्यवाले होते हैं, तथा (अद्दिस्सा) अदृश्य हैं—आँखसे देखनेमें नहीं आते ॥ १४ ॥

भावार्थ—प्रत्येक-वनस्पतिकायको छोड़कर पृथ्वीकाय आदि पाँचों ही सूक्ष्म-स्थावर सम्पूर्ण लोकमें भरे पड़े हैं उनकी आयु अन्तर्मुहूर्तकी होती है तथा वे इतने छोटे हैं कि आँख उन्हें नहीं देख सकती

प्र०—अन्तर्मुहूर्त किसे कहते हैं? उ०—नव समयसे लेकर, एक समय कम, दो घड़ी जितना काल अन्तर्मुहूर्त कहलाता है नव समयोंका अन्तर्मुहूर्त सबसे छोटा अर्थात् जघन्य है; और, दो घड़ीमें एक समय कम हो, तो वह अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट है; बीचके कालमें, नव समयसे आगे, एक एक समय बढ़ाते जाँय तो, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त तक, असंख्य अन्तर्मुहूर्त होते हैं

प्र०—समय किसे कहते हैं? उ०—उस सूक्ष्म कालको, जिसका कि सर्वज्ञकी दृष्टिमें भी विभाग न हो सके

प्र०—मुहूर्त किसे कहते हैं? उ०—दो घड़ी अर्थात् अड़तालीस मिनिटोंका मुहूर्त होता है

विशेष—प्रत्येकवनस्पतिकाय नियमसे बादर है, पाँच स्थावर, सूक्ष्म और बादर दो तरहके हैं, सबको मिलाकर ग्यारह भेद हुये; ये ग्यारह पर्याप्त और अपर्याप्तरूपसे दो तरहके हैं, इस तरह स्थावरजीवके बाईस भेद हुये

प्र०—पर्याप्त-जीव किसे कहते हैं? उ०—जो जीव अपनी पर्याप्तियाँ पूरी कर चुका हो, उसे

प्र०—अपर्याप्त-जीव किसे कहते हैं? उ०—जो जीव अपनी पर्याप्तियाँ पूरी न कर चुका हो, उसे

प्र०—पर्याप्ति किसे कहते हैं? उ०—जीवकी उस शक्तिको-जिसके द्वारा जीव, आहारको ग्रहण कर रस, शरीर और इन्द्रियोंको बनाता है तथा योग्य पुद्गलोंको ग्रहण कर श्वासोच्छ्वास, भाषा और मनको बनाता है

सख-कवड्डय गड्डुल, जलोय-चदणग-अलस-लहगाई। मेहरि किमि-पूयरगा, बेइंदिय माइवाहाई ॥१५॥

(संख) शङ्ख—दक्षिणावर्त आदि, (कवड्डय) कपर्दक—कौड़ी, (गड्डुल) गण्डोल पेटमें जो मोटे कृमि गंडोला पैदा होते हैं, (जलोय) जलौका—जोंक, (चदणग) चन्दनक—अक्ष—जिसके निर्जीव शरीरको साधु लोग स्थापनाचार्यमें रखते हैं, (अलस) भूनाग अलसीया जो वर्षा ऋतुमें साँप सरीखे लंबे लाल रंगके जीव पैदा होते हैं, (लहगाई) लहक—लाली यक—जो बासी रोटी आदि अन्नमें पैदा होते हैं, (मेहरि) काष्ठके कीड़े-लट, (किमि) कृमि—पेटमें, फोड़ेमें तथा बवासीर आदिमें पैदा होते हैं, (पूअरगा) पूतरक—पानीके कीड़े, जिनका मुँह काला और रंग लाल या श्वेत-प्राय होता है,

भावार्थ—जिन वनस्पतियोंके एक शरीरमें एक जीव हो अर्थात् एक शरीरका एक ही जीव, स्वामी हो, उन वनस्पतियोंको प्रत्येक-वनस्पतिकाय समझना चाहिये; प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवके सात भेद हैं—फल, पुष्प, छाल, काष्ठ, मूलियाँ, पत्ते और बीज

पत्तेय तरु मोत्तुं, पचवि पुढवाइणो सयललोए। सुहुमा हवंति नियमा, अंतमुहुत्ताउ अद्दिस्सा ॥ १४ ॥

(पत्तेयं तरु) प्रत्येक-वनस्पतिकायको (मोत्तुं) छोड़कर, (पंचवि) पाँचों ही (पुढवाइणो) पृथ्वीकाय आदि, (सुहुमा) सूक्ष्म-स्थावर (सयल लोए) सम्पूर्ण लोकमें (हवंति) विद्यमान हैं—रहते हैं—और वे (नियमा) नियमसे (अंतमुहुत्ताउ) अन्तर्मुहूर्त आयुष्यवाले होते हैं, तथा (अद्दिस्सा) अदृश्य हैं—आँखसे देखनेमें नहीं आते ॥ १४ ॥

भावार्थ—प्रत्येक-वनस्पतिकायको छोड़कर पृथ्वीकाय आदि पाँचों ही सूक्ष्म-स्थावर सम्पूर्ण लोकमें भरे पड़े हैं उनकी आयु अन्तर्मुहूर्तकी होती है तथा वे इतने छोटे हैं कि आँख उन्हें नहीं देख सकती

प्र०—अन्तर्मुहूर्त किसे कहते हैं? उ०—नव समयसे लेकर, एक समय कम, दो घड़ी जितना काल अन्तर्मुहूर्त कहलाता है नव समयोंका अन्तर्मुहूर्त सबसे छोटा अर्थात् जघन्य है; और, दो घड़ीमें एक समय कम हो, तो वह अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट है; बीचके कालमें, नव समयसे आगे, एक एक समय बढ़ाते जाँय तो, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त तक, असंख्य अन्तर्मुहूर्त होते हैं

प्र०—समय किसे कहते हैं? उ०—उस सूक्ष्म कालको, जिसका कि सर्वज्ञकी दृष्टिमें भी विभाग न हो सके-

जो शक्कर और चावलमें पैदा होती है, (इंदगोवाई) इन्द्रगोप—जो वर्षामें लाल रंगका जीव पैदा होता है जिसे पंजाबी चीजन्होटी, और गुजराती गोकलगाय कहते हैं—मारवाडमें मम्मोलाक० इत्यादि (तेइंदिय) त्रीन्द्रिय जीव है ॥ १७ ॥

भावार्थ—जिन जीवोंको सिर्फ शरीर, जीभ और नाक हो, उनको त्रीन्द्रिय कहते हैं,—वे ये हैं;—कानखजूरा, खटमल, जूं, चींटी, दीमक, अनाजमें पैदा होनेवाली इली, मकोड़ा, घीमें पैदा होनेवाली लाल कीडी, शरीरमें पैदा होनेवाली चमंजूं, गायके कानआदिमें पैदा होनेवाले कीडे, गोशालामें पैदा होनेवाले जीव, विष्ठाके कीडे, गोबरके कीडे, अनाजके कीडे, कुन्थु, गोपालिका, शक्कर और चावलमें पैदा होनेवाले जीव इली, इन्द्रगोप आदि

चउरिंदिया य विच्छू,ढिंकुण—भमरा य भमरिया-तिड्डा।मच्छिय-डंसा-मसगा,कंसारी-कविलडोलाई१८

(विच्छू) विच्छू, (ढिंकुण) ढिंकुण—घुड़साल आदिमें पैदा होता है, (भमरा) भ्रमर—भौंरा, (भमरिया) भ्रमरिका—बर्रे, (तिड्डा [illegible] मच्छिय) मक्षिका—मक्खी, मधुमक्खी, (डंसा) दंश—डांस, (मसग—मशक—[illegible] है कविलडोलाई) जीव

खाळमें

(माइयाहाई) मातृवाहिका–जिसको गुजरातमें अधिकता है और वहाँके लोग चूडेल कहते हैं, इत्यादि (बेइंदिय) द्वीन्द्रिय जीव हैं ॥ १५ ॥

भावार्थ—जिन जीवोंके त्वचा और जीभ हो, दूसरी इन्द्रियाँ न हों, वे जीव द्वीन्द्रिय कहलाते हैं, जैसे शंख, कौड़ी, पेटके जीव, जोंक, अक्ष, भूनाग, लालीयक, काष्ठकीट, कृमि, पूतरक और मातृवाहिका आदि

गोमी-मंकण-जूआ, पिपीलि उद्देहिया य मक्कोडा। इल्लिय-घयमिल्लीओ, सावय-गोकीड जाईओ ॥ १६ ॥
गद्दहय-चोरकीडा, गोमयकीडा य धन्नकीडा य। कुंथु-गुवालिय-इलिया, तेइंदिय इंदगोवाई ॥ १७ ॥

(गोमी) गुल्मि–कानखजूरा, (मंकण) मत्कुण–खटमल, (जूआ) यूका–जूँ, (पिपीलि) पिपीलिका–चींटी, काली कीडी (उद्देहियाय) उपदेहिका–दीमक, और (मक्कोडा) मत्कोटक–मकोड़ा, (इल्लिय) इलिका–इली, जो अनाजमें पैदा होती है, (घयमिल्लीओ) घृतेलिका–जो घीमें पैदा होती है, लाखकीडी (सावय) चर्म–यूका–जो शरीरमें पैदा होती है, जिससे भविष्यमें अनिष्टकी शङ्का की जाती है, (गोकीड जाईओ) गोकीटकी जातियाँ अर्थात् पशुओंके कान आदि अवयवोंमें पैदा होनेवाले जीव ॥ १६ ॥ (गद्दहय) गर्दभक–गोशाला आदिमें पैदा होनेवाले सफेद रंगके जीव, (चोर कीडा) चोरकीट–विष्ठाके कीड़े, (गोमयकीडा) गोमयकीट–गोबरके कीड़े, (धन्नकीडाय) धान्यकीट–अनाजके कीड़े, और (कुंथु) कुन्थु–एक किसमका कीडा, (गुवालिय) गोपालिका–एक किसमका अप्रसिद्ध जीव, (इलिया) ईलिका–

जो शक्कर और चावलमें पैदा होती है, (इंदगोवाई) इन्द्रगोप—जो वर्षामें लाल रंगका जाय पैदा होता है जिसे पंजाबी चीजम्होटी, और गुजराती गोकलगाय कहते हैं—मारवाड़में मम्मोलाक० इत्यादि (तेइंदिय) त्रीन्द्रिय जीव हैं ॥ १७ ॥

भावार्थ—जिन जीवोंको सिर्फ शरीर, जीभ और नाक हो, उनको त्रीन्द्रिय कहते हैं,—वे ये हैं,—कानखजूरा, खटमल, जूँ, चींटी, दीमक, अनाजमें पैदा होनेवाली इली, मकोड़ा, घीमें पैदा होनेवाली लाल कीड़ी, शरीरमें पैदा होनेवाली चर्मजूँ, गायके कानआदिमें पैदा होनेवाले कीड़े, गोशालामें पैदा होनेवाले जीव, विष्ठाके कीड़े, गोबरके कीड़े, अनाजके कीड़े, कुन्थु, गोपालिका, शक्कर और चावलमें पैदा होनेवाले जीव इली, इन्द्रगोप आदि

चउरिंदिया य विच्छू, ढिंकुण—भमरा य भमरिया तिड्डा। मच्छिय डंसा-मसगा, कंसारी-कविलडोलाई १८

(विच्छू) विच्छु, (ढिंकुण) ढिंकुण—खुड़साल आदिमें पैदा होता है, (भमरा) भ्रमर—भौंरा, (भमरिया) भ्रमरिका—बर्रे, (तिड्डा) टिड्डी—टीड़ी, (मच्छिय) मक्षिका—मक्खी, मधुमक्खी, (डंसा) दंश—डांस, (मसगा) मशक—मच्छर, (कंसारी) कंसारिका—जो उजाड़ जगहमें पैदा होती है, (कविलडोलाई) कपिलडोलक—एक किस्मका जीव जिसे गुजराती खडमाँकडी कहते हैं, इत्यादि (चउरिंदिया) चतुरिन्द्रिय जीव हैं ॥ १८ ॥

भावार्थ—जिन जीवोंको शरीर, जीभ, नाक और आँख हो, वे चतुरिन्द्रिय कहलाते हैं, जैसे—विच्छु, खुड़सालमें पैदा होनेवाला ढिंकुण नामक जीव, भमरा, बर्रे, मक्खी, मधुमक्खी, डाँस, मच्छर, टीड़ी, कंसारिका, कपिलडोलक आदि।

पंचिंदिया य चउद्धा, नारय तिरिया-मणुस्स-देवा य। नेरइया सत्तविहा, नायव्वा पुढविभेएण ॥ १९ ॥

(पंचिंदिया) पञ्चेन्द्रिय जीव (चउद्धा) चतुर्धा—चार प्रकारके हैं (नारय) नारकिया, (तिरिया) तिर्यञ्च, (मणुस्स) मनुष्य (य) और (देवा) देव, (नेरइया) नैरयिक-नरकमें रहनेवाले जीव (पुढविभेएणं) पृथ्वीके भेदसे (सत्तविहा) सप्तविधा—सात प्रकारके (नायव्वा) जानना ॥ १९ ॥

भावार्थ—पञ्चेन्द्रिय जीवके चार भेद हैं—नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव भिन्न भिन्न सात स्थानोंमें पैदा होनेके कारण नारक जीव सात प्रकारके हैं उन सात स्थानोंके—नरकोंके नाम ये हैं—रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा और तमस्तमःप्रभा

"पञ्चेन्द्रिय जीवोंमें नारकोंके भेद कहकर अब चार गाथाओंसे पञ्चेन्द्रिय, तिर्यञ्च और मनुष्योंके भेद कहते हैं"

जलयर-थलयर-खयरा, तिविहा पचेंदिया तिरिक्खा य। सुसुमार-मच्छ-कच्छव,गाहा-मगराइ जलचारी

(जलयर) जलचर, (थलयर) स्थलचर, (खयरा) खेचर (पचेंदिया) पञ्चेन्द्रिय (तिरिक्खा) तिर्यञ्च (तिविहा) त्रिविध अर्थात् तीन प्रकारके हैं (जलचारी) जलमें रहनेवाले (सुसुमार) शिशुमार—सुइस, जिसका आकार भैंस जैसा होता है, (मच्छ) मत्स्य—मछली, (कच्छव) कच्छप कछुआ, (गाहा) ग्राह—घड़ियाल, (मगराइ) मकर—मगर आदि हैं ॥ २० ॥

भावार्थ—पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चके तीन भेद हैं—जलचर, स्थलचर और खेचर जलचर जीव ये हैं—सुंस, मछली, कछुआ, ग्राह, मकर आदि

चउपय-उरपरिसप्पा, भुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा। गो-सप्प-नउल-पमुहा, बोधव्वा ते समासेणं॥२१॥

(थलयरा) स्थलचर जीव (तिविहा) त्रिविध अर्थात् तीन प्रकारके हैं, (चउपय) चतुष्पद—चार पैरसे चलनेवाले, (उरपरिसप्पा) उरःपरिसर्प—छातीसे–पेटसे चलनेवाले (य) और (भुयपरिसप्पा) भुजपरिसर्प—भुजाओंसे चलनेवाले, (गो) गाय, (सप्प) साँप, (नउल) नकुल नयलिया (पमुहा) प्रमुख—आदि (ते) वे (समासेणं) समाससे—संक्षेपसे (बोधव्वा) जानने ॥ २१ ॥

भावार्थ—जमीनपर चलनेवाले जीव-जिनको स्थलचर कहते हैं—तीन प्रकारके हैं, (१) चार पैरसे चलनेवाले गाय, भैंस आदि; (२) पेटसे चलनेवाले सर्पादि; (३) भुजाओंसे चलनेवाले नकुल—न्योला आदि। क्रमशः इन तीनोंकोंको चतुष्पद, उरःपरिसर्प और भुजपरिसर्प कहते हैं

खयरा-रोमय-पक्खी, चम्मयपक्खी य पायडा चेव। नरलोगाओ बाहिं, समुग्गपक्खी वियययपक्खी ॥२२॥

(खयरा) खेचर—आकाशमें उडनेवाले जीव (रोमयपक्खी) रोमजपक्षी (य) और (चम्मयपक्खी) चर्मजपक्षी (पायडा) प्रकट हैं—प्रसिद्ध हैं (नरलोगाओ) नरलोकसे—मनुष्यलोकसे (बाहिं) बाहर (समुग्गपक्खी) समुद्गपक्षी और (वियययपक्खी) विततपक्षी हैं ॥ २२ ॥

भावार्थ—आकाशमें उड़नेवाले तिर्यञ्च, खेचर कहलाते हैं, उनके दो भेद हैं—रोमजपक्षी, और चर्मजपक्षी रोमसे जिनके पङ्ख बने हैं वे रोमजपक्षी, जैसे—तोता, हंस, सारस आदि चामसे जिनके पङ्ख बने हैं वे चर्मजपक्षी, जैसे—चमगादड़ आदि जहाँ मनुष्यका निवास नहीं है, उस भूमिमें दो तरहके पक्षी होते हैं—समुद्गपक्षी और विततपक्षी सिकुड़े हुए, जिनके डब्बेके समान पङ्ख हों, वे समुद्गपक्षी जिनके पङ्ख फैले हुए हों, वे विततपक्षी कहलाते हैं

सव्वे जल-थल-खयरा, संमुच्छिमा गब्भया दुहा हुंति। कम्माकम्मगभूमि, अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥

(सव्वे) सब (जलथलखयरा) जलचर, स्थलचर, और खेचर (संमुच्छिमा) सम्मूर्च्छिम, (गब्भया) गर्भज (दुहा) द्विधा—दो प्रकारके (हुंति) होते हैं (मणुस्सा) मनुष्य (कम्माकम्मग भूमि) कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज (य) और (अंतरदीवा) अन्तर्द्वीपवासी हैं ॥ २३ ॥

भावार्थ—पहले तिर्यञ्चके तीन भेद कहे हैं—जलचर, स्थलचर, और खेचर ये तीनों दो दो प्रकारके हैं—सम्मूर्च्छिम, और गर्भज जो जीव, मा-बापके विना ही पैदा होते हैं, वे सम्मूर्च्छिम कहलाते हैं जो जीव, गर्भसे पैदा होते हैं वे गर्भज मनुष्यके तीन भेद हैं, कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज, और अन्तर्द्वीपनिवासी खेती, व्यापार आदि कर्म-प्रधान भूमिको कर्मभूमि कहते हैं। उसमें पैदा होनेवाले मनुष्य कर्मभूमिज कहलाते हैं। कर्मभूमियाँ पन्दरह हैं। पाँच भरत पाँच ऐरवत और पाँच महाविदेह जहाँ खेती, व्यापार आदि कर्म नहीं होता उस भूमिको अकर्मभूमि कहते हैं, वहाँ पैदा होनेवाले मनुष्य अकर्मभूमिज कहलाते हैं। अकर्मभूमियोंकी संख्या तीस है। वह इस प्रकार:—ढाई द्वीपमें पाँच

मेरु है, प्रत्येक मेरुके दोनों तरफ अर्थात् उत्तर तथा दक्षिणकी ओर १ हैमवंत, २ ऐरण्यवंत, ३ हरिवर्ष, ४ रम्यक, ५ देवकुरु और ६ उत्तरकुरु, इन नामोंकी छह छह भूमियाँ हैं, इन छह भूमियोंको पाँच मेरुओंसे गुणनेपर तीस संख्या होती है अन्तर्द्वीपमें पैदा होनेवाले मनुष्य अन्तर्द्वीपनिवासी कहलाते हैं, अन्तर्द्वीपोंकी संख्या छप्पन है, वह इस प्रकार–भरतक्षेत्रसे उत्तर दिशामें हिमवान् नामक पर्वत है, वह पूर्व दिशामें तथा पश्चिम दिशामें लवणसमुद्रतक लम्बा है, इसकी पूर्व तथा पश्चिममें ईशानादिविदिशोंमें दो दो दंष्ट्राकार भूमियाँ समुद्रके भीतर हैं, इस तरह पूर्व तथा पश्चिमकी चार दंष्ट्रायें हुई; इसी प्रकार ऐरवतक्षेत्रसे उत्तर, शिखरी नामक पर्वत है, वह भी पूर्व तथा पश्चिममें समुद्र तक लम्बा है और दोनों दिशाओंमें दो दो दंष्ट्राकार भूमियाँ समुद्रके अन्दर घुसी हैं, दोनोंकी आठ दंष्ट्रायें हुई, हर एक दंष्ट्रामें सात सात अन्तर्द्वीप हैं, सातको आठसे गुणनेपर छप्पन संख्या हुई

विशेष—कर्मभूमि, अकर्मभूमि और अन्तर्द्वीप, ये सब ढाई द्वीपमें हैं जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड और पुष्करवरद्वीपका आधा भाग, इनको ढाई द्वीप कहते हैं इस ढाई द्वीपमें ही मनुष्य पैदा होते हैं तथा मरते हैं, इसलिये इसको 'मनुष्यक्षेत्र' कहते हैं, इसका परिमाण पैंतालीस लाख योजन है अकर्मभूमि और अन्तर्द्वीपमें जो मनुष्य रहते हैं, उन्हें 'युगलिया' कहते हैं, इसका कारण यह है कि स्त्री–पुरुषका युग्म–जोड़ा–साथ ही पैदा होता है और उनका वैवाहिक सम्बन्ध भी परस्पर ही होता है इनकी ऊँचाई आठसौ धनुषकी, और आयु, पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग जितनी है पन्द्रह कर्मभूमियाँ, तीस अकर्मभूमियाँ और छप्पन अन्तर्द्वीप, इन सबको मिलानेसे एकसौ एक मनुष्य-

भावार्थ—आकाशमें चलनेवाले तिर्यञ्च, खेचर कहलाते हैं, उनके दो भेद हैं—रोमजपक्षी, और चर्मजपक्षी रोमसे जिनके पङ्ख बने हैं वे रोमजपक्षी, जैसे—तोता, हंस सारस आदि चामसे जिनके पङ्ख बने हैं वे चर्मजपक्षी, जैसे—चमगादड़ आदि जहाँ मनुष्यका निवास नहीं है, उस भूमिमें दो तरहके पक्षी होते हैं—समुद्गपक्षी और विततपक्षी सिकुड़े हुए, जिनके डब्बेके समान पङ्ख हों, वे समुद्गपक्षी जिनके पङ्ख फैले हुए हों, वे विततपक्षी कहलाते हैं

सवे जल-थल-खयरा, समुच्छिमा गब्भया दुहा हुंति। कम्माकम्मगभूमि, अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥

(सवे) सब (जलथलखयरा) जलचर, स्थलचर, और खेचर (संमुच्छिमा) सम्मूर्च्छिम, (गब्भया) गर्भज (दुहा) द्विधा—दो प्रकारके (हुंति) होते हैं (मणुस्सा) मनुष्य (कम्माकम्मग भूमि) कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज (य) और (अंतरदीवा) अन्तर्द्वीपवासी हैं ॥ २३ ॥

भावार्थ—पहले तिर्यञ्चके तीन भेद कहे हैं—जलचर, स्थलचर, और खेचर ये तीनों दो दो प्रकारके हैं—सम्मूर्च्छिम, और गर्भज जो जीव, मा-बापके बिना ही पैदा होते हैं, वे संमूर्च्छिम कहलाते हैं जो जीव, गर्भसे पैदा होते हैं वे गर्भज मनुष्यके तीन भेद हैं, कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज, और अन्तर्द्वीपनिवासी खेती, व्यापार आदि कर्म-प्रधान भूमिको कर्मभूमि कहते हैं। उसमें पैदा होनेवाले मनुष्य, कर्मभूमिज कहलाते हैं; कर्मभूमियाँ पन्द्रह हैं; पाँच भरत पाँच ऐरवत और पाँच महाविदेह जहाँ खेती, व्यापार आदि कर्म नहीं होता उस भूमिको अकर्मभूमि कहते हैं, वहाँ पैदा होनेवाले मनुष्य अकर्मभूमिज कहलाते हैं, अकर्मभूमियोंकी संख्या तीस है। वह इस प्रकार—ढाई द्वीपमें पाँच

मेरु है, प्रत्येक मेरुके दोनों तरफ अर्थात् उत्तर तथा दक्षिणकी ओर १ हैमवंत, २ ऐरण्यवंत, ३ हरिवर्ष, ४ रम्यक, ५ देवकुरु और ६ उत्तरकुरु, इन नामोंकी छह छह भूमियाँ हैं, इन छह भूमियोंको पाँच मेरुओंसे गुणनेपर तीस संख्या होती है अन्तर्द्वीपमें पैदा होनेवाले मनुष्य अन्तर्द्वीपनिवासी कहलाते हैं, अन्तर्द्वीपोंकी संख्या छप्पन है, वह इस प्रकार–भरतक्षेत्रसे उत्तर दिशामें हिमवान् नामक पर्वत है, यह पूर्व दिशामें तथा पश्चिम दिशामें लवणसमुद्रतक लम्बा है, इसकी पूर्व तथा पश्चिममें ईशानादिविदिशोंमें दो दो दंष्ट्राकार भूमियाँ समुद्रके भीतर है, इस तरह पूर्व तथा पश्चिमकी चार दंष्ट्रायें हुईं; इसी प्रकार ऐरवतक्षेत्रसे उत्तर, शिखरी नामक पर्वत है, यह भी पूर्व तथा पश्चिममें समुद्र तक लम्बा है और दोनों दिशाओंमें दो दो दंष्ट्राकार भूमियाँ समुद्रके अन्दर घुसी हैं, दोनोंकी आठ दंष्ट्रायें हुईं, हर एक दंष्ट्रामें सात सात अन्तर्द्वीप हैं, सातको आठसे गुणनेपर छप्पन संख्या हुई

विशेष—कर्मभूमि, अकर्मभूमि और अन्तर्द्वीप, ये सब ढाई द्वीपमें हैं जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड और पुष्करवरद्वी पका आधा भाग, इनको ढाई द्वीप कहते हैं इस ढाई द्वीपमें ही मनुष्य पैदा होते हैं तथा मरते हैं, इसलिये इसको 'मनुष्यक्षेत्र' कहते हैं, इसका परिमाण पैंतालीस लाख योजन है अकर्मभूमि और अन्तर्द्वीपमें जो मनुष्य रहते हैं, उन्हें 'युगलिया' कहते हैं, इसका कारण यह है कि स्त्री–पुरुषका युग्म–जोड़ा–साथ ही पैदा होता है और उनका वैवा हिक सम्बन्ध भी परस्पर ही होता है इनकी ऊँचाई आठसो धनुषकी, और आयु, पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग जितनी है पन्द्रह कर्मभूमियाँ, तीस अकर्मभूमियाँ और छप्पन अन्तर्द्वीप, इन सबको मिलानेसे एकसो एक मनुष्य-

भूमियाँ हुए, इनमें पैदा होनेसे मनुष्योंके भी उतने ही भेद हुए, इनके भी पर्याप्त और अपर्याप्त रूपसे दो भेद हैं, इसलिये दोसौ दो भेद हुए इन गर्भज मनुष्योंके मल, कफ आदिमें जो मनुष्य पैदा होते हैं, वे संमूर्च्छिम कहलाते हैं तथा वे अपनी पर्याप्ति पूरी किये बिना ही मर जाते हैं; इनके—संमूर्च्छिम मनुष्यके—एकसौ एक भेदोंके साथ दोसौ दोको मिलानेसे मनुष्योंके तीनसौ तीन भेद होते हैं

दसहा भवणाहिवई, अट्ठविहा वाणमंतरा हुंति । जोइसिया पंचविहा, दुविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥

(भवणाहिवई) भवनाधिपति देवता, (दसहा) दशधा दस प्रकारके हैं, (वाणमंतरा) वानमन्तर देवता, (अट्ठविहा) अष्टविधा—आठ प्रकारके, (हुंति) होते हैं, (जोइसिया) ज्योतिष्का—ज्योतिष्क देवता, (पंचविहा) पञ्चविधा—पाँच प्रकारके हैं और (वेमाणिया देवा) वैमानिक देवता, (दुविहा) दो प्रकारके हैं ॥ २४ ॥

भावार्थ—भवनपति देवताओंके दस भेद हैं—१ असुरकुमार, २ नागकुमार, ३ सुपर्णकुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अग्निकुमार, ६ द्वीपकुमार, ७ उदधिकुमार, ८ दिक्कुमार, ९ वायुकुमार, और १० स्तनितकुमार वानमन्तर—वाणव्यन्तर-देवताओंके आठ भेद हैं—१ पिशाच, २ भूत, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ किन्नर, ६ किंपुरुष, ७ महोरग, और ८ गान्धर्व वाणव्यन्तर (वानमन्तर) के ये भी आठ भेद हैं—१ अणपन्नी, २ पणपन्नी, ३ इसीवादी, ४ भूतवादी, ५ कन्दित, ६ महाकन्दित, ७ कोहण्ड, और ८ पतङ्ग ज्योतिष्क देवताओंके पाँच भेद हैं—१ चन्द्र, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र, और ५ तारा वैमानिक देवता दो प्रकारके हैं—१ कल्पोपपन्न और २ कल्पातीत कल्प—अर्थात् आचार—

तीर्थङ्करोंके पाँच कल्याणकमें आना–जाना, उसकी रक्षा करनेवाले देवता, 'कल्पोपपन्न' कहलाते हैं उक्त आचारके पालन करनेका अधिकार जिन्हें नहीं है, वे देव, 'कल्पातीत' कहलाते हैं कल्पोपपन्न देवताओंके बारह देवलोक हैं इसलिये स्थानके भेदसे उन देवोंके भी बारह भेद समझना चाहिये बारह देव लोक ये हैं;–१ सौधर्म, २ ईशान, ३ सनत्कुमार, ४ माहेन्द्र, ५ ब्रह्म, ६ लान्तक, ७ शुक्र, ८ सहस्रार, ९ आनत, १० प्राणत, ११ आरण, और १२ अच्युत कल्पातीत देवोंके चौदह भेद हैं; नवग्रैवेयकमें रहनेवाले तथा पाँच अनुत्तरविमानमें रहनेवाले नवग्रैवेयकोंके नाम ये हैं;–१ सुदर्शन, २ सुप्रबुद्ध, ३ मनोरम, ४ सर्वतोभद्र, ५ विशाल, ६ सुमनस, ७ सौमनस, ८ प्रियङ्कर, और ९ नन्दिकर पाँच अनुत्तरविमानोंके नाम ये हैं;–१ विजय, २ वैजयन्त, ३ जयन्त, ४ अपराजित, और ५ सर्वार्थसिद्ध अब उक्त देवोंके स्थान–रहनेकी जगह–संक्षेपमें कहते हैं; मेरु पर्वतके मूलमें समभूतल पृथ्वी है, उससे नीचे रत्नप्रभा नामक प्रथम नरकका दल एक लाख अस्सी हजार योजन मोटा है, उसमें तेरह प्रतर हैं, उन प्रतरोंमें बारह आन्तर–स्थान हैं, प्रथम और अन्तिम आन्तर–स्थानोंको छोड़कर बाकीके दस आन्तर–स्थानोंमें, हर एकमें, एक एक भवनपति देवोंके निकाय रहते हैं प्रत्येक निकायमें दक्षिणकी तरफ एक, और उत्तरकी तरफ एक, ऐसे दो इन्द्र होते हैं, इस तरह दस निकायोंके बीस इन्द्र हुए

पहले कहा गया है कि रत्नप्रभाका दल एक लाख अस्सी हजार योजन मोटा है, ऊपर एक हजार और नीचे एक हजार योजन पृथ्वीको छोड़कर बाकीके एक लाख अठहत्तर हजार योजनमें पूर्वोक्त तेरह प्रतर हैं, जिनमें कि दस

प्रकारके भवनपति देव रहते हैं, ऊपरके बचे हुए एक हजार योजनमें सौ योजन ऊपर, और सौ योजन नीचे छोड़ दिये जानेपर बाकी आठसौ योजन बचे, उनमें आठ व्यन्तर निकाय हैं, प्रत्येक निकायमें, भवनपति निकायकी तरह, दक्षिणमें एक, और उत्तरमें एक, ऐसे दो इन्द्र रहते हैं, इस तरह आठ व्यन्तर निकायके सोलह इन्द्र हुए, ऊपर जो सौ योजन छोड़ दिये गये थे, उनमेंसे दस योजन ऊपर, और दस योजन नीचे छोड़ दिये जानेपर अस्सी योजन बचे, उनमें आठ प्रकारके वाणमन्तर देव रहते हैं, प्रत्येक निकायमें पहलेकी तरह एक दक्षिणमें, और एक उत्तरमें ऐसे दो इन्द्र रहते हैं, इस प्रकार आठ निकायोंके सोलह इन्द्र हुए, दोनों प्रकारके व्यन्तरोंके बत्तीस इन्द्र हुए, इनमें भवन पतिके बीस इन्द्रोंके मिलानेपर बावन इन्द्र हुए अब ज्योतिष्क देवोंकी रहनेकी जगह कहते हैं पहले ज्योतिष्क देवोंके पाँच भेद कह चुके हैं, उनके और भी दो भेद हैं, एक 'चर' और दूसरे 'स्थिर', मनुष्य-क्षेत्रमें जो ज्योतिष्क देव हैं, वे चर हैं, अर्थात् हमेशा घूमते रहते हैं और मनुष्यलोकसे बाहरके ज्योतिष्क देव, स्थिर हैं अर्थात् उनके विमान एक ही जगह रहते हैं, जहाँपर कि वे हैं चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा, इन पाँच ज्योतिष्क देवोंमें, चन्द्र और सूर्य, इन दोनोंकी इन्द्र-पदवी है अर्थात् ये दोनों, ज्योतिष्कोंमें इन्द्र कहलाते हैं, दूसरोंको इन्द्र-पदवी नहीं है मेरुके सम-भूतल-मूलसे ऊपर सात सौ नब्बे योजनकी ऊँचाईपर ताराओंके विमान हैं, वहाँसे दस योजनकी ऊँचाईपर सूर्यका विमान है, वहाँसे अस्सी योजनकी ऊँचाईपर चन्द्रका विमान है, वहाँसे चार योजनकी ऊँचाईपर नक्षत्रोंके विमान हैं, वहाँसे सोलह योजनपर दूसरे दूसरे ग्रहोंके विमान हैं, तात्पर्य यह है कि मेरुके मूलकी सपाट-भूमिसे सातसौ नब्बे

योजनके ऊपर एकसौ दस योजनोंमें ज्योतिष्क देव रहते हैं अब वैमानिक देवोंके स्थान कहते हैं।—सम्पूर्ण लोक—जिसे त्रिभुवन कहते हैं—उसका आकार पुरुषके समान है, और उसकी लम्बाई चौदह राजू है, नीचेकी सात राजुओंमें सात नरक हैं नाभिकी जगह—मध्यमें—मनुष्यलोक है मेरुकी सपाटभूमिसे सातसौ नब्बे योजनपर ज्योतिष्क देवोंके विमान हैं, वहाँसे लगभग एक राजू ऊपर, दक्षिण दिशामें सौधर्म देवलोक और उत्तर दिशामें ईशान देवलोक परस्पर जुड़े हुए हैं। वहाँसे कुछ दूर ऊपर, दक्षिणमें तृतीय देवलोक सनत्कुमार और उत्तरमें चौथा देवलोक माहेन्द्र, एक दूसरेसे लगे हुए हैं। वहाँसे ऊपर पाँचवाँ ब्रह्मलोक, छठा लान्तक, सातवाँ शुक्र, आठवाँ सहस्रार ये चार देवलोक, कुछ कुछ अन्तरपर, क्रमसे एकपर एक, ऐसी स्थितिमें हैं। वहाँसे कुछ ऊँचाईपर नववाँ आनत और दसवाँ प्राणत, दक्षिण और उत्तरमें, एक दूसरेसे लगे हुए हैं। वहाँसे कुछ ऊँचाईपर, ग्यारहवाँ आरण और बारहवाँ अच्युत, दक्षिण तथा उत्तर दिशाओंमें, एक दूसरेसे जुड़े हुए हैं प्रथमके आठ देवलोकोंके आठ इन्द्र हैं अर्थात् हर एक देवलोकका एक एक इन्द्र है। पर नववें और दसवें देवलोकका एक तथा ग्यारहवें और बारहवें देवलोकका एक, इस प्रकार अन्तिम चार देवलोकोंके दो इन्द्र हैं। प्रथमके आठ मिलानेसे कल्पोपपन्न वैमानिक देवताओंके दस इन्द्र हुए पुरुषाकार लोकके गलेके स्थानमें नवग्रैवेयक हैं, वहाँसे कुछ ऊपर पाँच अनुत्तरविमान हैं लोकरूप पुरुषके ललाटकी जगह सिद्धशिला है, जो स्फटिकके समान निर्मल अर्जुनसोनेकी है, वहाँसे एक योजनपर लोकका अन्त होता है, लोकके अन्तिमभागमें सिद्ध महाराजका निवास है अब तीन प्रकारके किल्विषिक देव तथा नव प्रकारके लोकान्तिक देवोंका निवा

सस्थान कहते हैं प्रथम प्रकारके किल्बिषिकोंकी तीन पल्योपम आयु है और वे पहले तथा दूसरे देवलोकके नीचे रहते हैं दूसरे प्रकारके किल्बिषिकोंकी आयु, तीन सागरोपमकी है और वे तीसरे तथा चौथे देवलोकके नीचे रहते हैं तीसरे प्रकारके किल्बिषिकोंकी आयु तेरह सागरोपम है और ये पाँचवें तथा छठे देवलोकके नीचे रहते हैं ये सब किल्बिषिक देव, चाण्डालके समान, देवोंमें नीच समझे जाते हैं लोकान्तिक देव, पाँचवें देवलोकके अन्तमें उत्तर-पूर्वादि कोणमें रहते हैं चौसठ इन्द्र—भवनपति देवोंके बीस, व्यन्तरोंके बत्तीस, ज्योतिषियोंके दो और वैमानिक देवोंके दस, सबकी संख्या मिलानेपर इन्द्रोंकी चौसठ संख्या होती है

शास्त्रमें देवोंके १९८ भेद कहे हैं, उनको इस तरह समझना चाहिये—भवनपतिके दस, चर ज्योतिष्कके पाँच, स्थिर ज्योतिष्कके पाँच, वैताढ्यपर रहनेवाले तिर्यक् जृम्भक देवोंके दस भेद, नरकके जीवोंको दुःख देनेवाले परमाधामीके पन्द्रह भेद, व्यन्तरके आठ भेद, वानव्यन्तरके आठ भेद, किल्बिषियोंके तीन भेद, लोकान्तिकके नव भेद, बारह देवलोकोंके बारह भेद, नव ग्रैवेयकोंके नव भेद, पाँच अनुत्तरविमानोंके पाँच भेद, सब मिलाकर ९९ भेद हुए, इनके भी पर्याप्त और अपर्याप्त रूपसे दो भेद हैं, इस प्रकार १९८ भेद देवोंके होते हैं मनुष्योंके ३०३ भेद पहले कह चुके।

अब तिर्यञ्चके ४८ भेद कहते हैं—पाँच सूक्ष्मस्थावर, पाँच बादरस्थावर, एक प्रत्येक वनस्पतिकाय और तीन विकलेन्द्रिय सब मिलाकर चौदह हुए, ये चौदह पर्याप्त और अपर्याप्त रूपसे दो प्रकारके हैं, इस तरह अट्ठाईस हुए जलचर, खेचर, तथा स्थलचरके तीन भेद—चतुष्पद, उरपरिसर्प तथा भुजपरिसर्प, ये प्रत्येक संमूर्च्छिम और गर्भज होनेसे

दस भेद हुए। ये दसों पर्याप्त और अपर्याप्त रूपसे दो प्रकारके हैं, इसलिये बीस भेद हुए, इनमें पूर्वोक्त अट्ठाइस भेदोंके मिलानेपर तिर्यञ्चोंके ४८ भेद होते हैं।

नारक जीवोंके सात भेद कह चुके हैं, ये पर्याप्त तथा अपर्याप्त रूपसे दो तरहके हैं, इस तरह नारक जीवोंके चौदह भेद होते हैं देवोंके १९८, मनुष्योंके ३०३, तिर्यञ्चोंके ४८ और नारकोंके १४ भेद, इन सबको मिलानेसे ५६३ भेद, संसारी जीवके हुए।

सिद्धा पनरसभेया, तित्थ-अतित्थाइ सिद्ध भेएणं। एए संखेवेण, जीवविगप्पा समक्खाया ॥ २५॥

(तित्थ अतित्थाइ सिद्ध भेएणं) तीर्थ-सिद्ध, अतीर्थ-सिद्ध आदि भेदोंसे, (सिद्धा) सिद्ध-जीवोंके (पनरस भेया) पन्दरह भेद हैं (संखेवेणं) संक्षेपसे, (एए) ये-पूर्वोक्त, (जीवविगप्पा) जीव-विकल्प-जीवोंके भेद, (समक्खाया) कहे गये ॥ २५ ॥

भावार्थ—तीर्थ-सिद्ध, अतीर्थ-सिद्ध आदि सिद्धोंके पन्दरह भेद "नवतत्त्व" में कहे हैं, उसे देखलेना चाहिये संक्षेपमें जीवोंके भेद इस ग्रन्थमें कहे गये हैं

एएसिं जीवाण, सरीरमाऊ-ठिई सकायम्मि। पाणा जोणिपमाणं, जेसिं ज अत्थि त भणिमो ॥२६॥

(एएसिं) इन-पूर्वोक्त (जीवाणं) जीवोंके, (सरीरं) शरीर-प्रमाण, (आऊ) आयुः-प्रमाण, (सकायंमि) स्व-

कायामें, (ठिई) स्थितिका प्रमाण अर्थात् स्वकायस्थिति-प्रमाण, (पाणा) प्राण-प्रमाण और (जोणिपमाणं) योनि-प्रमाण, (जेसिं) जिनोंके, (जं अत्थि) जितने हैं, (त) उसे, (भणिमो) कहते हैं ॥ २६ ॥

भावार्थ—पहले एकेन्द्रिय आदि जीव कहे गये हैं, उनके शरीरका प्रमाण, आयुका प्रमाण, स्वकायस्थितिका प्रमाण—एकेन्द्रियादि जीवोंका मर कर फिर उसी कायमें पैदा होना, 'स्वकायस्थिति' कहलाता है उसका प्रमाण; प्राण-प्रमाण—दस प्राणोंमेंसे अमुक जीवको कितने प्राण हैं इसकी गिनती; योनि-प्रमाण—चौरासी लाख योनियों मेंसे किन किन जीवोंकी कितनी कितनी योनियाँ हैं इस विषयकी गिनती;—ये बातें आगे कही जायँगी

अङ्गुलअसंखभागो, सरीरमेगिंदियाण सव्वेसिं । जोयणसहस्समहियं, नवरं पत्तेयरुक्खाण ॥ २७ ॥

(सव्वेसिं) सम्पूर्ण (एगिंदियाण) एकेन्द्रियोंका (सरीरं) शरीर (अंगुलअसंखभागो) उँगलीके असंख्यातवें भाग जितना है, (नवरं) इतनाविशेष है लेकिन (पत्तेयरुक्खाण) प्रत्येकवनस्पतियोंका शरीर, (जोयणसहस्समहियं) हजार योजनसे कुछ अधिक है ॥ २७ ॥

भावार्थ—सूक्ष्म तथा बादर पृथ्वीकाय आदि एकेन्द्रिय जीवोंका शरीर-प्रमाण, उँगलीके असंख्यातवें भाग जितना है, लेकिन प्रत्येक वनस्पतिकायके जीवोंका शरीरप्रमाण, हजार योजनसे कुछ अधिक है। यह प्रमाण समुद्रके पद्मनाल तथा ढाई द्वीपसे बाहरकी लताओंका है

बारस जोयण तिन्ने, व गाउआ जोयण च अणुकमसो। बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय देहमुच्चत्तं ॥ २८ ॥

(बेइंदिय) द्वीन्द्रिय, (तेइंदिय) त्रीन्द्रिय और (चउरिंदिय) चतुरिन्द्रिय जीवोंके, (देहमुच्चत्तं) शरीरका प्रमाण, (अणुकमसो) क्रमसे (बारस जोयण) बारह योजन, (तिन्नेव गाउआ) तीन गव्यूत-तीन कोस-और (जोयणं) एक योजन है ॥ २८ ॥

भावार्थ—द्वीन्द्रिय जातिके जीवोंका शरीर-प्रमाण, अधिकसे अधिक, बारह योजन हो सकता है, इससे अधिक नहीं। इसका मतलब किसी द्वीन्द्रिय जातिसे है, शंखहोता है कुल द्वीन्द्रियोंसे नहीं; ऐसा ही त्रीन्द्रिय जीवोंका शरीर-प्रमाण कानखजुरा तीन कोस और चतुरिन्द्रिय जीवोंका शरीर-प्रमाण भमरोंका एक योजन है

प्र०—योजन किसे कहते हैं? उ०—चार कोसका एक योजन होता है

प्र०—गव्यूत किसे कहते हैं? उ०—एक कोसको

धणुसयपचपमाणा, नेरइया सत्तमाइपुढवीए। तत्तो अद्धद्धूणा, नेया रयणप्पहा जाव ॥ २९ ॥

(सत्तमाइ) सातवीं (पुढवीए) पृथ्वीके (नेरइया) नारक-जीव, (धणुसयपंचपमाणा) पाँचसौ धनुष प्रमाणके हैं, (रयणप्पहा जाव) रत्नप्रभा नामक प्रथम पृथ्वीतक, (तत्तो) उससे (अद्धद्धूणा) आधा २ कम प्रमाण (नेया) जानना ॥ २९ ॥

भावार्थ—सातवें नरकके जीवोंका शरीर-प्रमाण पाँचसौ धनुष, छठे नरकके जीवोंका शरीर-प्रमाण ढाइसौ
ष, पाँचवें नरकके जीवोंका एकसौ पचीस धनुष, चौथे नरकके जीवोंका साढे बासठ धनुष, तीसरे नरकके जीवोंका
इकतीस धनुष, दूसरे नरकके जीवोंका साढे पन्दरह धनुष और बारह अङ्गुल, तथा प्रथम नरकके जीवोंका शरीर
ाण पाने आठ धनुष और छह अङ्गुल है नारकोंके उत्तरवैक्रिय शरीरका प्रमाण, उक्त प्रमाणसे दुगुना समझना चाहिये
प्र०—धनुषका प्रमाण क्या है? उ०—चार हाथका एक धनुष समझना चाहिये

णसहस्समाणा, मच्छा उरगा य गब्भया हुंति। धणुअपुहुत्त पक्खिसु, भुयचारी गाउअपुहुत्त ॥३०॥
रा धणुअपुहुत्त, भुयगा उरगा य जोयणपुहुत्त। गाउअपुहुत्तमित्ता, समुच्छिमा चउप्पया भणिया ३१

—पया) सम्मूर्च्छिम या गर्भज (मच्छा) मत्स्य-मछलियाँ, (य) और गर्भज (उरगा) साँप यह अधिकसे
(जोयणसहस्समाणा) हजारयोजन प्रमाणवाले (हुंति) होते हैं (पक्खिसु) पक्षियोंमें शरीर प्रमाण (धणुअ
नुष-पृथक्त्व है तथा (भुयचारी) भुजचारी-भुजाओंसे चलनेवाले (गाउअपुहुत्त) गव्यूत-पृथक्त्व-प्रमाण
ते हैं ॥ ३० ॥

छिमा) सम्मूर्च्छिम (खयरा) खेचर जीव (भुयगा) और भुजाओंसे चलनेवाले जीव (धणुअपुहुत्तं) धनुष
-प्रमाणवाले होते हैं (य) और (उरगा) साँप आदि (जोयण पुहुत्तं) योजन-पृथक्त्व शरीर-प्रमाणके
(चउप्पया) चतुष्पद जीव (गाउअपुहुत्तमित्ता) गव्यूत-पृथक्त्वमात्र (भणिया) कहे गये हैं ॥ ३१ ॥

भावार्थ—सम्मूर्च्छिमओर गर्भज मत्स्य और गर्भज सर्पका शरीर-मान एक हजार योजनका है, इस प्रकारके मत्स्य स्वयम्भूरमण समुद्रमें होते हैं तथा सर्प मनुष्य-क्षेत्रसे बाहर होते हैं गर्भज पक्षिओंका शरीर-मान धनुष-पृथक्त्व है अर्थात् दो धनुषसे लेकर नव धनुष तक है गर्भज न्योला, गोह आदि भुजपरिसर्प जीवोंका शरीर-मान, गव्यूत-पृथक्त्व है अर्थात् दो कोससे लेकर नव कोस तक है

सम्मूर्च्छिम खेचर तथा भुजपरिसर्प जीवोंका शरीरमान, धनुष-पृथक्त्व है सम्मूर्च्छिम उरःपरिसर्प जीवोंका शरीर-मान, योजन-पृथक्त्व है सम्मूर्च्छिम चतुष्पद-चार पैरवाले-जीवोंका शरीर-मान गव्यूत-पृथक्त्व है

प्र०—पृथक्त्व किसको कहते हैं? उ०—दोसे लेकर नव तककी संख्याको पृथक्त्व कहते हैं

छच्चेव गाउआइ, चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा। कोसतिग च मणुस्सा, उक्कोससरीरमाणेण ॥ ३२ ॥

(चउप्पया गब्भया) चतुष्पद गर्भजोंका शरीर-मान (छच्चेव गाउआई) छह कोसका (मुणेयव्वा) जानना (च) और (मणुस्सा) मनुष्य (उक्कोससरीरमाणेणं) उत्कृष्ट शरीरमानसे (कोसतिगं) तीन कोसके होते हैं ॥ ३२ ॥

भावार्थ—देवकुरु आदि क्षेत्रोंमें चतुष्पद गर्भज हाथीका शरीर-मान छह कोसका है तथा देवकुरु आदिके युगलीया मनुष्योंके शरीरकी ऊँचाई, अधिकसे अधिक तीन कोसकी होती है

ईसाणत सुराण, रयणीओ सत्त हुति उच्चत्त। दुग-दुग-दुग-चउ-गेवि, ज्जणुत्तरे इक्किक्क परिहाणी ॥ ३३ ॥

(ईसाणंत) ईशानान्त—ईशान देवलोक-तकके (सुराणं) देवताओंकी (उच्चत्तं) ऊँचाई (सत्त) सात (रयणीओ) रत्नि-हाथ (हुंति) होती है। (दुग-दुग-दुग-चउ गेविज्जणुत्तरे) दो, दो, दो, चार, नवग्रैवेयक और पाँच अनुत्तरवि मानोंके देवोंका शरीर-मान (इक्किक परिहाणी) एक एक हाथ कम है ॥ ३३ ॥

भावार्थ—दूसरा देवलोक, ईशान है, वहाँके देवोंका तथा भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषी और सौधर्म देवोंका शरीर सात हाथ ऊँचा है। सनत्कुमार और माहेन्द्रके देवोंका शरीर छह हाथ ऊँचा है। ब्रह्म और लान्तकके देवोंका पाँच हाथ। शुक्र और सहस्रारके देवोंका चार हाथ। आनत, प्राणत, आरण और अच्युत इन चार देवलोकोंके देवोंका तीन हाथ। नवग्रैवेयकके देवोंका दो हाथ और पाँच अनुत्तर विमानवासी देवोंका एक हाथ ऊँचा है

यहाँ जीवोंका शरीर-मान उत्सेधाङ्गुलसे समझना चाहिये

प्र०—उत्सेधाङ्गुल किसको कहते हैं? उ०—आठ यवोंका एक उत्सेधाङ्गुल होता है

बावीसा पुढवीए, सत्तय आउस्स तिन्नि वाउस्स। वास सहस्सा दस तरु, गणाण तेऊ तिरत्ताऊ ॥ ३४ ॥

(पुढवीए) पृथ्वीकाय जीवोंका आयु (बावीसा) बाईस हजार वर्षका है (आउस्स) अप्काय जीवोंका आयु (सत्तय) सात हजार वर्षका (वाउस्स) वायुकाय जीवोंका आयु (तिन्नि) तीन हजार वर्षका (तरुगणाण) प्रत्येक वनस्पतिकायके जीव-समुदायकी आयु (वास सहस्सा दस) वर्षसहस्र-दश अर्थात् दस हजार वर्षका (तेऊ) तेजः-काय जीवोंका (तिरत्ताऊ) तीन अहोरात्रका आयु है ॥ ३४ ॥

भावार्थ—पृथ्वीकाय जीवोंका अधिकसे अधिक आयु—उत्कृष्ट आयु—बाईस हजार वर्ष, अप्काय जीवोंका आयु सात हजार वर्ष, वायुकाय जीवोंका तीन हजार वर्ष, प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवोंका दस हजार वर्ष और तेजःकाय जीवोंका तीन अहोरात्र आयु है यह तो हुई उत्कृष्ट आयु, लेकिन जघन्य आयु सबका अन्तर्मुहूर्तका है

वासाणि बारसाऊ, बिइंदियाण तिइंदियाण तु । अउणापन्न दिणाइं, चउरिंदीण तु छम्मासा ॥ ३५ ॥

(बिइंदियाणं) द्वीन्द्रिय जीवोंका (आउ) आयु (बारस) बारह (वासाणि) वर्षका है, (तिइंदियाणं तु) त्रीन्द्रिय जीवोंका तो (अउणा पन्न दिणाइं) उनचास दिनका आयु होता है (चउरिंदीणं तु) और चतुरिन्द्रिय जीवोंका आयु (छम्मासा) छह महीनेका है ॥ ३५ ॥

भावार्थ—द्वीन्द्रिय जीवोंका उत्कृष्ट आयु बारह वर्षका, त्रीन्द्रियोंका उनचास दिनका और चतुरिन्द्रियका छह महीनेका है यह सबका उत्कृष्ट आयु है, जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्तका समझना चाहिये

सुर-नेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि तित्तीसं । चउपय तिरिय-मणुस्सा, तिन्निय पलिओवमा हुंति ॥

(सुर—नेरइयाण) देव और नारक जीवोंका (उक्कोसा) उत्कृष्ट—अधिकसे अधिक (ठिई) स्थिति—आयु (सागराणि तित्तीसं) तेतीस सागरोपम है, (चउपय—तिरिय) चार पैरवाले तिर्यञ्च और (मणुस्सा) मनुष्योंका आयु (तिन्निय) तीन (पलिओवमा) पल्योपम (हुंति) है ॥ ३६ ॥

(ईसाणंत) ईशानान्त—ईशान देवलोक-तकके (सुराणं) देवताओंकी (उच्चत्तं) ऊँचाई (सत्त) सात (रयणीओ) रत्नि-हाथ (हुंति) होती है। (दुग-दुग-दुग-चउ गेविज्जणुत्तरे) दो, दो, दो, चार, नवग्रैवेयक और पाँच अनुत्तरविमानोंके देवोंका शरीर-मान (इक्किक परिहाणी) एक एक हाथ कम है ॥ २३ ॥

भावार्थ—दूसरा देवलोक, ईशान है, वहाँके देवोंका तथा भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषी और सौधर्म देवोंका शरीर सात हाथ ऊँचा है; सनत्कुमार और माहेन्द्रके देवोंका शरीर छह हाथ ऊँचा है; ब्रह्म और लान्तकके देवोंका पाँच हाथ; शुक्र और सहस्रारके देवोंका चार हाथ; आनत, प्राणत, आरण और अच्युत इन चार देवलोकोंके देवोंका तीन हाथ; नवग्रैवेयकके देवोंका दो हाथ और पाँच अनुत्तर विमानवासी देवोंका एक हाथ ऊँचा है

यहाँ जीवोंका शरीर-मान उत्सेधाङ्गुलसे समझना चाहिये

प्र०—उत्सेधाङ्गुल किसको कहते हैं? उ०—आठ यवोंका एक उत्सेधाङ्गुल होता है

बावीसा पुढवीए, सत्तय आउस्स तिन्नि वाउस्स। वास सहस्सा दस तरु, गणाण तेऊ तिरत्ताऊ ॥ २४ ॥

(पुढवीए) पृथ्वीकाय जीवोंका आयु (बावीसा) बाईस हजार वर्षका है (आउस्स) अप्काय जीवोंका आयु (सत्तय) सात हजार वर्षका (वाउस्स) वायुकाय जीवोंका आयु (तिन्नि) तीन हजार वर्षका (तरुगणाण) प्रत्येक वनस्पतिकायके जीव-समुदायकी आयु (वास सहस्सा दस) वर्षसहस्र-दश अर्थात् दस हजार वर्षका (तेऊ) तेजःकाय जीवोंका (तिरत्ताऊ) तीन अहोरात्रका आयु है ॥ २४ ॥

भावार्थ—पृथ्वीकाय जीवोंका अधिकसे अधिक आयु–उत्कृष्ट आयु–बाइस हजार वर्ष, अप्काय जीवोंका आयु सात हजार वर्ष, वायुकाय जीवोंका तीन हजार वर्ष, प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवोंका दस हजार वर्ष और तेजस्काय जीवोंका तीन अहोरात्र आयु है यह तो हुई उत्कृष्ट आयु, लेकिन जघन्य आयु सबका अन्तर्मुहूर्तका है

वासाणि बारसाऊ, बिइंदियाण तिइंदियाण तु । अउणापन्न दिणाइं, चउरिंदीण तु छम्मासा ॥ ३५ ॥

(बिइंदियाणं) द्वीन्द्रिय जीवोंका (आउ) आयु (बारस) बारह (वासाणि) वर्षका है, (तिइंदियाणं तु) त्रीन्द्रिय जीवोंका तो (अउणा पन्न दिणाइं) उनचास दिनका आयु होता है (चउरिंदीणं तु) और चतुरिन्द्रिय जीवोंका आयु (छम्मासा) छह महीनेका है ॥ ३५ ॥

भावार्थ—द्वीन्द्रिय जीवोंका उत्कृष्ट आयु बारह वर्षका, त्रीन्द्रियोंका उनचास दिनका और चतुरिन्द्रियका छह महीनेका है यह सबका उत्कृष्ट आयु है, जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्तका समझना चाहिये

सुर-नेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि तित्तीसं । चउपय तिरिय-मणुस्सा, तिन्नि य पलिओवमा हुंति ॥

(सुर-नेरइयाण) देव और नारक जीवोंका (उक्कोसा) उत्कृष्ट–अधिकसे अधिक (ठिई) स्थिति–आयु (सागराणि तित्तीसं) तेतीस सागरोपम है, (चउपय-तिरिय) चार पैरवाले तिर्यञ्च और (मणुस्सा) मनुष्योंका आयु (तिन्नि य) तीन (पलिओवमा) पल्योपम (हुंति) है ॥ ३६ ॥

भावार्थ—देव और नरकवासी जीव, अधिकसे अधिक, तेतीस सागरोपम तक जीते हैं और चतुष्पद तिर्यञ्च तथा मनुष्य तीन पल्योपम तक; ये तिर्यञ्च तथा मनुष्य देवकुरु आदि क्षेत्रोंके समझना चाहिये देव तथा नारक जीवोंका जघन्य आयु–कमसे कम आयु–दस हजार वर्षका है; मनुष्य तथा तिर्यञ्च जीवोंका जघन्य आयु, अन्तर्मुहूर्तका है

जलयर-उरभुयगाण, परमाऊ होइ पुव्वकोडीऊ। पक्खीण पुण भणिओ, असंखभागो अ पलियस्स ३७

(जलयर–उरभुयगाणं) जलचर, उरःपरिसर्प और भुजपरिसर्प जीवोंकी (परमाऊ) उत्कृष्ट आयु (पुव्वकोडीऊ) एक करोड़ पूर्व है, (पक्खीण पुण) पक्षियोंकी आयु तो (पलियस्स) पल्योपमका (असंखभागो) असंख्यातवाँ भाग जितनी (भणिओ) कहा है ॥ ३७ ॥

भावार्थ—गर्भज और सम्मूर्च्छिम ऐसे दो प्रकारके जलचर जीवोंका तथा गर्भज, उरःपरिसर्प और भुजपरिसर्प जीवोंकी उत्कृष्ट आयु एक करोड़ पूर्व है; गर्भज पक्षियोंका आयु पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग जितना है

सव्वे सुहुमा साहा-रणा य, संमुच्छिमा मणुस्सा य। उक्कोस जहन्नेणं, अंतमुहुत्तं च्चिय जियंति ॥ ३८ ॥

(सव्वे) सम्पूर्ण (सुहुमा) पृथ्वीकाय आदि सूक्ष्म (य) और (साहारणा) साधारण वनस्पतिकाय (य) और (संमुच्छिमा मणुस्सा) सम्मूर्च्छिम मनुष्य (उक्कोस जहन्नेणं) उत्कृष्ट और जघन्यसे (अंतमुहुत्तं च्चिय) अन्तर्मुहूर्त ही (जियंति) जीते हैं ॥ ३८ ॥

भावार्थ—सूक्ष्म पृथ्वीकाय आदि जीव, सूक्ष्म और बादर साधारण वनस्पतिकायके जीव और सम्मूर्छिम मनुष्य, उत्कर्षसे और जघन्यसे सिर्फ अन्तर्मुहूर्त तक जीते हैं

प्रश्न—पल्योपम किसको कहते हैं ? उ०—असंख्य वर्षोंका एक पल्योपम होता है

प्र०—सागरोपम किसे कहते हैं ? उ०—दस कोड़ा कोड़ी पल्योपमका एक सागरोपम होता है

प्र०—पूर्व किसको कहते हैं ? उ०—सत्तर लाखकोड़, छप्पन हजार करोड़ वर्षोंका एक पूर्व होता है

ओगाहणाउमाणं, एव संखेवओ समक्खायं। जे पुण इत्थ विसेसा, विसेस सुत्ताउ ते नेया ॥ ३९ ॥

(एवं) इस प्रकार (ओगाहणाउमाण) अवगाहना-शरीर और आयुका मान (संखेवओ) संक्षेपसे (समक्खायं) कहा गया (जे पुण इत्थ) यहाँ जो बातें (विसेसा) विशेष हैं, (विसेस सुत्ताउ) विशेष सूत्रोंसे (ते) उनको (नेया) जानना ॥ ३९ ॥

भावार्थ—देह-मान तथा आयु-मानके विषयमें विशेष बातें जानना हों, तो "संग्रहणी," "प्रज्ञापना" आदि सूत्रोंसे जानना चाहिये

एगिंदिया य सव्वे, असंख उस्सप्पिणी सकायमि। उववजंति चयंतिअ, अणंतकाया अणंताओ ॥४०॥

(सव्वे) सब (एगिंदिया) एकेन्द्रिय जीव (असंख उस्सप्पिणी) असंख्य उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी तक (सका

यंमि) अपनी कायामें (उववज्जंति) उत्पन्न होते हैं (अ) और (चयंति) मरते हैं; (अणंतकाया) अनन्तकाय जीव (अणंताओ) अनन्त उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी तक ॥ ४० ॥

भावार्थ—पृथ्वी, अप्, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पतिकायके जीव, उसी पृथ्वी आदिकी अपनी कायामें, असंख्य उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी तक पैदा होते तथा मरते हैं; अनन्तकायके जीव तो उसी अपनी कायामें अनन्त उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी तक पैदा होते तथा मरते हैं

प्र०—उत्सर्पिणी किसको कहते हैं ? उ०—दस कोड़ा कोड़ी सागरोपमकी एक उत्सर्पिणी तथा उतनेकी ही एक अवसर्पिणी होती है

संखिज्जसमा विगला, सत्तट्ठ भवा पणिंदि तिरि-मणुया। उववज्जंति सकाए, नारय देवा अ नो चेव ॥४१॥

(विगला) विकलेन्द्रिय जीव (संखिज्जसमा) संख्यात हजार वर्षों तक (सकाए) अपनी कायामें (उववज्जंति) पैदा होते हैं, (पणिंदि–तिरि–मणुया) पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्य (सत्तट्ठ भवा) सात–आठ भव तक, लेकिन (नारय देवा) नारक और देव (नो चेव) नहीं ॥ ४१ ॥

भावार्थ—द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव, स्वकायामें संख्यात हजार वर्षोंतक पैदा होते तथा मरते हैं; पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च तथा मनुष्य लगातार सात तथा आठ भव करते हैं अर्थात् मनुष्य, लगातार सात–आठ बार, मनुष्य–शरीर धारण कर सकता है, इस प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च भी लेकिन देवता तथा नारक जीव मरकर फिर तुरन्त

अपनी योनिमें नहीं पैदा होते अर्थात् देव मरकर फिर तुरन्त देवयोनिमें नहीं पैदा हो सकता। इस प्रकार नारक जीव मरकर तुरन्त नरकमें नहीं पैदा होता। हाँ एक दो जन्म दूसरी गतियोंमें बिताकर फिर देव या नरक-योनिमें पैदा हो सकते हैं इसी तरह देव मरकर तुरन्त नरकयोनिमें नहीं जाता और नारक जीव मरकर तुरन्त देव-योनिमें नहीं पैदा हो सकता

दसहा जियाण पाणा, इंदि-उससाउ-जोगबलरूवा। एगिंदियसु चउरो, विगलेसु छ सत्त अट्ठेव ॥ ४२॥

(जियाण) जीवोंको (दसहा) दस प्रकारके (पाणा) प्राण होते हैं।—(इंदि-उससाउ-जोगबलरूवा) (५) इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयु और योगबलरूप, तीनबल (एगिंदियसु) एकेन्द्रियोंको (चउरो) चार प्राण हैं, (विगलेसु) विकलेन्द्रियोंको (छ सत्त अट्ठेव) छह, सात और आठ ॥ ४२ ॥

भावार्थ—प्राणोंकी संख्या दस है।—पाँच इन्द्रियाँ, श्वासोच्छ्वास, आयु, मनोबल वचनबल और कायबल इन दस प्राणोंमेंसे चार-त्वचा, श्वासोच्छ्वास, आयु और कायबल एकेन्द्रिय जीवोंको होते हैं। द्वीन्द्रिय जीवोंको छह प्राण-त्वचा, रसना (जीभ), श्वासोच्छ्वास, आयु, कायबल और वचनबल; त्रीन्द्रिय जीवोंको सात प्राण-त्वचा, जीभ, नाक, श्वासोच्छ्वास, आयु, कायबल और वचनबल; चतुरिन्द्रिय जीवोंको आठ प्राण-पूर्वोक्त सात, और आँख

असन्नि-सन्नि-पंचिं, दिएसु नव दस कमेण बोधव्वा। तेहिं सह विप्पओगो, जीवाणं भण्णए मरणं ॥ ४३॥

(असन्नि–सन्नि–पंचिंदिएसु) असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तथा संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवोंको (कमेण) क्रमसे (नव दस) नव र दस प्राण (बोधवा) जानना (तेहिं सह) उनके साथ (विप्पओगो) विप्रयोग–वियोग, (जीवाणं) जीवोंका रणं) मरण (भण्णए) कहलाता है ॥ ४३ ॥

भावार्थ—असंज्ञी पञ्चेन्द्रियोंको त्वचा, जीभ, नाक, आँख, कान, श्वासोच्छ्वास, आयु, कायबल और वचनबल ये प्राण होते हैं और संज्ञी पञ्चेन्द्रियोंको पूर्वोक्त नव और मनोबल, ये दस प्राण होते हैं जिनको जितने प्राण कहे उन प्राणोंके साथ वियोग होना ही उन जीवोंका मरण कहलाता है देव, नारक, गर्भज तिर्यञ्च तथा गर्भज ये संज्ञी पञ्चेन्द्रिय कहलाते हैं सम्मूर्छिम तिर्यञ्च और सम्मूर्छिम मनुष्य, असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय कहलाते हैं र मनुष्योंको मनोबल और वाकबल नहीं है, इसलिये उनके आठ प्राण, और, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूर्ण न कारण साढा सात प्राण होते हैं

अणोरपारे, ससारे सायरमि भीममि । पत्तो अणतखुत्तो, जीवेहिं अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥

अपत्तधम्मेहिं) नहीं पाया है धर्म जिन्होंने ऐसे (जीवेहिं) जीवोंने (अणोरपारे) आर–पार–रहित–आदि–त–रहित (भीमंमि) भयङ्कर (संसारे सायरमि) संसाररूप समुद्रमें (एवं) इस प्रकार–प्राण–वियोग–रूप मरण णंतखुत्तो) अनन्त बार (पत्तो) प्राप्त किया ॥ ४४ ॥

भावार्थ—संसारका आदि नहीं है, न अन्त है। अनन्तवार जीव मर चुके हैं और आगे मरेंगे सुदैवसे यदि उन्हें धर्मकी प्राप्ति हुई तो जन्म-मरणसे छुटकारा होगा

तह चउरासी लक्खा, संखा जोणीण होइ जीवाण । पुढवाईण चउण्ह, पत्तेय सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥

(जीवाणं) जीवोंकी (जोणीण) योनियोंकी (संखा) संख्या (चउरासी लक्खा) चौरासी लाख (होइ) है (पुढवाइण चउण्ह) पृथ्वीकाय आदि चारकी प्रत्येककी योनि-संख्या (सत्त सत्तेव) सात सात लाख है ॥ ४५ ॥

भावार्थ—जीवोंकी चौरासी लाख योनियाँ हैं, यह बात प्रसिद्ध है। उसको इस प्रकार समझना चाहिये—पृथ्वीकायकी सात लाख, अप्कायकी सात लाख, तेजःकायकी सात लाख और वायुकायकी सात लाख योनियाँ हैं, सबको मिला कर अट्ठाईस लाख हुईं

प्र०—योनि किसको कहते हैं ? उ०—पैदा होनेवाले जीवोंके जिस उत्पत्ति-स्थानमें वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श, ये चारों समान हों, उस उत्पत्ति-स्थानको उन सब जीवोंकी एक योनि कहते हैं

दस पत्तेयतरूण, चउदस लक्खा हवंति इयरेसु। विगलिंदियेसु दो दो, चउरो पंचिंदितिरियाण ॥४६॥

(पत्तेयतरूणं) प्रत्येक वनस्पतिकायकी (दस) दस लाख योनियाँ हैं, (इयरेसु) प्रत्येक वनस्पतिकायसे इतर-साधारण वनस्पतिकायकी (चउदस लक्खा) चौदह लाख (हवंति) हैं, (विगलिंदिएसु) विकलेन्द्रियोंकी (दो दो) दो दो लाख हैं, (पंचिंदितिरियाणं) पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंकी (चउरो) चार लाख हैं ॥ ४६ ॥

भावार्थ—प्रत्येक वनस्पतिकायकी दस लाख; साधारण वनस्पतिकायकी चौदह लाख; द्वीन्द्रियकी दो लाख; त्रीन्द्रियकी दो लाख; चतुरिन्द्रियकी दो लाख और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंकी चार लाख योनियाँ हैं

चउरो चउरो नारय,-सुरेसु मणुआण चउदस हवंति। संपिंडिया य सव्वे, चुलसी लक्खाउ जोणीणं॥४७॥

(नारय सुरेसु) नारक और देवोंकी (चउरो चउरो) चार चार लाख योनियाँ हैं; (मणुआण) मनुष्योंकी (चउदस) चौदह लाख (हवंति) हैं; (सव्वे) सब (संपिंडिया) इकट्ठी की जायँ—मिलाई जायँ तो (जोणीणं) योनियोंकी संख्या (चुलसी लक्खाउ) चौरासी लाख होती है ॥ ४७ ॥

भावार्थ—नारक जीवोंकी चार लाख, देवोंकी चार लाख और मनुष्योंकी चौदह लाख योनियाँ हैं योनियोंकी सब संख्या मिलानेपर चौरासी लाख होती है

सिद्धाण नत्थि देहो,न आउ कम्मं न पाण जोणीओ।साइ-अणंता तेसिं,ठिई जिणिंदागमे भणिया॥४८॥

(सिद्धाण) सिद्ध जीवोंको (देहो) शरीर (नत्थि) नहीं है, (न आउ कम्मं) आयु और कर्म नहीं है, (न पाण जोणीओ) प्राण और योनि नहीं है, (तेसिं) उनकी (ठिई) स्थिति (साइ अणंता) सादि और अनन्त है; यह बात (जिणिंदागमे) जैन सिद्धान्तमें (भणिया) कही गई है ॥ ४८ ॥

भावार्थ—सिद्ध जीवोंको शरीर नहीं है इसलिये आयु और कर्म भी नहीं है, आयुके न होनेसे प्राण और योनि

भी नहीं है, प्राणके न होनेसे मृत्यु भी नहीं है। उनकी स्थिति सादि-अनन्त है अर्थात् जब वे लोकके अग्रभागपर अपने स्वरूपमें स्थित हुए, यह समय उनकी स्वरूप-स्थितिका आदि है तथा फिर वहाँसे च्युत होना नहीं है इसलिये स्वरूप-स्थिति अनन्त है। यह बात जैन सिद्धान्तमें कही गई है ॥ ४८ ॥

काले अणाइनिहणे, जोणीगहणम्मि भीसणे इत्थ। भमिया भमिहिंति चिरं,जीवा जिणवयणमलहंता ४९

(अणाइ निहणे) आदि और अन्त-रहित अर्थात् अनादि-अनन्त (काले) कालमें (जिणवयणं) जिनेन्द्र भगवान्के उपदेशरूप वचनको (अलहंता) न पाये हुए (जीवा) जीव, (जोणी गहणंमि) योनियोंसे क्लेशरूप (भीसणे) भयङ्कर (इत्थ) इस संसारमें (चिरं) बहुत काल तक (भमिया) भ्रमण कर चुके और (भमिहिंति) भ्रमण करेंगे

भावार्थ—चौरासी लाख योनियोंके कारण दुःखदायक तथा भयङ्कर इस संसारमें, जिनेन्द्र भगवान्के बतलाये हुए मार्गको न पाये हुए जीव, अनादि कालसे जन्ममरणके चक्करमें फँसे हुए हैं तथा अनन्त कालतक फँसे रहेंगे

ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुलहे वि सम्मत्ते । सिरिसंतिसूरिसिट्ठे, करेह भो उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥

(ता) इसलिये (संपइ) इस समय (दुलहे) दुर्लभ (मणुअत्ते) मनुजत्व-मनुष्यजन्म और (सम्मत्ते) सम्यक्त्व (संपत्ते) प्राप्त हुआ है सो (सिट्ठे) शिष्ट-सज्जन पुरुषोंसे सेवित ऐसे (धम्मे) धर्ममें (भो) अहोभव्यप्राणियो ! (उज्जमं) उद्यम-पुरुषार्थ (करेह) करो, ऐसा (सिरिसंतिसूरि) श्रीशान्तिसूरि उपदेश देते हैं ॥ ५० ॥

भावार्थ—जब कि संसार भयङ्कर है और चौरासीलाख योनियोंके कारण उससे पार पाना मुश्किल है और

उचित सामग्री—मनुष्य—जन्म और सम्यक्त्व—सच्ची श्रद्धाभी प्राप्त हुई है इसलिये हे भव्य जीवो! प्रमाद न करके, महापुरुषोंने जिस धर्मका सेवन किया है उसका तुम भी सेवन करो; क्योंकि विना धर्मकी सेवा किये तुम जन्म—मरण—के जञ्जालसे नहीं छूट सकोगे

एसो जीववियारो, सखेवरुईण जाणणाहेउ। संखित्तो उद्धरिओ, रुद्दाओ सुयसमुद्दाओ ॥ ५१ ॥

(संखेवरुईण) सङ्क्षेपरुचियोंके—अल्पमतियोंके (जाणणा हेउं) जाननेकेलिये (रुद्दाओ) रुद्र—अतिविस्तृत (सुयसमुद्दाओ) श्रुतसमुद्रसे (एसो) यह (जीववियारो) जीवविचार (संखित्तो) सङ्क्षेपसे (उद्धरिओ) निकाला गया ॥५१॥

भावार्थ—सिद्धान्तोंमें जीवोंके भेदआदि विस्तारसे कहे गये हैं इसलिये अल्प बुद्धिवाले लाभ नहीं उठा सकते; उनके जाननेकेलिये सङ्क्षेपमें यह "जीवविचार" सिद्धान्तके अनुसार बनाया गया है, इसके बनानेमें अपनी कल्पनाको स्थान नहीं दिया गया

जीवविचारसार्थ समाप्तः ।

॥ अथ नवतत्त्वप्रकरणप्रारंभः ॥

ध्यात्वा नवपदीं भक्त्या, नवतत्त्वानां विवरण, बालानां सुखबोधाय, क्रियते लोकभाषया ॥ १ ॥

जीवाऽजीवापुण्ण पावाऽसवसंवरोय निज्जरणा । बंधोमुक्खोय तहा नवतत्ता हुंति नायव्वा ॥ १ ॥

(जीवा) जीवतत्त्व १ द्रव्य और भावप्राणको धारण करनेवाला (अजीवा) ज्ञान-चेतनासें रहित सो अजीव तत्त्व २ (पुण्णं) शुभ फलका जो भोगना यह पुण्य तत्त्व ३ (पावा) अशुभ फलको जो भोगना यह पापतत्त्व ४ (आसव) जो शुभाशुभ कर्मका आना यह आस्रवतत्त्व ५ कहलाता है (संवरो) जो शुभाशुभ कर्मको रोकना यह संवरतत्त्व ६ कहलाता है। (य) और (निज्जरणा) जो आत्मध्यानसें शुभाशुभ दोनुं कर्मको बालके भस्मीभूत करके सर्वथा नही लेकीन देससें हटादेना यह निर्जरातत्त्व ७ (बंधो) जो शुभाशुभ कर्मका खीरनीरकी तरह आत्मप्रदेशकी साथ बंधहोना यह बंधतत्त्व ८ (मुक्खो) सर्वथा कर्मोसें जो मुक्तहोना सो मोक्षतत्त्व ९ (य) फिर (तहा) तेसे (नव) नव (तत्ता) तत्त्व याने रहस्य (हुंति) है (नायव्वा) जानना ॥ १ ॥

चउदसचउदसबायालीसा बासीयहुतिबायाला । सत्तावन्नबारस चउनवभेयाकमेणेसिं ॥ २ ॥

(चउदस) जीवतत्त्व १ का चौदह भेद (चउदस) अजीवतत्त्व २ का भी चौदह भेद (बायालीसा) पुण्यतत्त्व ३

के बयालीस मेद (पाईाय) पापतत्त्व ४ के व्यासी भेद (हुति) है (बाबाला) आश्रवतत्त्व ५ के बयालीस भेद है (सत्तावन) संवरतत्त्व ६ के सत्तावन भेद (बारस) निर्जरातत्त्व ७ के बारह भेद (चउ) बंधतत्त्व ८ के चार भेद (नव) और मोक्षतत्त्व ९ का नव (भेया) भेद है (कमेणेसिं) अनुक्रमसें नवे तत्त्वका सब मिलकर २७६ भेद है ॥२॥

एगविहदुविहतिविहा, चउव्विहापंचछव्विहाजीवा । चेयणतसइयरेहिं, वेयगई करणकाएहिं ॥ ३ ॥

(एगविह) चेतना लक्षणसें सब जीवो एक प्रकारे है (दुविह) त्रस और स्थावरपणेसे जीवोंके दो भेद है (तिविहा) स्त्रीवेद पुरुषवेद और नपुंसकवेदसें जीवोंके तिन भेद है (चउविहा) देव मनुष्य तिर्यंच और नारक इसप्रकारसें जीव चार तरहका (पंच) एकेन्द्रि आदिसें जीव पाँच तरहका (छव्विहा) पृथ्वी आदि लेकर छे तरहका (जीवा) जीव है (चेयण) ज्ञानादि चेतना सहित (तस) त्रस हलते चलते सो (इयरेहिं) इतर स्थिर रहे सो स्थावर (वेय) तीन वेद (गई) चार गति (करण) इंद्री पाँच (काएहिं) काया छ ॥ ३ ॥

एगिंदियसुहुमियरा सन्नियरपणिंदियायसबितिचउ । अपजत्तापज्जत्ता कमेणचउदसजियठाणा ॥ ४ ॥

(एगिंदिय) एकेन्द्रि जीवोंके दो भेद है (सुहुमियरा) एक सूक्ष्म और दुसरा बादर (सन्नि) मन सहित (इयर) दुसरा असन्नि मन रहित ऐसे (पणिंदियाय) पंचेन्द्रिके दो भेद है (स) सह पूर्वका चारकी साथ (बि) बेइंद्रीका एक भेद (ति) तेइंद्रीका एक भेद (चउ) चौरिंद्रीका एक भेद यह तीन मिलानेसें सात हुवा (अपजत्तापज्जत्ता) यह

सात अपर्याप्ता और दुसरा सात पर्याप्ता (कमेणचउदस) अनुक्रमसें ऐसे सब मिलकर चौदह (जिय) जीवोंका (ठाणा) स्थान याने भेद है ॥ ४ ॥

नाणचदसणचेव चरित्तचतवोतहा । वीरियउवओगोय एयंजीवस्सलक्खण ॥ ५ ॥

(नाण) ज्ञान आठ प्रकारे पाँच ज्ञान सम्यक्त्व आसरे और तीन अज्ञान मिथ्यात्व आसरे (च) और (दसणं) दर्शनका चार भेद (चेव) निश्चे (चरित्त) चारीत्रका सात भेद सामायक आदि निश्चय व्यवहार (च) फिर (तवो) तपके बारह भेद (तहा) तेसेही (वीरियं) वीर्य दो प्रकारके (उवओगो) उपयोगके बारह भेद (य) और (एयं) ये (जीयस्स) जीवका (लक्खणं) लक्षण है ॥ ५ ॥

आहारसरीरइंदिय पज्जत्तीआणपाणभासमणे । चउपचपचछप्पिय इगविगलासन्निसन्नीण ॥ ६ ॥

(आहार) आहारपर्याप्ति १ (सरीर) शरीरपर्याप्ति २ (इंदिय) इंद्रियपर्याप्ति ३ (पज्जत्ती) ऐसे तीन पर्याप्ति (आणपाण) स्वासोस्वास ४ (भास) भाषा ५ (मणे) मनपर्याप्ति ६ (चउ) आहारादि चार (पच) मन छोडकर पाँच (छप्पिय) मन सहित संपूर्ण छे पर्याप्ति (एग) एक इंद्रीको चार (विगला) विगलेंद्रीको मन छोडकर पाँच (असन्नि) असंनी पंचेन्द्रिको मन छोडके पांच (सन्नीणं) संनी पंचेन्द्रिको छे है ॥ ६ ॥ अब जो इस अपनी अपनी पर्याप्ति पूरी करके मरे सो जीव पर्याप्ता और बिना पुरी कीए मरे सो जीव अपर्याप्ता कहलाता है ॥

पणिंदियतिबलूसा—साऊदसपाणचउछसगअट्ठ । इगदुतिचउरिंदीण असन्निसन्नीणनवदसय ॥ ७ ॥

(पणिंदिय) पाँच इंद्रियों (तिबल) मनादि तीन बल (ऊसास) स्वासोस्वास (आऊ) आयु (दस) ऐसे दस (पाण) प्राण है (चउ) स्पर्शनेंद्रिय कायबल स्वासोस्वास और आयु ऐसे चार (छ) पूर्वका चारकी साथ रसना और वचन ऐसे छे (सग) पूर्वका छेकी साथ नासीका ऐसे सात, (अट्ठ) आठ प्राण, पूर्वका सातकी साथ चक्षु (इग) एकेंद्रिको पूर्वका चार (दु) बेइंद्रीको पूर्वका छे (ति) तेइंद्रिको पूर्वका सात (चउरिंदीण) चौरिंद्रीको पूर्वका आठ (असन्नि) असंनी पंचेंद्रिको (सन्नीणं) और संनी पंचेन्द्रिको (नवदसय) अनुक्रमसें नव और दश प्राण जान लेना जैसेकी पूर्वका आठकी साथ श्रोत्र मिलानेसें नव और नवकी साथ मन मिलानेसें दश । चार भावप्राण तो सबकाही समान है ॥ ७ ॥ इति जीवतत्त्वम् ॥

धम्माऽधम्माऽगासा तियतियभेयातहेवअद्धाय । खधादेसपएसा परमाणुअजीवचउदसहा ॥ ८ ॥

(धम्मा) धर्मास्तिकाय (अधम्मा) अधर्मास्तिकाय (आगासा) और आकाशास्तिकाय (तियतिय) प्रत्येक प्रत्येकका खधादि तीन तीन (भेया) भेद है ऐसे नव (तहेव) तेसेही (अद्धाय) कालका एक भेद इस प्रकारसे पूर्वका नव और कालका १ सब मिलकर दश हुआ सो अरूपी है (खंधा) और खंध (देस) देश (पएसा) प्रदेश (परमाणु) परमाणु यह चार पुद्गलका रूपी कहा (अजीव) रूपी अरूपी दोनु मिलकर अजीवका (चउदसहा) चौदह भेद है ॥ ८ ॥

धम्माऽधम्मापुग्गल नहकालोपंचहुंतिअजीवा । चलणसहावोधम्मो थिरसठाणोअहम्मोय ॥ ९ ॥

(धम्माऽधम्मा) धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय (पुग्गल) पुद्गलास्तिकाय (नह) आकाशास्तिकाय (कालो) और काल (पंच) यह पांच (हुंति) है (अजीवा) अजीव द्रव्य (चलणसहावो) चलन स्वभावगुणवाला (धम्मो) धर्मास्तिकाय है (थिरसठाणो) और स्थिरस्वभावगुणवाला (अहम्मोय) एक अधर्मास्तिकाय है ॥ ९ ॥

अवगाहोआगास पुग्गलजीवाणपुग्गलाचउहा । खधादेसपएसा परमाणुचेवनायवा ॥ १० ॥

(अवगाहो) अवकाश स्वभावगुणवाला (आगासं) आकाशास्तिकाय है, वह (पुग्गल) पुद्गलको (जीवाण) और जीवको अवकाश देता है (पुग्गला) पुद्गलके (चउहा) चार भेद है (खंधा) खंध (देस) देश (पएसा) प्रदेश (परमाणु) और परमाणु ऐसे (चेव) निश्चे (नायवा) जानना ॥ १० ॥

सहंधयारउज्जोय पभाछायातवेहिआ । वण्णगंधरसाफासा पुग्गलाणंतुलक्खण ॥ ११ ॥

(सद्द) जीव शब्दादि तीन (अंधयार) अंधकार (उज्जोय) प्रकाश (पभा) ज्योति (छाया) छाया (तवेहिआ) सूर्यका तापवा (वण्ण) पांचोही वर्ण (गंध) दोनु गन्ध (रसा) पांचरस (फासा) आठ स्पर्श (पुग्गलाणंतु) पुद्गलका एसे (लक्खण) लक्षण है ॥ ११ ॥

एगाकोडिसतसट्ठि लक्खासचहुत्तरीसहस्साय । दोयसयासोलहिया आवलियाइगमुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥

(एगाकोडि) एक क्रोड (सतसठिलख्खा) सडसठ लाख (सत्तहुत्तरीसहस्साय) सित्योतर हजार (दोयसयासोळविया) दोसो सोळह अधिक (आवळिया) १६७७७२१६ आवलिका (हुग) एक (मुहुत्तम्मि) मुहूर्तके विषे होती है ॥१२॥

समयावलीमुहुत्तं दीहापख्खायमासवरिसाय। भणिओपलिआसागर उस्सप्पिणीसप्पिणीकालो ॥१३॥

(समय) समय, अतिसूक्ष्म काळको समय कहते है ऐसे असंख्य समयकी (आवळी) एक आवलिका होती है (मुहुत्तं) दो घडीका मुहूर्त मुहूर्तकाळका प्रमाण आवलीकी संख्यासें पूर्वकी चारकी गाथासें जाणलेना (दीहा) ऐसे तीस मुहूर्तका एक अहोरात्री दिन (पख्खा) ऐसे पंद्रह दिनका एक पक्ष (य) और (मास) ऐसे दो पक्षका एक मास (वरिसा) ऐसे बारह मासका एक वर्ष (य) और (भणिओ) कहा है (पलिआ) ऐसे असंख्य वर्षका कूपदृष्टांतकरके एक पल्योपम, ऐसे दश कोडाकोडी पल्योपमका (सागर) एक सागरोपम, ऐसे दश कोडाकोडी सागरोपममिलनेसें एक (उस्सप्पिणी) उत्सर्पिणी और ऐसे दश कोडाकोडी सागरोपमकी एक (सप्पिणी) अवसर्पिणी होती है (कालो) ऐसे उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी मिळकर २० कोडाकोड सागरका एक कालचक्र और ऐसे अनंते काळचक्र जानेपर एक पुद्गल परावरतन होता है। ऐसा अनंता पुद्गल परावर्तन होचुके और आगे होवेंगे इति काळद्रव्यका मान कहा ॥१३॥

परिणामिजीवमुत्त सपएसापगखित्तकिरिआय । णिच्चकारणकत्ता सव्वगयइयरअप्पवेसे ॥ १४ ॥

(परिणामि) छ द्रव्यमें परीणामी कितना और अपरीणामी कितना निश्चयनयसें तो छेही द्रव्य परिणामी है और

व्यवहारनयसें तो एक जीव दुसरा पुद्गल यह दो परिणामी बाकीके चार अपरिणामी है १ (जीव) यह छ द्रव्यमें एक जीवद्रव्य चेतन है शेष पांच द्रव्य अजीव अचेतन्य है २ (मुत्तं) यह छे द्रव्यमें एक पुद्गल जो है वह मूर्त्तिमंत है बाकीके पाँच द्रव्य अमूर्त्त अरूपी है (सपएसा) यह छे द्रव्यमें पाँच द्रव्यस प्रदेशी है और एक कालद्रव्य अप्रदेशी है (एग) यह छे द्रव्यमें धर्म अधर्म और आकाश ये तीन द्रव्य एक है शेष तीन अनेक है (खित्त) यह छ द्रव्यमें एक आकाश द्रव्य जो है वह क्षेत्र है शेष पाँच क्षेत्री है (किरिआय) इस छे द्रव्यमें जीव और पुद्गल यह दो द्रव्य सक्रिय है शेष चारद्रव्य अक्रिय है (निच्चं) ये छे द्रव्यमें व्यवहारसें तो धर्म अधर्म आकाश और काल यह चार नित्य है बाकीके दो द्रव्य अनित्य है और निश्चयसें छेही द्रव्य नित्य है (कारण) जीवको छोडकर पाँच द्रव्य कारण है और जीवद्रव्य अकारण है (कत्ता) ये छे द्रव्यमें जीव तथा पुद्गल व्यवहारसें कर्त्ता बाकीके चार अकर्ता (सव्वगय) ये छ द्रव्यमें एक आकाशद्रव्य लोकालोक व्यापक है और बाकीके पाँच द्रव्य लोकव्यापी है (इयर) इतर (अप्पवेसे) कोई द्रव्य कोईसें मिले नहीं ॥ १४ ॥ इति अजीवतत्त्वम् ॥

साउच्चगोअमणुदुग सुरदुगपंचिंदिजाइपणदेहा । आइतितणुणुवगा आइमसंघयणसंठाणा ॥ १५ ॥

(सा) शाता वेदनी कर्म १ (उच्चगोअ) उंच गोत्र कर्म २ (मणुदुग) मनुष्यगति ३ और मनुष्यानुपूर्वी ४ (सुरदुग) देवगति ५ और देवानुपूर्वी ६ (पंचिंदिजाइ) पंचेन्द्रि जातीनाम कर्म ७ (पणदेहा) औदारिकादि शरीर पाँच

१२ (आइतितणु) आदिके तीन शरीरका (उवंगा) अंगोपाग १५ (आइमसंघयणसंठाणा) आदि वज्ररिषभनाराच संघयण १६ और प्रथम संस्थान समचोरस १७ ॥ १५ ॥

वण्णचउक्कागुरुलहु परघाऊसासआयवुज्जोय। सुभखगइनिमिणतसवस सुरनरतिरियाउतित्थयर ॥१६॥

(वण्णचउक्क) शुभवर्णादिचार २१ (अगुरुलहु) अगुरुलघु २२ (परघा) पराघातनाम कर्म २३ (ऊसास) श्वासोश्वास नामकर्म २४ (आयव) आतप नामकर्म २५ (उज्जोयं) उद्योतनामकर्म २६ (सुभखगइ) शुभविहायोगति जिस कर्मके उदयसें जीवकी हंससमान चाली हो २७ (निमिण) निर्माण नामकर्म २८ (तसदस) त्रस दशक ३८ इस दशकेका भेद आगेकी गाथासें कहेंगे (सुर) देवआयु नामकर्म ३९ (नर) मनुष्यआयु नामकर्म ४० (तिरियाउ) तिर्यंचआयु नामकर्म ४१ (तित्थयरं) और तीर्थंकरनामकर्म ४२ ॥ १६ ॥

तसबायरपज्जत्त पत्तेयथिरसुभंचसुभगच। सुस्सरआइज्जजस तसाइदसगइमहोइ ॥ १७ ॥

(तस) त्रसनामकर्म १ (बायर) बादरनामकर्म २ (पज्जत्त) पर्याप्तनामकर्म एक लब्धि पर्याप्ता दुजाकरणपर्याप्ता ऐसे दो भेद ३ (पत्तेय) प्रत्येकनामकर्म ४ (थिर) स्थिरनामकर्म ५ (सुभं) शुभनामकर्म ६ (च) और (सुभगं) सौभाग्यनामकर्म ७ (च) और (सुस्सर) सुस्वरनामकर्म जिसका स्वर कोकिलाकी तरह मधुर हो ८ (आइज्ज) आदेयनामकर्म ९ (जसं) यशकीर्तिनामकर्म १० (तसाइ) त्रस आदिक (दसग) दशक (इमंहोइ) इस प्रकारसें है ॥ १७ ॥ इतिपुण्यतत्त्वम् ॥

नाणतरायदसग नवधीयनीयसायमिच्छत्त । थावरदसनरयतिग कसायपणवीसतिरियदुग ॥ १८ ॥

(नाण) पाँच ज्ञानावरणी मतिज्ञानावरणी १ श्रुतज्ञानावरणी २ अवधिज्ञानावरणी ३ मनःपर्ययज्ञानावरणी ४ और केवल ज्ञानावरणी ऐसे पाँच (अतराय) अन्तराय दानान्तराय १ लाभान्तराय २ भोगान्तराय ३ उपभोगान्तराय ४ और वीर्यान्तराय यह पांच अन्तराय (दसग) ऐसे दश भेद कहे (नवबीये) और नव दुसरा दर्शनावरणी कर्मके निद्रा १ निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४ थिणद्धी ५ चक्षुदर्शनावरणी ६ अचक्षुदर्शनावरणी ७ अवधिदर्शनावरणी ८ और केवलदर्शनावरणी ९ ऐसे नव और पूर्वकादशमिलकर ओगुणीस (नीय) निचगोत्र २० (असाय) असातावेदनीकर्म २१ (मिच्छत्त) मिथ्यात्व मोहनीनामकर्म २२ (थावर) स्थावरको (दस) दशको इस दशकेका भेद आगे कहेंगे ३२ (नरयतिग) नरकत्रिक नरकगती नरकानुपूर्वी और नरक आयु ऐसे तीन ३५ (कसायपणवीस) कशाय पचीस सो देखलाते है अनन्तानुबंधी आदि क्रोधके चार तथा अनन्तानुबंधि आदि मानके चार फिर अनन्तानुबंधि आदि मायाके चार और अनन्तानुबंधी आदि लोभके चार यह सोल कषाय अब नवनो कषाय कहते हैं हास्य १ रति २ अरति ३ शोक ४ भय ५ दुर्गंछा ६ स्त्रीवेद ७ पुरुषवेद ८ नपुंसकवेद ९ पूर्वके सोल कषाय और यह नव नोकशाय सब मील २५ तथा पूर्वके ३५ सब मिल साठ (तिरियदुगं) और तिर्यंचद्विक इस लिये तिर्यंचगति ६१ और तिर्यंचानुपूर्वी ६२ ॥ १८ ॥

इगबितिचउजाईओ कुखगइउवघायहुतिपावस्स । अपसत्थवण्णचउ अपढमसंघयणसठाणा ॥ १९ ॥

(इग) एकेन्द्रिजाति (बि) बेइन्द्रिजाति (ति) तेरिन्द्रीजाति (चउ) और चोरिन्द्रिजाति (जाईओ) ऐसे चार जाति नामकर्म यह सब मिलके छासठ (कुखगइ) अशुभ विहायोगति नामकर्म इस नामकर्मसें जीव गधेकी नाई चले सो १७ (उवघाय) उपघात नामकर्म १८ (इतिपावस्स) यह सब पापके भेद है (अपसत्थवण्णचउ) अशुभवर्णादि चार ७२ (अपढमसंघयणसंठाणा) प्रथमका संघयनको छोडकर ऋषभनाराच १ नाराच २ अर्धनाराच ३ कीलीका ४ और सेवठा यह पांच संघयन और प्रथमका संस्थान छोडकर न्यग्रोध १ सादि २ कुब्ज ३ वामन ४ और हुंडक यह पांच संस्थान सब मिलकर पापतत्त्वका ब्यासी भेद हुआ ॥ १९ ॥

थावरसुहुमअपज्ज साहारणमथिर मसुभदुभगाणि । दुस्सरणाइज्जजस थावरदसगविवज्जत्थ ॥ २० ॥

(थावर) स्थावर नामकर्म १ (सुहुम) सूक्ष्म नामकर्म २ (अपज्जं) अपर्याप्ति नामकर्म ३ (साहारणं) साधारण नामकर्म ४ (अथिर) अस्थिर नामकर्म ५ (असुभ) अशुभ नामकर्म ६ (दुभग्गाणि) दुर्भाग्य नामकर्म ७ (दुस्सर) दुस्वर नामकर्म ८ (अणाइज्ज) अनादेय नामकर्म ९ (अजसं) अपयश नामकर्म १० (थावरदसगंविवज्जत्थं) यह स्थावरको दशको त्रससे विप्परित जान लेना ॥ २० ॥इतिपापतत्त्वम् ॥

इंदिअकसायअव्वय जोगापचचउपंचतिन्निकमा । किरिआओपणवीस इमाओताओअणुक्कमसो ॥२१॥

(इंदिअ) इन्द्रियो पांच (कसाय) क्रोधादि कषाय च्यार (अव्वय) प्राणातिपातादि अव्रत पाँच (जोगा) मनादि

योग तीन (पंच) पाँच (चउ) चार (पण) पाँच (तिन्नी) तीन (कमा) अनुक्रमसें जानलेना (किरिआओपणवीसं) क्रिया पंचीश (इमाओताओअणुक्कमसो) यह पचीस क्रियाको अनुक्रमसें कहते है ॥ २१ ॥

काइयअहिगरणीआ पाउसिआपारितावणीकिरिया । पाणाइवायारंभिअ परिग्गहियामायवत्तीय ॥२२॥

(काइय) कायाको अजतनासें परवायनासो कायिकी क्रिया १ (अहिगरणीआ) जिस क्रियासें जीव नरकादिकका अधिकारि हो उसको अधिकरणिकी क्रिया कहते है जैसे कि शस्त्रआदिकसें जीवोंकी हत्या करना (पाउसिआ) जीव अजीवसें जो द्वेष करना यह प्रद्वेषिकी क्रिया ३ (पारितावणीकिरिया) अपनें जीवको या दुसरा जीवोंको तकलीफ पहुचाना यह पारितापनिकी क्रिया ४ (पाणाइवाय) जो किशी जीवकों प्राणोंसे रहित करना यह प्राणातिपातिकी क्रिया ५ (आरंभिअ) जो खेती आदि आरंभका काम करना सो आरंभिकी क्रिया ६ (परिग्गहिया) जो परिग्रह रखना या परिग्रहपर ममत्व रखना सो परिग्रहकी क्रिया ७ (मायवत्तीअ) जो माया—कपटसें किशीको ठगना सो मायाप्रत्ययिकी क्रिया ८ ॥ २२ ॥

मिच्छादंसणवत्ती अपच्चक्खाणायदिट्ठिपुट्ठिअ । पाडुच्चिअसामंतो—वणीअनेसत्थियसाहत्थि ॥ २३ ॥

(मिच्छादसणवत्ती) जिनेंद्रके सिद्धांतसे जो विपरीत एकान्तक्रियारुपी आत्मज्ञानसे हीन वहिरात्मा सम्यक्हीन और दृष्टिरागी जिसको सत्यासत्यका निरणय नहीं सो मिथ्या दर्शनकी क्रिया ९ (अपच्चक्खाणाय) प्रतपचखान नही

करनेसें जो क्रिया लगती है यह अप्रत्याख्यानिकी क्रिया १० (दिट्ठि) जो अशुभ दृष्टीसें देखना, सो दृष्टीकी क्रिया ११ (पुट्ठिअ) सो रागादिकसें कलुषितचित्तकरके स्त्री आदिकके अंगका स्पर्श करना सो स्पृष्टीकी क्रिया १२ (पाडुच्चिअ) सो अपने मनसे स्वपरका बुरा विचारना सो प्रातीत्यकीक्रिया १३ (सामंतोवणीअ) अपना अश्व प्रमुखकी प्रशंसासें हर्ष करना सो अथवा दुध दही घी आदिके भाजन खुला रखनेसें उसमें जो त्रसआदि जीवपडकर मरे उससें लगे सो सामंतोपनिपातीकी क्रिया १४ (नेसत्थि) नैशस्त्रकी क्रिया १५ (साहत्थि) स्वाहस्तिकी क्रिया १६ ॥ २३ ॥

आणव[illegible]णिविआरणिआ अणभोगाअणवकखपच्चइआ। अन्नापओगसमुदा–णपिज्जदोसेरिआवहिआ २४

णे) जो जीव अजीवको जाने लेजानेसें क्रिया लगे उसको आनयनिकी क्रिया कहते है १७ (विआरणिआ) जीवको विदारनेसें विदारणि लगेसो विदारणकी क्रिया १८ (अणभोगा) विना उपयोगसें जो चीज रखना तथा हलने चलनेसें जो क्रिया लगे उसे अनाभोगिकी क्रिया कहते है १९ (अणवकखपच्चइआ) इस लोक [illegible]सें जो विरुद्ध आचरण करना उसे अनवकांक्षप्रत्ययिकी क्रिया कहते है २० (अन्नापओग) दुसरी प्रयोगिकी (समुदाण) समुदायकी क्रिया २२ (पिज्ज) माया और लोभ करनेसें जो क्रिया लगे उसे प्रेमकी क्रिया २ (दोसे) क्रोध और मानसें जो क्रिया लगे उसे द्वेषकी क्रिया कहते है २४ (इरिआवहिआ) रस्ते चल[illegible] व्यापारसें जो क्रिया लगे उसे ईर्यापथिकी क्रिया कहते है २५ पचीसमी क्रिया अप्रमत्तसाधुसेलेके तथा छीपर्यंतको भी लगति है ॥ २४ ॥ इति आश्रवतत्त्वम् ॥

समिईगुत्तिपरीसह जइधम्मोभावणाचरित्ताणि । पणतिदुवीसदसबार पचभेएहिंसगवन्ना ॥२५॥

(समिइ) समति (गुति) गुप्ति (परीसह) परिसह (जइधम्मो) यतिधर्म (भावणा) भावना (चरित्ताणि) चारित्र (पण) समिति पांच (ति) गुप्तितीन (दुवीस) परिसह बावीश (दस) दशविध यति धर्म (बारस) बारह भावना (पच) चारित्र पाँच (भेएहिं) ऐसे सब मिलके संवरके भेद (सगवन्ना) सत्तावन कहे जिसमें दो भेद है एक द्रव्य संवर और दुसरा भावसंवर जो आते हुये नवीनकर्मकोरोकदेना आत्मस्वरूपमे रहकर उसको भावसंवर कहते है और कर्म पुद्गलकी रुकावटको द्रव्यसंवर कहते हैं ॥ २५ ॥

इरियाभासेसणादाणे उच्चारेसमिईसुअ । मणगुत्तिवयगुत्तिकायगुत्तितहेवय ॥ २६ ॥

(इरिया) यतनापूर्वक रस्तेमें चलना उसको ईर्यासमिति कहते हैं १ (भास) निर्दोष भाषाका जो बोलना उसे भाषास मिति कहते है २ (एसणा) निर्दोष आहारको जो ग्रहण करना सो एषणासमति ३ (दाणे) दृष्टिसे और पुञ्जनीसे प्रमार्जन करके चीजको उपगरणको उठाना और रखना उसको आदाननिक्षेपणसमिति कहते है ४ (उच्चारे) कफ मल मूत्र आदिको जतनापूर्वक परठना उसे पारिष्ठापनिका कहते (समिई) पांचसमिति (सुअ) यह ५ (मणगुत्ति) और मनोगुप्तिके तीन भेद है १ असत्कल्पनावियोग २ समताभावकी और ३ आत्मविचार ६ (वयगुत्ति) वचनगुप्तिजिसके तीन भेद है १ अशुद्ध २ मिश्र और ३ शुद्ध व्यवहार ७ (कायगुत्तितहेवय) कायगुप्ति अशुभ करणीसे कायाको गोपरखना ८ ॥ २६ ॥

खुहापिवासासीउण्ह दसाचेलारइत्थिओ । चरिआनिसिहियासिज्जा अक्कोसवहजायणा ॥ २७ ॥

(खुहा) क्षुधापरिसह १ (पिवासा) प्यासको सहन करना यह पिपासा परिसह २ (सी) शीत परिसह ३ (उण्ह) उष्ण परिसह ४ (दसा) डंश परिसह ५ (चेला) अचेलक परिसह ६ (अरइ) अरति परिसह ७ (इत्थिओ) स्त्रीके अंगउपाँगको सराग दृष्टिसें न देखे सो स्त्री परिसह ८ (चरिआ) चलनेका परिसह ९ (निसिहिया) नैषेधिकी इस लिये स्मशान और सिंहकी गुफा आदि स्थानोमें ध्यानके समय नाना प्रकारके कष्टको सहता हुवा भी निषिद्ध न करे सो १० (सिज्जा) संथारेकी भूमी कहांही उंची निची मिलजानेपरभी मुनि उद्वेग न करे सो सज्या परिसह ११ (अक्कोस) आक्रोश इस लिये कोइ गाली देवे तोभी सहन करे १२ (वह) वध इस लिये कोई दुष्ट जीव मुनिको मारे पीटे या जानसें मारडाले सो भी वीतरागी साधु क्रोध न करे १३ (जायणा) याचना परिसह १४ ॥ २७ ॥

अलाभरोगतणफासा मलसक्कारपरीसहा । पन्नाअन्नाणसम्मत्त इअबावीसपरीसहा ॥ २८ ॥

(अलाभ) लाभान्तराय कर्मके उदयसें जो मागने परभी चीज न मिले तोभी समता रखे और विचारे कि अन्तरायकर्मकाउदय है सो अलाभ परिसह १५ (रोग) ज्वरादि अतिरोग आने परभी साधु चिकित्सा करानेकी इच्छाभी न करे किन्तु समभावसे सहनकरे सो रोगपरिसह १६ (तणफासा) तृणस्पर्शपरिसह साधुको तृणआदिको जो संथारो मिले तोभी शात चित्तसें वेदना सहन करे १७ (मल) मलपरिसह इस लिये शरीरपर जो पसीनेसें मेल चढ

जावे तोमी स्नानादिककी इच्छा न करे १८ (सक्कारपरीसहा) सत्कारपरिसह, उत्कर्ष न आवे, स्तुति करणेपर सम-परिणाम रखे १९ (पन्ना) प्रज्ञा इस लिये यदी विद्वत्ता होनेपरभी मुनि घमण्ड न रखे २० (अन्नाण) अज्ञानपरिसह अज्ञानके उदयसें मुनि दुर्ध्यान न करे २१ (सम्मत्तं) सम्यक्त्वपरिसह (इअ) इस प्रकारसें (बावीसपरीसहा) बावीसपरिसह जाणना २२ ॥ २८ ॥

खंतीमद्दवअज्जव मुत्तीतवसंजमेअबोधव्वे । सच्चसोअअकिंचणंच बंभंचजइधम्मो ॥ २९ ॥

(खंती) क्षमा सब प्राणीमात्रपर सम दृष्टी रखे किन्तु यति क्रोधपर क्रोध न रखे १ (मद्दव) मानका त्याग करना उसको मार्दवधर्म कहते है २ (अज्जव) किसीके साथ कपट नहि रखना सो आर्जवधर्म ३ (मुत्ती) निरलोभता ४ (तव) तप जो इच्छाका निरोध करना यही तप ५ (संजमे) सत्तरे प्रकारे संयमका आराधनकरना यही संयम ६ (अ) और (बोधव्वे) जानना (सच्चं) सत्यधर्म ७ (सोअं) मनआदिको पवित्ररखना यह शौचधर्म ८ (अकिंचणं) बाह्य अभ्यन्तर परीग्रहका त्याग सो आकिंचनधर्म ९ (च) और (बंभं) द्रव्यसें और भावसें जो मैथुनका त्याग करना यह ब्रह्मचर्यधर्म १० (जइधम्मो) ऐसे दशप्रकारे यतिधर्म पाले उसको यति कहना योग्य है ॥ २९ ॥

पढममणिच्चमसरणं संसारोएगयायअन्नत्त । असुइत्तंआसवसंवरोअ तहनिज्जरानवमी ॥ ३० ॥

(पढममणिच्च) प्रथम अनित्यभावना इस भावनामें भव्यजीव ऐसा विचारे कि धन यौवन आदि सब पदार्थ अनित्य

है आत्माका मूलधर्म अविनाशी है १ (असरणं) असरण भावना कि मृत्युके समय इस जीवको संसारमें धर्म विना कोई भी शरणभूत नही है एक धर्मही शरण है ऐसा विचारना सो २ (संसारो) संसारभावना इस भावनामें भव्य ऐसा विचारे कि मेरे जीवनें चौराशी लाख योनिमें परिभ्रमण करते अनन्तेकालचक्र होगये है इस संसारमें पिता सो पुत्र और पुत्र सो पिता ऐसा उलट सुलट अनेंकी वेर होता है ऐसा विचारना सो संसार भावना ३ (एगयाय) एकत्व भावना इस भावनामें भव्य ऐसा चिंतवे कि मेरा जीव अकेलाही आये है और अकेलाही आवेंगा सुखदुःख भी अकेलाही भोगेंगो ४ (अन्नत्त) अन्यत्व भावना इसमें भव्य ऐसा विचारे कि मेरा आत्मा अनन्त ज्ञानमयी है और शरीर जड पदार्थ है शरीर आत्मा नहीं है न आत्मा शरीर है ऐसा सदैव विचारे ५ (असुइत्तं) अशुचि भावना यह शरीर खून मांस हड्डी मलमूत्र आदिसें भराहुआ एसा जो विचारना वह अशुचित्व भावना ६ (आसव) आस्रव भावना रागद्वेष और अज्ञान मिथ्यात्व आदिके जोरसें नये नये कर्मका जो आना अर्थात् शुभाशुभका विचार यह आस्रव ७ (संवरोय) संवर भावना शुभाशुभ विचारको छोडकर स्वस्वरूपमें लीन रहना अर्थात् नवीन कर्मको आने नहीं देना यह निश्चय संवर और अकेला अशुभ विचारोंको रोकदेना सो व्यवहार संवर भावना ८ (तह) तैसेही (निज्जरान वमी) नवमी निर्जरा भावना निर्जराके दो भेद है एक सकाम निर्जरा और दुसरी अकाम निर्जरा ९ ॥ २० ॥

लोगसहावोबोही दुल्लहाधम्मस्ससाहगाअरिहा । एआओभावणाओ भावेअव्वापयत्तेण ॥ २१ ॥

(लोगसहावो) दशमी लोकस्वभाव भावना इसमें चौदहराजलोकका स्वरूप विचारना (बोहीदुल्लहा) ११ मी

सम्यक्त्वकी प्राप्ति होनी महोत दुर्लभ है ऐसा विचारना यह बोधिदुर्लभभावना (धम्मस्स) बारहमी धर्मभावना इसमें भव्य ऐसा विचारे कि संसारसमुद्रसें पार होनेके लिये जो जिनेश्वरमहाराजने कहा हुआ धर्म है उसका (साह गाअरिहा) साधक कहनेवाला अरिहंतादि मिलना दुर्लभ है (एआओ) इस प्रकारसें कही हुई (भावणाओ) भावनाओ (भावेअपा) विचारनी (पयत्तेणं) प्रयत्नसें ॥ ३१ ॥

सामाइअत्थपढमं छेओवट्ठावणभवेबीअ । परिहारविसुद्धिअं सुहुमंतहसंपरायच ॥ ३२ ॥

(सामाइ) सामायिक चारित्रद्रव्य और भावसें (अत्थ) इहां (पढमं) पहिला है १ (छेओवट्ठावणंभवेबीअं) छेदोपस्थापनीयचारित्र दुसरा है २ (परिहारविसुद्धीअं) परिहारविशुद्धि चारित्र ३ (सुहुमंतहसंपरायंच) फिर चोथा सूक्ष्म संपराय चारित्र ४ यह चारित्र दशमा गुणस्थानवाले मुनिको होता है ॥ ३२ ॥

तत्तोअअहक्खायं खायंसव्वम्मिजीवलोगम्मि । जंचरिऊणसुविहिआ वच्चंतिअयरामरठाणं ॥ ३३ ॥

(तत्तोअअहक्खायं) उस पीछे पाँचमा यथाख्यात चारित्र (खायंसव्वम्मिजीवलोगम्मि) यह चारित्र सब जीवलोगमें प्रसिद्ध है (जंचरिऊणसुविहिआ) जिसका सेवन करनेसें सुविहित साधु लोगों (वच्चंतिअयरामरंठाणं) अजरामरस्थान कुं पावे है ॥ ३३ ॥ इति संवर तत्त्वम् ॥ ३३ ॥

अणसणमूणोअरिआ वित्तीसंखेवणरसच्चाओ । कायकिलेसोसंलीण—यायबज्झोतवोहोइ ॥ ३४ ॥

(अणसणं) सर्वथा आहारका त्याग उपवासादिक सो अनशन तप १ (ऊणोअरिआ) आहार कमकरना सो ऊनोदरी तप २ (वित्तीसंखेयणं) वृत्तिका संक्षेप करना सो वृत्तिसंक्षेप तप ३ (रसच्चाओ) विगयका त्याग करना सो रस त्याग तप ४ (कायकिलेसो) लोचादि जो कष्ट करना यह कायक्लेश तप ५ (संलीणयाय) सब इन्द्रियोंका दमन करना यह संलीनता तप (बज्झोतवोहोइ) इस प्रकारसें बाह्य तपके छ भेद कहे ॥ ३४ ॥

पायच्छित्तंविणओ वेयावच्चतहेवसज्झाओ । झाणउस्सग्गोविअ अब्भितरओतवोहोइ ॥ ३५ ॥

(पायच्छित्तं) जो शुद्ध मनसें गुरु महाराजके पास आलोयणा लेना सो प्रायश्चित तप १ (विणओ) विनय तप २ (वेयावच्चं) वैयावृत्य तप ३ (तहेवसज्झाओ)वैसेही स्वाध्याय तप ४ (झाणं) ध्यान तप ध्यानका स्वरूप गुरुगमसें धारना ५ (उस्सग्गोविअ) और कायोत्सर्ग तप (काउसग्ग) ६ (अब्भितरओतवोहोइ) ऐसे छ प्रकारसें अभ्यन्तर तप कहा ॥ ३५ ॥

बारसविहंतवोनिज्जराय बंधोचउविगप्पोअ । पयईठिइअणुभागो पएसभेएहिंनायव्वो ॥ ३६ ॥

(बारसविहं) ऐसे सब मिलकर बारह भेद (तवो) तप (निज्जराय) निर्जराके लिये है । इति निर्जरातत्त्वम् (बंधो) अथ बंधतत्त्व (चउविगप्पोअ) चार भेद है (पयई) १ प्रकृतिबन्ध (ठिइ) स्थितिबन्ध (अणुभागो) ३ अनुभागबन्ध (पएस) और प्रदेशबन्ध ४ (भेएहिं) ऐसे चार भेदसें (नायव्वो) जानना ॥ ३६ ॥

पयइसहावोवुत्तो ठिईकालावहारणं । अणुभागोरसोनेओ पएसोदलसंचओ ॥ ३७ ॥

(पयइसहावोवुत्तो) प्रकृतिबन्ध इसलिये कर्मोंका स्वभाव (ठिईकालावहारणं) कर्मोंकी स्थिति–कालका निश्चय यह स्थितिबन्ध २ (अणुभागो) ३ अनुभाग बन्ध सो (रसोनेओ) कर्मोंका रस जानना (पएसो) ४ प्रदेशबन्ध (दलसं चओ) कर्मोंके दलका संचय ॥ १७ ॥

पडपडिहारसिमज्ज हडचित्तकुलालभंडगारीण । जहएएसिंभावा कम्माणविजाणतहभावा ॥ ३८ ॥

(पड) पाटा, जैसे किसीके आंखोंपर बन्धे हुए पाटेके संयोगसे कुछ नहीं देखाइ देता तेसे ही ज्ञानावरणीय कर्मके स्वभावसें आत्माको अनन्त ज्ञान नहीं होता है १ (पडिहार) द्वारपालकेसमान दर्शनावरणीय कर्मका स्वभाव है जैसे राजाको दर्शन चाहनेवालेको द्वारपाल रोक देते है उसी तरह आत्माके दर्शनगुणको दर्शनावरणीय कर्म रोक देता है २ (असि) तरवार, वेदनी कर्मका स्वभाव ऐसा है कि जैसे सहद लगी तलवारकी धारको चाटनेसें अच्छा लगता है मगर जब जीभ कटजाति है तब दुख होता है वैसीही तरह साताबेदनीसें जीवको सुख होता है और असातावेदनीसें जीवको दुख होता है ३ (मज्ज) मदराकीछाक समान मोहनीयकर्मका स्वभाव है जैसे मदिरासें जीव बेभान होजाते है तेसेही मोहनीयकर्मके उदयसें जीव संसारमें मुंझाते हैं यह कर्म आत्माका सम्यगदर्शनको और सम्यक् चारित्र गुणोंको रोकता है अर्थात् रुक देता है ४ (हड) खोडासमान आयुकर्म है जैसे खोडेमें पडे हुए चोर राजाके हुकम बिन नही निकल शकते है तैसे ही आयुकर्मके जोरसे जीव गतीसे नही निकल शकते है ५ (चित्त) इस नामकर्मका स्वभाव चित्रकार जैसा है यह कर्म आत्माके अरूपि धर्मको रोकता है जैसे चितारा अच्छा बुरा नाना प्रकारका चित्राम

बनाता है तेसे ही यह नामकर्म आत्माको अछी बुरी गतियोंमे पहुचा देता है नाना प्रकारके स्वरूपको धारण करा देता है ६ (कुलाल) यह गोत्रकर्म कुभार जैसा है जैसे कुंभार अछे और बुरे नाना प्रकारके बरतन बनाते हैं वैसेही इस कर्मके उदयसें जीव ऊंच निच कुलको धारण करते है ७ (भंडगारीणं) इस अन्तराय कर्मका स्वभाव भंडारी जैसा है क्योंकि जब राजा किसीको दान देनेके लिये भंडारीको कहे परन्तु भंडारी उसको देवे नहीं ऐसेही इस कर्मके उदयसे जीव दानादि नहीं कर शकते है ८ (जहएएसिंभावा) जैसे इनोंका भाव जैसा यह आठोही वस्तुका स्वभाव है (कम्माण) तैसेही आठोही कर्मोंकाभी (विजाण) जानो (तहभावा) तैसेही कर्मोंका स्वभाव ॥ १८ ॥

इहनाणदसणावरण वेयमोहाउनामगोआणि । विग्घंचपणनवदुअठवीस चउतिसयदुपणविह ॥ ३९ ॥

(इहनाण) यह ज्ञानावरणीयकर्म १ (दसणावरण) और दुसरा दर्शनावरणीकर्म २ (वेयमोहाउनामगोआणि) तीसरा वेदनीयकर्म ३ ४ मोहीनीकर्म ५ आयुकर्म ६ नामकर्म और सातमा गोत्रकर्म ७ (विग्घं) अन्तरायकर्म ८ (च) यह आठ कर्म (पण) ज्ञानावरणीयकी उत्तर प्रकृतियों पांच है (नव) और दर्शनावरणीयकी उत्तरप्रकृति नव (दु) वेदनीकी प्रकृति दो (अठवीस) मोहीनीकर्मकी उत्तर प्रकृति अठावीस (चउ) आयुकर्मकी उत्तर प्रकृति चार (तिसय) नामकर्मकी उत्तर प्रकृति एकसो तीन (दु) गोत्रकर्मकी उत्तर प्रकृति दो (पण) और अन्तराय कर्मकी उत्तर प्रकृति पांच (विहं) ऐसे सब कर्मोंकी उत्तर प्रकृति एकसें अठावन जान लेना ॥ १९ ॥

नाणेयदसणावरण वेअणिएचेव अतराएअ । तीस कोडाकोडी अयराणठिईयउक्कोसा ॥ ४० ॥

(नाणेयदंसणावरणवेअणिए) ज्ञानावरणी दर्शनावरणी वेदनी (चेव) निश्चय (अतराएअ) और अन्तराय इन चारो कर्मोंकी (तीसंकोडाकोडी) तीस कोडाकोडी (अयराणं) सागरोपमकी (ठिईयउक्कोसा) उत्कृष्टी स्थिति कही है ॥ ४० ॥

सत्तरिकोडाकोडीमोहणिए वीसनामगोएसु । तित्तीसअयराइ आउठिइबंधउक्कोसा ॥ ४१ ॥

(सत्तरिकोडाकोडी) सित्तर कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति (मोहणिए) मोहनीयकर्मकी है (वीसनामगोएसु) वीस कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति नामकर्म और गोत्रकर्मकी है (तित्तीसंअयराइं) तेत्तीस सागरोपमकी (आउ) आयुकर्मकी (ठिइ) स्थिति कही (बंधउक्कोसा) ऐसे सब कर्मोंकी उत्कृष्टी स्थितिका बंध कहा है ॥ ४१ ॥

बारसमुहुत्तजहन्ना वेयणिएअठनामगोएसु । सेसाणतमुहुत्त एयबंधठिईमाण ॥ ४२ ॥

(बारसमुहुत्तजहन्ना) बारह मुहूर्तकी जघन्यस्थिति (वेयणिए) सकसाय वेदनीयकर्मकी है अकषाय वेदनीकी २ समयकी स्थिति है (अठनामगोएसु) आठ मुहूर्तकी जघन्यस्थिति नामकर्म और गोत्रकर्मकी है (सेसाणंतमुहुत्तं) शेष पांच कर्मोंकी जघन्यस्थिति अन्तरमुहूर्तकी है (एयंबंधठिईमाणं) इस प्रकारसें सब कर्मोंकी उत्कृष्टी और जघन्यसे स्थिति बंधका प्रमाण कहा ॥ ४२ ॥ इति बंधसत्यम् ॥

सतपयपरूवणया दव्वपमाणचखित्तफुसणाय । कालोअअतरभाग भावेअप्पाबहुचेव ॥ ४३ ॥

(संतपयपरूवणया) सत्पदकी प्ररूपणाद्वार १ (दव्वपमाण) फिर सिद्धजीवोंके द्रव्यका प्रमाणद्वार २ (खित) क्षेत्र द्वार ३ (फुसणाय) सिद्धोंकी स्पर्शनाद्वार ४ (कालोअ) कालद्वार ५ (अंतर) अन्तरद्वार ६ (भाग) भागद्वार ७ (भाव) भावद्वार ८ (अप्पाबहु) और अल्पाबहुत्वद्वार ९ (चेव) निश्चे यह मोक्षके नव द्वार कहे ॥ ४३ ॥

सतसुद्धपयत्ता विज्जतखकुसुमव्वनअसंत । मुक्खत्तिपयतस्सउ परूवणामग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥

(संत) मोक्ष छतो है (सुद्ध) शुद्ध (पयत्ता) पद होनेसे (विज्जतंखकुसुमव्वनअसंतं) यह विद्यमान है परन्तु यह आकाशके कुसुमकी तरह अछतो नहीं है (मुक्खत्तिपयतस्सउ) यह मोक्षपदकी (परूवणा) प्ररूपणा (मग्गणाईहिं) मार्गणाद्वारों विचारसे कहते हैं ॥ ४४ ॥

गइइंदीएकाय जोएवेयकसायनाणेय । संजमदंसणलेसा भवसम्मे सन्नि आहारे ॥ ४५ ॥

(गइ) गतिमार्गणा ४ (इंदीए) इंद्रियमार्गणा ५ (काय) कायमार्गणा ६ (जोए) योगमार्गणा ३ (वेय) वेदमार्गणा ३ (कसाय) कषायमार्गणा ४ (नाणेय) ज्ञानमार्गणा ८ (संजम) संयममार्गणा ७ (दंसण) दर्शनमार्गणा ४ (लेसा) लेश्यामार्गणा ६ (भव) भव्यमार्गणा २ (सम्मे) सम्यक्त्वमार्गणा ६ (सन्नि) संज्ञिमार्गणा २ (आहारे) आहार मार्गणा २ ॥ ४५ ॥

नरगइपणिंदितसभव सन्निअहक्खायखइअसम्मत्ते । मुक्खोणाहारकेवल दंसणनाणेनसेसेसु ॥ ४६ ॥

(नरगइ) मनुष्यगतिसें १ (पणिंदि) पंचेन्द्रिजातिसें २ (तस) त्रसकायसें ३ (भव) भव्यपणसें ४ (सन्नि) संनी पंचेन्द्रिसें ५ (अहक्खायं) यथाख्यातचारित्रसें ६ (खइअसम्मत्ते) क्षायकसम्यक्त्वसें ७ (मुक्खो) मोक्ष जाते हैं और (णाहार) अणहारीक पदसें ८ (केवलदंसण) केवल दर्शनसें ९ (नाणे) और केवलज्ञानसें इन दश मार्गणा द्वारसें जीवों मोक्ष जाते हैं १० (नसेसेसु) परन्तु शेष ५२ मार्गणाओंसें मोक्ष नही जाते ॥ ४६ ॥ इति प्रथमद्वार ॥

दवपमाणेसिद्धाण जीवदव्वाणिहुतिणताणि । लोगस्सअसखिज्जे भागेइक्कोयसव्वेवि ॥ ४७ ॥

(दवपमाणेसिद्धाणं) सिद्धोंके द्रव्यकाप्रमाण (जीवदव्वाणिहुतिणंताणि) सिद्धोंमें जीवद्रव्य अनन्ता हैं ॥ इति दुसरा द्वार २ (लोगस्समसंखिज्जेभागे) चौदह राजलोकके असंख्यातमे भागमे (इक्कोय) एक सिद्ध और (सव्वेवि) सब सिद्ध रहते हैं ॥ इति तीसरा द्वार ३ ॥ ४७ ॥

फूसणाअहिआकालो इगसिद्धपडुच्चसाइओणंतो । पडिवायाभावाओ सिद्धाणअतरनत्थि ॥ ४८ ॥

(फूसणा) स्पर्शना सिद्ध जीवोंकी (अहिया) अधिक है यह चौथा द्वार ४ (कालो) काल (इगसिद्धपडुच्चसाइओणंतो) एक सिद्ध आश्रित सादि अनन्त स्थिति है और अनेक सिद्ध आश्रित अनादि अनन्त स्थिति है ॥ इति

कालद्वार ५ (पडियायाभावाओ) सिद्धोंके जीवोंको पिछा पडनेका अभाव है ॥ इति छठा द्वार ६ (सिद्धाणंअंतर-नत्थि) सिद्धोंके जीवोंको अन्तर नहीं है कालकृत और क्षेत्रकृत दोनोंसें इति सातमा द्वार ॥ ४८ ॥

सव्वजियाणमणंते भागेतेतेसिंदसणनाण । खइएभावेपरिणामि एअपुणहोइजीवत्त ॥ ४९ ॥

(सव्वजियाणमणंते) सब संसारी जीवोंसे सिद्धके जीवों अनन्तमें (भागे) भागमे हैं इति आठमो द्वार ८ (तेतेसिं दंसणनाणं) उन सिद्धोंके जीवोंके केवलदर्शन और केवलज्ञान (खइए) क्षायिक (भाव) भावमे है (परिणामी एअ) परिणामी है (पुण) यह पुनः (होइजीवत्त) जीवत्वपना है ॥ ४९ ॥

थोवानपुससिद्धा थीनरसिद्धायकमेणसखगुणा । इअमुक्खतत्तमेअ नवतत्तालेसओभणिआ ॥ ५० ॥

(थोवा) सबसे कम (नपुस) नपुंसक (सिद्धा) सिद्ध हुवा (थी) नपुंसकसे स्त्रीसिद्ध संख्यातगुणा अधीक हैं स्त्री सिद्धसे (नरसिद्धा) पुरुष सिद्ध संख्यातगुणे हुए (कमेणसखगुणा) अनुक्रमें संख्यातगुणा जानना (इअमुक्ख) यह मोक्ष (तत्तमेअं) तत्त्व जाणना इस प्रकारसें नव भेद कहे (नवतत्तालेसओभणिआ) इस प्रकारे नव तत्त्व संक्षेपसे कहेगये ॥ ५० ॥

जीवाइनवपयत्थे जोजाणइतस्सहोइसम्मत्त । भावेणसद्दहतो अयाणमाणेविसम्मत्तं ॥ ५१ ॥

(जीयाइ) जीयादि (नवपयत्थे) नव पदार्थको (जोजाणइ) जो जीव जाणते है (तस्सहोइसम्मत्त) उस जीवको

अयदयही सम्यक्त्व हो (भावेणसद्दहंतो) और भावसें जो सर्द है सो (आयाणमाणेवि) अजान जीयोकोभी (सम्मत्त) सम्यक्त्व प्राप्ति होवे ॥ ५१ ॥

सद्याइजिणेसरभासिआइ वयणाईनमहाहुति । इअबुद्धीजस्समणे सम्मत्तनिच्चलंतस्स ॥ ५२ ॥

(सद्याइं) सर्व (जिणेसरभासिआइं) जिनेश्वर महाराजके कहे हुए (वयणाइं) वचन (नमहाहुंति) अन्यथा नही है अर्थात् सत्य है (इअबुद्धीजस्समणे) ऐसी बुद्धि जिसके मनमें होवे (सम्मत्तनिच्चलंतस्स) उस प्राणीका निश्चल सम्यक्त्व होवे ॥ ५२ ॥

अतोमुहुत्तमित्तपि फासिअहुज्जजेहिंसम्मत्त । तेसिंअवड्ढपुग्गल परिअट्टोचेवसंसारो ॥ ५३ ॥

(अतोमुहुत्तमित्तपि) एक अन्तरमुहुर्त्तमात्रभी (फासिअंहुज्जजेहिं) स्पर्श हुआ हो जिसको (सम्मत्तं) सम्यक्त्वका (तेसिं) तिस जीयको (अवड्ढ) अर्ध (पुग्गलपरिअट्टो) पुद्गल परावर्तक उसको परिभ्रमण करना होगा (चेव) निश्चयकरेके (ससारो) संसारमें बाद मोक्षमें आवेंगे ॥ ५३ ॥

उस्सप्पिणीअणता पुग्गलपरिअट्टओमुणेअव्वो । तेणंतातीअद्धा, अणागयद्धाअणंतगुणा ॥ ५४ ॥

(उस्सप्पिणीअणंता) अनन्ती उत्सर्पिणी और अनन्ती अवसर्पिणी आने पर (पुग्गलपरिअट्टओ मुणेअव्वो) एक पुद्गल परावर्त्तन होता है (तेणंताईअद्धा) तैसा अनन्ता पुद्गल परावर्त्तन अतितकाले हो चुके (अणागयद्धाअणंतगुणा) और अनागतकाले अनन्तगुणा आगे आवेंगे ॥ ५४ ॥

जिणअजिणतित्थतित्था गिहिअन्नसलिंगथीनरनपुसा । पत्तेअसयबुद्धा बुद्धबोहिइकणिकाय ॥ ५५ ॥

(जिण) जिनसिद्ध १ (अजिण) अजिनसिद्ध २ (तित्थ) तीर्थसिद्ध ३ (तित्था) अतीर्थसिद्ध ४ (गिहि) गृहीलिंग सिद्ध ५ (अन्न) अन्यलिंगेसिद्ध ६ (सलिंग) स्वलिंगसिद्ध ७ (थी) स्त्रीलिंगसिद्ध ८ (नर) पुरुषलिंगसिद्ध ९ (नपुसा) नपुंसकलिंगसिद्ध १० (पत्तेअ) प्रत्येकबुद्धसिद्ध ११ (सयंबुद्धा) स्वयंबुद्धसिद्ध १२ (बुद्धबोहि) बुद्धबोधितसिद्ध १३ (इकणिकाय) एकसिद्ध १४ और अनेकसिद्ध १५ यह सिद्धके पन्नरह भेद संक्षेपसें कहा फिर विशेष दिखलाते है ॥५५॥

जिणसिद्धाअरिहंता अजिणसिद्धायपुंडरियपमुहा । गणहारितित्थसिद्धा अतित्थसिद्धायमरुदेवी ॥५६॥

(जिणसिद्धा) तीर्थंकर होके मोक्ष गये यह तीर्थंकरसिद्ध (अरिहंता) रिषभादि अरिहंतसिद्ध १ (अजिणसिद्धाय पुंडरियपमुहा) अजिनसिद्ध सामान्य केवली पुंडरिक गणधर आदि २ (गणहारितित्थसिद्धा) गणधर गौतमादि तीर्थ सिद्ध ३ (अतित्थसिद्धायमरुदेवी) अतीर्थसिद्ध यह मरुदेवी ४ ॥ ५६ ॥

गिहिलिंगसिद्धभरहो वलकलचीरीयअन्नलिंगम्मि । साहुसलिंगसिद्धा थीसिद्धाचंदणापमुहा ॥ ५७ ॥

(गिहिलिंगसिद्ध) गृहीलिंग सिद्ध हुये (भरहो) यह भरतादि ५ (वलकलचीरीय) वल्कलचीरीयादि तापसके वेषमें जो सिद्ध हुये (अन्नलिंगम्मि) यह अन्यलिंग सिद्ध जानना ६ (साहुसलिंगसिद्धा) साधुके वेषमें जो सिद्ध हुए यह स्वलिंगसिद्ध ७ (थीसिद्धाचंदणापमुहा) स्त्रीके लिंगमें जो सिद्ध हुए यह चंदनबालादि ८ ॥ ५७ ॥

पुसिद्धागोयमाई गंगेयाईनपुसयासिद्धा । पत्तेयसयवुद्धा भणियाकरकडुकविलाई ॥ ५८ ॥

(पुंसिद्धागोयमाइ) पुरुष लिंगसिद्ध गौतमादि० (गांगेयाईनपुंसयासिद्धा) गंगेयादि जो सिद्ध हुए वह नपुंसकलिंग सिद्ध १० (पत्तेयसयंवुद्धा) प्रत्येकबुद्धसिद्ध और स्वयंबुद्ध अनुक्रमसें (भणिया) कहा (करकंडु) करकंडु राजा ११ (कपिलाई) और कपिलआदि कहे १२ ॥ ५८ ॥

तहवुद्धयोहिगुरुवोहिया इगसमयएगसिद्धाय । एगसमएविअणेगा सिद्धातेणेगसिद्धाय ॥ ५९ ॥

(तह) फिर तैसें ही (वुद्धयोहिगुरुयोहिया) बुद्धबोधित सिद्ध हुए वह गुरुके उपदेशसें १३ (इगसमयएगसिद्धाय) एक समयमें एकही सिद्ध होए एक सिद्ध महावीर आदि १४ (एगसमएविअणेगा) (सिद्धातेणेगसिद्धाय) और एक समयमें अनेक सिद्ध होय वह रिषभादि अनेक सिद्ध कहिये १५ ॥ ५९ ॥

जइआइहोइपुच्छा जिणाणमग्गंमिउत्तरतइया । इक्कस्सनिग्गोयस्स अणंतभागोयसिद्धिगओ ॥ ६० ॥

(जइआइहोइपुच्छा) जिस जिस समयपर भगवान्को पुछनेमें आवे (जिणाणमग्गंमिउत्तरंतइया) उस उस समय पर जिनेस्वर महाराजके मार्गमें यह ही उत्तर मिलता है कि (इक्कस्सनिग्गोयस्सअणंतभागोय) एक निगोदके अनंतमें भागे (सिद्धिगओ) सिद्धोमें गये हे ॥ ६० ॥

इति नवतत्त्वप्रकरण समाप्तम् ।

॥ अथ श्रीदडकप्रकरण मूलसहित हिन्दी अनुवादसहित प्रारम्यते ॥

मेउचउवीसजिणे तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ । दडगपयहिंतेच्चिय थोसामिसुणेहभोभवा ॥ १ ॥

(नमिउंचउवीसजिणे) चोवीश जिनेश्वरोंको नमस्कारकरके (तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ) उणुंके सूत्रोंमें कहा लेशमात्र कहनेसे (दडगपयहिंतेच्चिय) दंडगके पदोंकरके उन भगवानोंकी (थोसामिसुणेहभोभवा) मैं स्तवना हुं सो हेभव्यप्राणिजीवो तुम सुनो ॥ १ ॥

इआअसुराई पुढवाईबेइंदियादओचेव । गब्भयतिरियमणुस्सा वंतरजोइसियवेमाणी ॥ २ ॥

(नेरइआ) सात नरकको १ दंडक (असुराई) असुरादि भुवनपतिका १० दश दंडक (पुढवाई) पृथ्वीकायादि डक (बेइंदियादओचेव) दो इंद्रियादि विकलेंद्रिके १ दंडक (गब्भयतिरिय) गर्भजतिर्यंचका २०) गर्भज मनुष्यका २१ मांदंडक (वंतर) व्यंतरका २२ मांदंडक (जोइसिय) ज्योतिषि देवोंका २१ ।) और वैमानिक देवोंका २४ मांदंडक ऐसे सब मिलकर चोवीश दंडक समज लेना ॥ २ ॥

मा सरीरमोगाहणायसघयणा । सन्नासठाणकसाया लेसइंदीयदुसमघाया ॥ ३ ॥

(संक्षिप्तयरीत्इमा) यह समग्रहणीनीगाथा संक्षेप मात्र कहे है (सरीर) शरीरद्वार १ (ओगाहणाय) अवगाहना द्वार २ (संघयणा) संघयणद्वार ३ (सन्ना) संज्ञाद्वार ४ (संठाण) संस्थानद्वार ५ (कसाया) कषायद्वार ६ (लेस) लेश्याद्वार ७ (इंदिय) इन्द्रियद्वार ८ (दुसमुग्घाया) दो प्रकारे समुद्घातद्वार ९ ॥ ३ ॥

दिठीदंसणनाणे जोगुवओगोववायचवणठिई । पज्जत्तिकिमाहारे सन्निगइआगईवेए ॥ ४ ॥

(दिठी) दृष्टिद्वार १० (दंसण) दर्शनद्वार ११ (नाणे) ज्ञानद्वार अज्ञानद्वार १२ (जोगु) योगद्वार १३ (उवओगो) उपयोगद्वार १४ (उवाय) उपपातद्वार १५ (चवण) च्यवनद्वार १६ (ठिइ) स्थितिद्वार १७ (पज्जत्ति) पर्याप्तिद्वार १८ (किमाहारे) किमाहारद्वार १९ (सन्नि) संज्ञाद्वार २० (गई) गतिद्वार २१ (आगई) आगतिद्वार २२ (वेद) वेदद्वार २३ षपुन अल्पबहुत्यद्वार २४ इति चौवीसद्वार आणना ॥ ४ ॥

चउगब्भतिरियवाउसु मणुआणपंचसेसतिसरीरा । थावरचउगेदुहओ अंगुलअसंखभागतणू ॥ ५ ॥

(चउगब्भतिरियवाउसु) गर्भजतिर्यंच और वायुकायके औदारिक वैक्रिय तेजस और कार्मण यह चार शरीर होते है (मणुआणपंच) ओर मनुष्योंके पांचोही शरीर होते है (सेसतिसरीरा) बाकीके पचवीश दंडकोंके विषे तिन तिन शरीर है १३ देवता १ नारकी यह १४ दंडकमें वैक्रिय १ तेजस २ कार्मण ३ यह ३ शरीर होवे थावर ४ विक लेंद्री ३ एवं ७ दंडकमें औदारिक १ तेजस २ कार्मण ३ यह ३ शरीर होवे इति १ शरीरद्वार ॥ ॥ ५ ॥ (थावरचउ

गेसुहमो) वनस्पतिवरजके चार स्थावरको जघन्य और उत्कृष्ट ऐसे दो प्रकारे (अगुलअसंखभागतणु) अंगुलके असंख्यातमें भागे शरीरकी अवगाहना होति है ॥ ५ ॥

सव्वेसिंपिजहन्ना साहावियअगुलस्ससखसो । उक्कोसपणसयधणू नेरइयासत्तहत्थसुरा ॥ ६ ॥

(सवेसिंपिजहन्ना) सब दण्डकोंके विषे जघन्यसें (साहावियअगुलस्सअसंखंसो) स्वाभाविक अंगुलके असंख्यातमे भागे शरीर होवे है (उक्कोसपणसयधणू) और उत्कृष्टी अवगाहना पांचसें धनुष्यकी (नेरइया) नारकीके जीवोंकी है (सत्तहत्थसुरा) और देवोंका उत्कृष्टा शरीरमान सात हाथका होता है ॥ ६ ॥

गब्भयतिरिसहस्सजोयण वणस्सईअहियजोयणसहस्स । नरतेइदितिगाऊ बेइंदियजोयणेबार ॥७॥

(गब्भयतिरिसहस्सजोयण) गर्भजतिर्यचका शरीर एक हजार जोजनका है (वणस्सईअहियजोयणसहस्सं) और वनस्पतिकायका शरीर एक हजार जोजनसें कुछ अधिक होते है (नरतेइदितिगाऊ) मनुष्य और तेइन्द्रिका शरीर तिन गाउका होता है (बेइदियजोयणेबार) और बेइन्द्रिका शरीर बारह जोजनका है ॥ ७ ॥

जोयणमेगचउरिंदि देहमुच्चत्तणसुयभणिय । वेउव्वियदेहपुण अगुलसखसमारभे ॥ ८ ॥

(जोयणमेगचउरिंदि) एक जोजन चौरेन्द्रिका (देहमुच्चत्तणंसुयभणियं) शरीरका उंचपणा सूत्रमे कहा है (वेउवि

यदेहगुण) फेर वैक्रिय शरीरका अनुमान कहते है (अंगुलसंखसमारंभे) औदारिक शरीरवालोंके तथा वैक्रिय शरीर-वालोंके उत्तर वैक्रिय आरंभतीवेर अंगुलके संख्यातमे भागे होता है ॥ ८ ॥

देवनरअहियलख्ख तिरियाणंनवयजोयणसयाइ । दुगुणंतुनारयाण भणियवेउव्वियसरीर ॥ ९ ॥

(देवनरअहियलख्ख) देवताका वैक्रियशरीर एक लाखजोजनका होता है और मनुष्यका वैक्रियशरीर एक लाख जोजनसें कुछ अधिक होता है (तिरियाणंनवयजोयणसयाइ) और तिर्यंचका वैक्रिय शरीर नवसें जोजनका (दुगुणंतुनारयाण) और नारक्योका शरीर मूलसें दूना होता है (भणियंवेउव्वियसरीरं) इसप्रकारे वैक्रिय शरीरका प्रमाण कहा ॥ ९ ॥

अतमुहुत्तनिरये मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु । देवेसुअद्धमासो उक्कोसविउव्वणाकालो ॥ १० ॥

(अतमुहुत्तनिरये) नारकयोंके उत्तरवैक्रियशरीरका काल अंतर्मुहूर्तका होवे है फेर दुसरा करणा पडता है (मुहु त्तचत्तारितिरियमणुएसु) मनुष्य और तिर्यंचके वैक्रिय शरीरका काल मान चार मुहूर्तका है (देवेसुअद्धमासो) और देवोके उत्तरवैक्रियशरीरका काल एकपक्षदिनका (उक्कोसविउव्वणाकालो) इस प्रकारसें वैक्रिय शरीरका उत्कृष्टका उमान कहा है ॥ इति शरीर अवगाहना द्वार २ ॥ १० ॥

थावरसुरनेरइया असंघयणायविगलछेवट्ठा । संघयणछगगब्भय नरतिरिएसुमुणेयव्वं ॥ ११ ॥

(थावरसुरनेरइया) पांच स्थावर तेरे देवता और एक नारक ऐसे सब मिळके उगणीसदंडकोंके विषे (असंघयणाय) संघयण नहीं है (विगळछेवट्ठा) और तीन विकलेंद्रिको एक छेवठा संघयण है (संघयणछक्कंगब्भय) छे संघयण गर्भजको (नरतिरिएसुविमुणेयव्वं) मनुष्य और तिर्यंचको जान लेना ॥ इति चोविस दंडके संघयण द्वार ३ ॥ ११ ॥

सव्वेसिंचउदहवासन्ना, सव्वेसुरायचउरसा । नरतिरियछसठाणा हुंडाविगलिंदिनेरइया ॥ १२ ॥

(सव्वेसिंचउदहवा) सब दंडकोंके विषे चार तथा दश (सन्ना) संज्ञा होती है ॥ इति चोवीश दंडकके चतुर्थ संज्ञाद्वार (सव्वेसुरायचउरसा) सब देवोंका समचोरस संस्थान है (नरतिरियछसठाणा) मनुष्य और तिर्यंचको छही संस्थान होवे है (हुंडाविगलिंदिनेरइया) विकलेंद्रि और नारकीको एक हुंडक ही संस्थान होता है ॥ १२ ॥

नाणाविहधयसूई बुब्बुयवणवाउतेउअपकाया । पुढवीमसूरचंदा—कारासंठाणओभणिया ॥ १३ ॥

(नाणाविह) नाना प्रकारका (धय) ध्वजाके आकारे संस्थान (सूइ) सुईके आकारे (बुब्बुय) जलके बुद्बुदाके आकारे (वणवाउतेउअपकाया) अनुक्रमसें वनस्पतिकाय वाउकाय तेउकाय और अपकायका है (पुढवीमसूरचंदा कारा) और पृथ्वीकायका मसूरकीदाळ अथवा चन्द्रके आकारे (संठाणओभणिया) इस प्रकारसें चोवीस दंडकके पंचम संस्थानद्वार कहा ॥ १३ ॥

सव्वेविचउकसाया लेसछक्कंगब्भतिरियमणुएसु । नारयतेउवाऊ विगलावेमाणियतिलेसा ॥ १४ ॥

(सवेविचउकसाया) सर्व दंडकोके विषे चारोही कषाय होते है इति चोवीस दंडकके छठा कषायद्वार ॥ (छेसछकं गब्भतिरियमणुएसु) छेहीलेसा गर्भज तिर्यंच और मनुष्यको होते है (नारयतेऊवाऊ) और नारक तेउकाय वाउकाय (विगला) और तिनविकलेंद्रि एसे छे दंडकोके विषे प्रथमकी तीन लेस्या होता है (वेमाणियतिलेसा) और वैमाणिक देवोंको अन्तकी तीन लेस्या होति है ॥ १४ ॥

जोइसियतेउलेसा सेसासव्वेविहुतिचउलेसा । इन्दियदारसुगम मणुआणसत्तसमुग्घाया ॥ १५ ॥

(जोइसियतेउलेसा) और ज्योतिषीको एक तेजोलेस्याही होति है (सेसासव्वेविहुतिचउलेसा) और शेष सब दंडकोके विषे कृष्णादि चार लेस्या है इति चोवीस दंडके लेस्याद्वार ७ (इन्दियदारंसुगमं) और इन्द्रियद्वार तो सुगम है ८ ॥ (मणुआणसत्तसमुग्घाया) मनुष्यको सातोही समुद्घात होति है ॥ १५ ॥

वेयणकसायमरणे वेउव्वियतेयएयमाहारे । केवलियसमुग्घाया सत्तइमेहुतिसन्नीण ॥ १६ ॥

(वेयण) वेदना (कसाय) कषाय (मरणे) और मरण (वेउव्विय) वैक्रिय (तेयएय) तेजस और (आहारे) आहारक (केवलियसमुग्घाया) केवली समुद्घात (सत्तइमेहुतिसन्नीण) इस प्रकारसें सातोही समुद्घात संज्ञि-पंचेन्द्री मनुष्यको होता है ॥ १६ ॥

एगिंदियाणकेवलि तेउआहारगविणाउचचारि । तेवेउव्वियवज्जा विगलासन्नीणतेचेव ॥ १७ ॥

(एगिंदियाणकेवलि) एकेन्द्रीको केवली (तेउआहारगविणाउचत्तारि) तथा तेजस और आहारक इस तीनुको वरजके वाकीका चार समुद्घात एकेन्द्रिको होता है (सेसेउविययज्जा) यह तिन और वैक्रिय यह चार वरजके (विगला सन्नीणवे) तीन समुद्घात विकलेन्द्रि और असन्नीको होता है (चेव) निश्चे करके ॥ १७ ॥

पणगब्भतिरिसुरेसु नारयवाऊसुचउरतियसेसे । विगलदुदिट्ठीथावर मिच्छत्तिसेसातियदिट्ठी ॥ १८ ॥

(पणगब्भतिरिसुरेसु) परन्तु गर्भज तिर्यंच और तेरह देवोंको प्रथमका पांच समुद्घात होता है (नारयवाऊसु) नारक और वाउकायके विषे प्रथमका (चउर) चार समुद्घात है (तियसेसे) और शेषके सात दंडकोंके विषे प्रथमका तीन समुद्घात होता है ॥ इति चोवीस दंडके नवमा समुद्घात द्वार ॥ (विगलदुदिट्ठी) विकलेन्द्रिको दो दृष्टि होती है एक सम्यक् और दुसरी मिथ्यादृष्टि ऐसे दो (थावर) पांच स्थावरको (मिच्छत्ति) एक मिथ्यादृष्टिही होति है (सेसतियदिट्ठी) शेष रहे हुये जो सोलह दंडक उसके विषे सम्यक् मिश्र और मिथ्यात्व यह तीन दृष्टि होति है ॥१८॥ इति चौविश दंडकके दशमा दृष्टि द्वार ॥

थावरबितिसुअचक्खु चउरिंदिसुतद्दुगसुपभणिय । मणुआचउदसणिणो सेसेसुतिगतिगमणिय॥१९॥

(थावर) पांच स्थावरको (बितिसुअचक्खु) तथा बेइन्द्रि और तेइन्द्रिको एक अचक्खुदर्शनही होता है (चउरिंदिसु) चउरिंद्रिको (तद्दुगसुपभणियं) चक्षु तथा अचक्षु ऐसे दो दर्शन सूत्रमे कहा है (मणुआचउदसणिणो) और

मनुष्यके विषे तो चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन अवधिदर्शन और केवलदर्शन ऐसे चारोही होते है (सेसेसुतिगतिगंभाणयं) बाकीके सब दंडकोके विषे केवल वर्जके तीनतीन दर्शन कहा है ॥ इति चोवीश दंडकके ११–१२–दर्शनद्वार ॥ १९ ॥

अन्नाणनाणतियतिय सुरतिरिनिरयथिरेअनाणदुग। नाणा न्नाणदुविगले मणुएपणनाणतिअनाणा॥२०॥

(अन्नाणनाणतियतिय) तीन अज्ञान और तीन ज्ञान (सुरतिरिनिरए) देवताको तथा तिर्यंच और नारकके होते है (थिरेअनाणदुग) आर स्थावरको मति तथा श्रुत ऐसे दो अज्ञान होते है (नाणान्नाणदुविगले) दो ज्ञान तथा दो अज्ञान विकलेंद्रिको होते है (मणुएपणनाणतिअनाणा) और मनुष्यको तो पांच ज्ञान और तीन अज्ञान एसे आठोही होते है ॥ इति चोवीश दंडकमें ज्ञान अज्ञानद्वार १३ ॥ २० ॥

इक्कारससुरनिरए तिरिएसुतेरपनरमणुएसु । विगलेचउपणवाए जोगतियथावरेहोई ॥ २१ ॥

(इक्कारससुरनिरए) देवता और नारकको इग्यारे योग होते है (तिरिएसुतेर) तिर्यंचको तेरह (पनरमणुएसु) और मनुष्यको पन्नरेही योग होते है (विगलेचउ) विकलेंद्रिको चार (पणवाए) वाउकायको पांच (जोगतियथावरे होइ) और स्थावरको तीन योग होते है ॥ इति चोवीश दंडकके योगद्वार १४ ॥ २१ ॥

उवओगामणुएसु बारसनवनिरयतिरियदेवेसु । विगलदुगेपणछक्कं चउरिंदिसुथावरेतियग ॥ २२ ॥

(उपओगामणुएसु) मनुष्यके विषे उपयोग (बारस) बारह होते है (नवनिरयतिरियदेवेसु) नारक तिर्यंच और

देवोंको नव उपयोग होते है (विगलदुगेपण) दो विकलेंद्रिको पांच (छक्क) छ (चउरिंदिसु) चौरेन्द्रिको (थावरेतियगं) और स्थावरको तीन उपयोग होते है ॥ इति चोवीश दंडकमें उपयोगद्वार १५ ॥ २२ ॥

संखमसंखासमए गब्भयतिरिविगलनारयसुराय । मणुआनियमासंखा वणऽणताथावरअसंखा ॥२३॥

(संखमसंखासमए) एक समयके विषे संख्याता और असंख्याता (गब्भयतिरि) गर्भजतिर्यंच (विगलनारयसुराय) विकलेंद्रि नारक और देवता उत्पन्न होते है (मणुआनियमासंखा) मनुष्योंनिश्चयकरके संख्याता उत्पन्न होते है (वणऽणंता) वनस्पतिकाय अनन्ता (थावरअसंखा) और स्थावर असंख्याता उत्पन्न होते है ॥ २३ ॥

असन्निनरअसंखा जहउववाओतहेवचवणेवि । बावीससगतिदसवास सहस्सउक्किट्ठपुढवाई ॥ २४ ॥

(असन्निनरअसंखा) असन्नी मनुष्यो असंख्याता उत्पन्न होते है (जहउववाओ) जैसेही उत्पन्न होते है (तहेवचवणेवि) तैसेही चवते है ॥ इति चोवीश दंडकमें उपपातद्वार तथा चवणद्वार (बावीससगतिदसवाससहस्स) बावीस हजार सात हजार तिन हजार और दस हजार वर्षको आयु (उक्किट्ठपुढवाई) उत्कृष्टो अनुक्रमे पृथ्वीकायादि इस लिये पृथ्वीकाय अप्काय वाउकाय और वनस्पतिकायका जान लेना ॥ २४ ॥

तिदिणग्गितिपल्लाऊ नरतिरिसुरनिरयसागरतित्तीसा । वंतरपल्लंजोइस वरिसलक्खाहिअपलिअं॥२५॥

(तिदिणग्गि) तिन अहोरात्रिका आयु अग्निकायका (तिपल्लाऊ) तीन पल्योपमका आयु (नरतिरि) मनुष्य और

तिर्यंचका (सुरनिरयसागरतितीसा) देवता और नारकका उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरोपमका होता है (पतरपल्लं) व्यंतरका आयु एक पल्योपमका (जोइस) और ज्योतिषी देवोका आयु (वरिसलक्खसाहिअंपलिअं) एकलाख वर्ष अधिक एक पल्योपमका होता है ॥ २५ ॥

असुराणअहियअयर देसूणदुपल्लयनवनिकाए । यारसवासुणपणदिण छम्मासउक्किट्ठविगलाऊ ॥२६॥

(असुराणअहियअयरं) असुरकुमारनिकायका आयु एक सागरोपमसें कुछ अधिक होता है (देसूणदुपल्लयंनवनिकाए) शेषनवनिकायका आयु देसेवणा दो पल्योपमका होता है (बारसवासुणपणदिण) बेइंद्रीका बारह वर्ष और तेइंद्रीका गुण पचास दिन (छम्मासउक्किट्ठविगलाऊ) चउरिंद्रीका छ मासका उत्कृष्ट आयु अनुक्रमसें समज लेना ॥ २६ ॥

पुढवाइदसपयाण अंतमुहुत्तजहन्नआउठिई । दससहस्सवरिसठिइआ भवणाहिवनिरयवंतरिया ॥२७॥

(पुढवाइदसपयाणं) पृथ्वीकायादि दशपदकी पांच स्थावर तीन विकलेंद्रिय पंचेंद्रितिर्यंच और मनुष्यका (अंतमुहुत्तजहन्नआउठिई) जघन्यसें आयुकी स्थिति अंतर्मूहुर्त्तकी कही है (दससहसवरिसठिइआ) दश हजार वर्षकी आयु स्थिति जघन्यसें (भवणाहियनिरयवंतरिया) दश भुवनपति नारक और व्यंतरीककी कही है ॥ २७ ॥

वेमाणियजोइसिया पल्लतयट्ठंसआउआहुंति । सुरनरतिरिनिरएसु छपज्जत्तीथावरेचउग ॥ २८ ॥

(वेमाणियजोइसिया) वैमानिक और ज्योतिषीका आयु जघन्यसें (पल्लतयट्ठंसआउआहुंति) एक पल्योपमके आठमे

भागे होता है १८ ॥ इति चोवीश दंडके उत्कृष्ट और जघन्यसें स्थितिद्वार कहा ॥ (सुरनरतिरिनिरएसु) देवता मनुष्य तिर्यंच और नारकके विषे (छपज्जत्ती) छही पर्याप्ति होति है (थावरेचउगं) और पांच स्थावरके विषे प्रथमकी च्यार पर्याप्ति है ॥२८॥

विगलेपचपज्जत्ती छद्दिसिआहारहोइसव्वेसिं । पणगाइपए भयणा अहसन्नितियभणिस्सामि ॥ २९ ॥

(विगलेपचपज्जत्ती) तीनो विकलेंद्रिके विषे प्रथमकी पांच पर्याप्ति होति है ॥१९॥ इति चोवीश दंडकमें पर्याप्तिद्वार ॥ (छद्दिसिआहारहोइसव्वेसिं) सब जीवोंके आश्रये छही दिशीका आहार जान लेना (पणगाइपएभयणा) इतना विशेषकि पृथ्वी कायादि पांचोही स्थावर पदके विषे भजना है इस लिए छएदिशीका आहार होवे भी सही और तीन च्यार पांच दिशीका भी होवे २० ॥ इति चोवीश दंडके छदिशी आहारद्वार ॥ (अहसन्नितियभणिस्सामि) अब तीन संज्ञा द्वार कहता हुं ॥ २९ ॥

चउविहसुरतिरिएसु निरएसु अ दीहकालिगीसन्ना । विगलेहेउवएसा सन्नारहियाथिरासव्वे ॥ ३० ॥

(चउविहसुरतिरिएसु) चार प्रकारके देवोंके विषे तथा तिर्यंच (निरएसुअदीहकालिगीसन्ना) और नारकके विषे दीर्घ कालकी संज्ञा होति है (विगलेहेउवएसा) और विकलेंद्रिके विषे हितोपदेशकीसंज्ञा होति है (सन्नारहियाथिरासव्वे) और स्थावरो सबही संज्ञा रहित होते है ॥ ३० ॥

मणुआणदीहकालिय दिट्ठीवाओवएसिआकेवि । पज्जपणतिरिमणुअच्चिय चउविहदेवेसुगच्छति ॥३१॥

(मणुआणदीहकालिय) मनुष्यको दीर्घकालकी सज्ञा होति है (दिठीयाओवएसिआकेवि) कितनेक आचार्य मनुष्यको दृष्टियादोपदेशकी २ संज्ञा भी कहते है ॥ इति चोवीशदंडकमें तीन प्रकारकी संज्ञाद्वार ॥ (पज्जपणतिरिमणुअच्चिय) पर्याप्ता पचेन्द्रितिर्यंच और मनुष्य निश्चय करके (चउविहदेवेसुगच्छति) चार प्रकारके देवोंके विषे आते है ३१

सखाउपज्जपणिंदि तिरियनरेसुतहेवपज्जत्ते । भूदगपत्तेयवणे एएसुच्चियसुरागमण ॥ ३२ ॥

(संखाउपज्जपणिंदि) संख्याते आयुवाले पर्याप्तापचेन्द्री (तिरियनरेसुतहेयपज्जत्ते) तिर्यंच और मनुष्यके विषे तेसेही पर्याप्ता (भूदगपत्तेयवणे) पृथ्वीकाय अपकाय और प्रत्येक वनस्पतिकाय (एएसुच्चिय) इस पांचोदंडकके विषे निश्चय करके (सुरागमण) देवता उत्पन्न होते है ॥ ३२ ॥

पज्जत्तसखगब्भय तिरियनरानिरयसत्तगेजति । निरयउवट्टाएएसु उववज्जतिनसेसेसु ॥ ३३ ॥

(पज्जत्तसंखगब्भय) संख्याता वर्षके आयुवाले पर्याप्ते गर्भज (तिरियनरा) तिर्यंच और मनुष्य (निरयसत्तगेजंति) यह दोनोही सातोही नरकके विषे आते है (निरयउवट्टा) नरकसे निकले हुये जीवो (एएसु) यह दो दंडकमे उवयज्जंति उपजे है (नसेसेसु) शेष दंडकोके विष उत्पन्न नही होते है ॥ ३३ ॥

पुढवीआउवणस्सइ मज्झेनारयविवज्जियाजीवा । सव्वेउववज्जति नियनियकम्माणुमाणेणं ॥ ३४ ॥

(पुढवीआउवणस्सइ) पृथ्वीकाय अप्काय और वनस्पतिकायके (मध्ये) विषे (नारयविवज्जियाजीया) नारकके जीवोंको वर्जके (सव्वेउववज्जति) और सर्व जीवो उत्पन्न होते है (नियनियकम्माणुमाणेण) अपने अपने कर्मानुसारे ॥३४॥

पुढवाइदसपएसु, पुढवीआउवणस्सईजंति । पुढवाइदसपएहिय, तेउवाउसुउववाओ ॥ ३५ ॥

(पुढवाइदसपएसु) पृथ्वीकायादि दश पदके विषे (पुढवीआउवणस्सईजंति) पृथ्वीकाय अप्पकाय और वनस्पतिकायके जीवो सब होते है (पुढवाइदसपएहिय) और पृथ्वी कायादि दश पदमेंसे निकले हुये जीवों (तेउवाउसुउववाओ) तेउकाय और वाउकायके विषे उत्पन्न होते है ॥ ३५ ॥

तेउवाउगमण, पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे । पुढवाइठाणदसग, विगलाइतियतहिंजंति ॥ ३६ ॥

(तेउवाउगमणं) तेउकाय और वाउकायकाजाना (पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे) पृथ्वीकायादि नवपदके विषे होता है (पुढवाइठाणदसग) पृथ्वीकायादि दश स्थानकके जीवों (विगलाइतियतहिंजंति) तीन विकलेन्द्रिमें उत्पन्न होवे तैसे जाये है ॥३६॥

गमणागमणंगब्भय, तिरिआणसयलजीवठाणेसु । सव्वत्थजंतिमणुआ, तेउवाउहिंनोजंति ॥ ३७ ॥

(गमणागमणगब्भयतिरिआणसयलजीवठाणेसु) गर्भजतिर्यंचका जाना आना सब दंडकोके विषे होता है (सव्वत्थ

अतिमणुभा) और मनुष्योंकाभी जाना सब दंडकोंके विषे होता है (तेउवाऊर्दिनोजंति) परन्तु तेउकाय और वाउका यसें नही आते ॥ ३७ ॥

वेयतियतिरिनरेसु, इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु । थिरविगलनारएसु, नपुसवेओहवइएगो ॥ ३८ ॥

(वेयतियतिरिनरेसु) तीन वेद तिर्यंच और मनुष्यको होते है (इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु) और चार प्रकारके देवोंके विषे स्त्री वेद तथा पुरुष वेद होता है (थिरविगलनारएसु) और पांच स्थावर विकलेन्द्रि और नारकके विषे (नपुसवेओहवइएगो) एक नपुंसक वेदही होता है ॥ ३८ ॥

पज्जमणुयायरग्गी, वेमाणियभवणनिरयवंतरिया । जोइसचउपणतिरिया, वेइंदितेइंदिभूआउ ॥३९॥

(पज्जमणुयायरग्गी) पर्याप्ता मनुष्य और बादर अग्निकाय (वेमाणियभवणनिरयवंतरिया) वैमानिक भुवनपति नारक और व्यंतर (जोइसचउपणतिरिया) ज्योतिषि चौरिन्द्रि और पंचेन्द्रि तिर्यंच (वेइंदितेइंदिभूआउ) तथा दोइन्द्रि तेइन्द्रि पृथ्वीकाय और अप्पकाय ॥ ३९ ॥

वाउवणस्सईचिय, अहियाअहियाकमेणमेहुति । सवेविइमेभावा, जिणाअणंतसोपत्ता ॥ ४० ॥

(वाऊवणस्सईचिय) वाउकाय और वनस्पतिकाय यह सब निश्चय करके (अहियाअहियाकमेणमेहुंति) अनुक्रमे

एक एकसे अधिक होते है (सर्वेविइमेभावा) यह सबही भी भाव (जिणामपर्णतसोपत्ता) हे जिनेश्वर देव मैंने अनती वेर पाया है ॥ ४० ॥

सपइतुह्मभत्तस्स, दंडगपयभमणभग्गहियस्स । दंडतियविरइसुलहं, लहुममदिंतुमुक्खपयं ॥ ४१ ॥

(संपइतुह्मभत्तस्सदंडगपयभमणभग्गहियस्स) अब चौवीस दंडकोके स्थानकके विषे भमनेसे (निवृत्त) भागा हुवा है मन जिसका ऐसा तुमारा भक्त एसा मुझको (दंडतियविरइसुलहं) मन वचन और काया यह तीनदंडका विरामसे सुलभ एसो (लहुममदिंतुमुक्खपयं) मोक्ष पद मेरेको जल्दी देवो ॥ ४१ ॥

सिरिजिणहंससुणीसर, रज्जेसिरिधवलचंदसीसेण । गजसारेणलिहिया, एसाविन्नत्तीअप्पहिया ॥४२॥

(सिरिजिणहंसमुणीसर) श्री जिनहंसमुनीश्वरके (रज्जेसिरिधवलचंदसीसेण) राज्यके समय श्री धवलचंद्रउपाध्यायके शिष्य (गजसारेणलिहिया) गजसार मुनिने लिखा है (एसाविन्नत्तीअप्पहिया) यह विज्ञप्ति अपनी आत्माके हितके अर्थे ॥ ४२ ॥

॥ इति हिन्दी अनुवादसहित दंडक प्रकरणं समाप्तम् ॥

वन्दे जिनवरम् ।

अथ लघु-संघयणि-प्रकरणम् ।

गाहा ।

नमिय जिण सव्वन्नु, जगपुज्ज जगगुरु महावीर । जंबुद्दीवपयत्थे, वुच्छंसुत्तासपरहेउ ॥ १ ॥

अर्थ—(जगपुज्ज) तीन जगत् के पुज्य (जगगुरु) तीन जगत्के गुरु, ऐसे (सव्वन्न) सर्वज्ञ (जिणं) श्री जिनेश्वर (महावीर) महावीर स्वामीको (नमिय) नमस्कार करके, (जंबुद्दीव) जंबुद्वीपके अन्दर रहे हुए शास्वते, (पयत्थे) पदार्थ उनको (सुत्ता) सुत्रसें जाणकर (सपर हेउं) स्वपर हितार्थ (वुच्छ) कहुंगा ॥ १ ॥

भावार्थ—तीन जगत्के पुज्य और गुरु ऐसे सर्वज्ञ श्री महावीरस्वामिको नमस्कारकर जंबुद्वीपमें रहे शास्वते पदार्थ उनको स्वपर हितार्थ कहुंगा ॥ १ ॥

खंडा जोयणवासा, पव्वय कुडाय तित्थ सेढीओ। विजय द्दह सलिलाओ, पिंडेसिं होइ संघयणी॥२॥

अर्थ—प्रथम भरतक्षेत्रवत् इस जंबुद्वीपमें कितने (खंडा) संख्या है? द्वितीय (जोयण) योजनका प्रमाण, त्रितीय भरतादिक (वास) वासक्षेत्र कितने है? चोथा वैताढ्यादिक (पव्वय) पर्वत किते है? पांचमा उन पर्वतोंपर (कुडाय) कूट (सिखर) कितने है? छठ्ठा मागधादिक (तित्थ) तीर्थ कितने है? सातमा, वैताढ्यादिक पर्वतोपरि रहीहुई, विद्या धरो व आभियोगिक देवोंकी (सेढीओ) श्रेणियें कितनी है? आठमें कच्छादिक (विजय) विजय कितना है? नवमें पद्मद्रहादि (द्दह) द्रह कितने है? दसमें गङ्गासिंध्वादि (सलिलाओ) नदीयें कितनी है? एवम् इसी दशो द्वारोंको (पिंडेसिं) इकठ्ठाथाने समुदायके विवरणकरके यह (संघयणी) संग्रहिणी नामका प्रकरण (होइ) होता है ॥ २ ॥

भावार्थ—पहेला द्वारमें भरत क्षेत्रके मुवाफिक जंबुद्वीपमें कितने खंड है? दुसरेमें योजनका प्रमाण तीसरेमें वास क्षेत्र चोथेमें पर्वत पाचमें उन पर्वतोपर सिखर छठेमें तीर्थ सातमें श्रेणियोंकी संख्या आठमें विजय नवमे द्रह, दशमें नदियें इनही दशोद्वारोकरके यह संघयणी प्रकरण होता है ॥ २ ॥

णउअ सय खंडाण, भरह पमाणेण भाइए लक्खे। अहवा णउयसयगुण, भरह पमाणं हवइ लक्खं ॥ ३ ॥

अर्थ—(लक्खे) एकलाख योजनका जंबुद्वीप उसको (भरहपमाणेण) भरतक्षेत्रके प्रमाणसें, "याने पांचसो छवीस योजन छकलासे" (भाइये) भागाकार करें तो (णउआ सयं खंडाणी) भरतक्षेत्रके मुवाफिक "एकसो और निवे"

संख्या होवे है, (अहवा) या (णवयसय) एकसो और नवे क्षेत्रीको (भरहपमाणेणं) भरतक्षेत्रके प्रमाणसे (गुणं) गुणाकार करें तो (लक्खं) एक लाख योजनका यह जंबुद्वीप (हवइ) होता है ॥ २ ॥

भावार्थ—एक लाख योजनके जंबुद्वीपको, पांचसो छवीस योजन छ कलासें भागें तो भरतक्षेत्रवत् एकसो नवे क्षेत्र (भाग) इस जंबुद्वीपमें होते है, इसी एकसो नवेको पांचसो छवीस योजन छकलासे गुणाकार करें तो एक लाखका क्षेत्रफल होता है ॥ ३ ॥

अहविगखंडे भरहे, दो हिमवते अ हेमवइ चउरो। अट्ठमहा हिमवंति, सोलसखंडाइ हरिवासे ॥ ४ ॥

अर्थ—(अहव) अर्थात् (इग खंडे भरहे) एकखंडया भरतक्षेत्रका (दो हिमवंते) दो संख्या हिमवंत पर्वतके (अ) पुनः (चउरो) चार संख्या (हेमवइ) हमवंत करके युगलियांके क्षेत्रका (अट्ठ) आठ संख्या (महाहिमवंते) महा हिमवंत पर्वतके (सोलसखंडाइं) सोलह संख्या (हरिवासे) हरिवर्ष करके युगलियांके क्षेत्रका ॥ ४ ॥

भावार्थ—एक संख्या भाग भरतक्षेत्र दो संख्या भाग चुल्लहिमवत चार संख्या भाग हेमवंत, आठ संख्या भाग महाहिमवंत सोले संख्या भाग हरिवर्ष, एव इकतीश संख्या इस गाथासें जाणना ॥ शेष आगे ॥ ४ ॥

बत्तीस पुण निसढे, मिलिया तेसट्ठि बीय पासेवि। चउसट्ठि ओ विदेहे, तिरासि पिंडेइ णउयसय॥५॥

अर्थ—(पुण) फिर (बत्तीसं) बत्तीस संख्या प्रमाण (निसढे) निषध पर्वत, यह सर्व (मिलिया) मिलानेंसे (तेसट्ठि)

तेसठ संडवा होते है, "इसीतरह" (बीयपासेवि) दुसरी तर्फभी "एक खंडवा एरवत क्षेत्रका दो शिखरी पर्वतके चार ऐरण्यवत क्षेत्रके आठ रूपी पर्वतके, शोळा रम्यक क्षेत्रके बत्तीस नीलवंत पर्वतके तीसरा वर्ष धर पर्वतके, एवं यह तेसठ संडवा तथा (चउसट्ठिओ) चौसठ संडवा (विदेहे) महाविदेह क्षेत्रके यह सर्व (तिरासि) तीनो राशीके संडवा (पिंडेह) मिलानेसें (णउयसयं) एकसोने निवे संडवा होते है इति प्रथम द्वारम् ॥ ५ ॥

भावार्थ—बत्तीश खंडवा भाग निषध पर्वत इसके साथ ऊपरकी गाथाके संडवा भाग मिलानेसें (तेसठ) खंडवा भाग होवे है ॥ इसीतरह, दुसरी तर्फ १ खंड भाग एरवत २ खंड भाग शिखरी पर्वत ४ क्षेत्र भाग ऐरण्यवत, आठ संडवा भाग, रूपी पर्वत १६ खंडवा भाग, रम्यक क्षेत्र ३२ संडवा भाग नीलवंत और ६४ खंडवा भाग महाविदेह इतनासबकी गिणती की जाय तो, एकसो निवे (१९०) संडवा होते है ॥ ५ ॥

जोयण परिमाणाइं, समचउरसाइं इत्थ खंडाइं । लरकस्सय परिहीए, तप्पाय गुणेय हुंतेव ॥ ६ ॥

अर्थ—(इत्थ) यहां जंबुद्वीपके अन्दर (जोयण परिमाणाइं) एक योजनके प्रमाणवाले (समचउरंसाइं) समच तुरस्र (खंडाइं) संडवा कितने होंगे ? उसकी रीति कहते हैं ॥

(लरकस्स) एक लाख योजनकी (परिहीए) परिधिका जो अंक आय उसको (तप्पाय) तत्पाद याने क्षेत्रके चौथे हिस्सेसे जैसें लाख योजनके जंबुद्वीपका चोथाहिस्सा २५ हजार योजन होता है उससें (गुणेय) गुणाकार करणेपर गणितपद (क्षेत्रफल) का प्रमाण (हुंतेय) निश्चय होता है ॥ ६ ॥

भावार्थ—लाख योजनके जंबुद्वीपमें एक योजन सम चतुरस्र कितने खण्ड होंग। उसका क्रम आगे दिखाते है ॥ एक लाख योजनकी परिधीका जो अंक आय उसको मूल क्षेत्रके चोथे भागसें गुणा करणेपर "क्षेत्रफल बनता है" ॥ १ ॥

विक्खम्भवग्गदहगुण, करणी वट्टस्स परिरओ होई। विक्खम्भपायगुणिओ, परिरओ तस्स गणियपयं ॥७॥

अर्थ—जंबुद्वीपका (विक्खंभ) विष्कंभ याने गोल क्षेत्रका विस्तार [प्रमाण] जितना हो उसका (वग्ग) वर्ग याने जितना विष्कंभ हो उनको उतनेसेंहि गुणा करे, बाद उस वर्गके अंकोंको (दह गुण) दशगुणा करनेंसे जो अंक आये उसको "विसमसम पयइवग्गो" इस बृहद् क्षेत्र समासकी गाथाके अन्दर जो (करणी) करणेंकी आम्नाय कही है उसके मुताबिक उन अंकका मूल सोधा जाय तब (वट्टस्स) गोल क्षेत्रकी (परिरओ) परिधि (होइ) होती है और बाद उस (परिरओ) परिधिके योजनका जो अंक आय उसको (विक्खंभ) विष्कंभ योजनके (पायगुणिओ) पादसे याने चौथे हिस्सेके अंकोंसे गुणाकरे तब (तस्सगणियपयं) उसका गणितपद याने क्षेत्रफल होता है ॥ ७ ॥

भावार्थ—जिस क्षेत्रका जितना विष्कम्भ हो उनको उतोसें गुणाकरणेपर वर्ग बनता है उस वर्गको दश गुणाकर "बृहद् क्षेत्र समासमें बताये" हुएक्रमसें उस विष्कंभ क्षेत्रको परिधिनिकाले बाद उस परिधिके अंकोंको विष्कंभके चतुर्थांश अंकोंसें गुणाकरणेपर गणितपद याने क्षेत्रफल बनता है ॥ ७ ॥

परिही तिलक्खसोलस, सहस्स दोसय सत्तवीस हिया।
कोसतिग अट्ठावीस, धणुसय तेरंगुलद्धहियं ॥ ८ ॥

अर्थ—जंबुद्वीपका विष्कंभ एक लाख योजनका है उसकी (परिही) परिधी (तिलक्ख सोलस सहस्स) तीन लाख सोले हजार (दोसय सत्तवीस हिया) दोसो सत्ताईस योजन अधिक (कोसतिग) तीन कोश (सय) एकसो (अट्ठावीसं) अठाइस (धणु) धनुष्य और (तेरंगुलद्धहियं) साधेतेरहआंगुल जंबुद्वीपकी जानना ॥ ८ ॥

(परिशिष्ट) इस परिधीको जंबुद्वीपके विष्कंभ प्रमाणसे चतुर्थांश निकाल उससे गुणाकरे तब जंबुद्वीपका गणितपद (क्षेत्रफल) होता है उसकी संख्या नीचेकी गाथासे दिखाते है ॥

भावार्थ—जंबुद्वीपका विष्कंभ एक लाख योजनका है जिसकी परिधी "तीन लाख सोले हजार दोसो सत्ताईस योजन तीन कोष" एकसो अठाइश धनुष साडातेरा अंगुल (३१६२२७) योजन (३) कोष (१२८) धनुष्य (१३॥) अंगुल) होती है ॥ ८ ॥

सत्तेवय कोडिसया, णउआ छप्पन्नसयसहस्साइं। चउणउय च सहस्सा, सयंदिवड्ढं च साहियं ॥ ९ ॥

अर्थ—(य) जो (सत्तेव) सात (सया) शतानि (सो) (कोडी) कोडोपरी (णउआ) निवे क्रोड "नवे सातसे

निये क्रोड" (छपन्नसय) छपन्नशो (सहस्साई) सहस्र "याने छपनलाख" (च) पुनः (चउणउयं सहस्सा) चोराणुं हजार (सयं दियड्ढ) देढसोसें (साहियं) साधिक ॥ ९ ॥

भावार्थ—सातसो निये क्रोड, छप्पन लाख चोराणुं हजार, देढ सो समचतुरस्र योजनसें अधिक ॥ ९ ॥

गाउअ मेहगपन्नरस, धणुसया तह धणूणि पन्नरस्स। सट्ठिंच अंगुलाइं, जंबुदीवस्सगणियपयं ॥१०॥
(युग्मम्)

अर्थ—(गाउअमेगं) एक कोश (पन्नरस धणुसया) पन्द्रहसो धनुष्योंपरी (धणुणिपन्नरस्स) पनराधनुष्य (च) पुनः (सट्ठि अगुलाइ) साठ अंगुल (जंबुद्दीपस्स) जंबुद्वीपका (गणिमयं) गणितपद जानना॥ इति द्वितीयद्वारम् ॥ १० ॥

एक कोष पनरेसो पनरा धनुष, साठ अगुल यह एक लाख ओजनके जंबुद्वीपका गणितपद (क्षेत्रफल) जानना अंकसें गणित (७९०, ५६, ९४, १५०) योजन (१) कोष (१५१५) धनुष्य (६०) अगुलेति ज्ञेयम् ॥ १० ॥

भरहाइ सत्त वासा, वियड्ढ चउ चउरतीस वट्टियरे। सोलसवक्खारगिरि, दो चित्त विचित्त दो जमगा ११

अर्थ—(भरहाइ सत्तवासा) भरतादि सात वास क्षेत्र "उसके नाम" १ भरत २ हेमवत ३ हरिवर्ष ४ महाविदेह ५ रम्यक ६ एरण्यवत ७ एरवत ॥ इति तृतीयद्वारम् ॥

"चतुर्थ निम्नल सैलद्वार"

देवकुरु उत्तरकुरु यह दो युगलियोंके क्षेत्र छोडकर, शेष च्यार क्षेत्रोंके अंदर (विययह चउवट्ट) वर्तुल वैताढ्य च्यार है फिर (इयरे) इन वैताढ्योंसे इतर (चउरतीस) चउतीस लम्बे वैताढ्य पर्वत है, पुनः (सोलसवक्खारगिरि) शोले वक्खारागिरि "विजयोंके अंतरमे है" फिर (चित्त विचित्त) १ चित्त २ विचित्त यह दो पर्वत और है इतर दो पर्वत, (जमगा) एक जमग दुसरा समग ॥ ११ ॥

भावार्थ—भरत १ हेमवत २ हरिवर्ष ३ महाविदेह ४ रम्यक ५ हिरण्यवत ६ एरवत ७ यह सातवाश क्षेत्र है ॥

देवकुरु, उत्तरकुरु इन दोनो क्षेत्रोंको छोड शेष च्यार क्षेत्रोंमें वर्तुल वैताढ्य एक एक है इनसें भिन्न चोतीश लम्बे, वैताढ्य, शोळे वक्खारा गिरि, दो चित्त १ विचित्त २ दो जमग १ और समग २ यह सब मिळ अठावन शास्वते पर्वत, शेष आगे ॥ ११ ॥

दोसय कणय गिरीण, चउ गयदंताय तह सुमेरुय । छवासहरापिंडे, एगुणसत्तरिसयाउभी ॥ १२ ॥

अर्थ—देवकुरु और उत्तरकुरु इन प्रत्येक क्षेत्रमें पांच २ द्रह है और एकेक द्रहके उभयतर्फ दश २ कंचनगिरि है, अतः इन सबको मिळानेसे (दोसयकणयगिरीणं) दोसो (२००) कंचनगिरि होते है, (च) फिर (चउगयदंता) च्यार गजदंते पर्वत है (तह) तैसे (सुमेरु) एक सुमेरु (य) और इनके दोनो तर्फ, तीन २ मिळकर (छ) छ (वासहरा) वर्षधर, पर्वत है, इन सबको (पिंडि) इकठाकरणेसे (सयाउभी) दोसो (एगुणसत्तरि) एक कम सित्तर पर्वत होते है ॥ १२ ॥

भावार्थ—देवकुरु उत्तरकुरु इन प्रत्येक क्षेत्रमें पांच २ द्रह है, और एक २ द्रहके दोनो तर्फ दस २ कंचन गिरी है इससें इन दोनो क्षेत्रोंमें दोसो पर्वतोकी सख्या हुई फिर च्यार गजदंत पर्वत एक मेरु गिरी इन मेरु गिरीके दोनो तर्फ तीन २ वर्षधर पर्वत इन सबको मिलानेसें दोसो इग्यारा (२११) पर्वत व इसके साथ पूर्वके (५८) मिलानेसें दोसो एक कम सित्तर (२६९) शाश्वते पर्वत इस जम्बुद्वीपमें है ॥ १२ ॥

सोलस वक्खारेसु, चउ चउ कूडाय हुंति पत्तेय। सोमणस गधमायण, सत्तट्ठय रुप्पि महाहिमवे ॥१३॥

अर्थ—(सोलसवक्खारेसु) शोला वक्षस्कार पर्वतोंके ऊपर (पत्तेयं) प्रत्येकपर (चचचउकूडा) च्यार च्यार शिखर (हुंति) है, यह शोले पर्वतोंपर सर्व चोसठ शिखर हुए फिर (सोमणस गंधमायण) एक सौमनस द्वितीय गंधमादन इन प्रत्येक गिरिपर (सत्ते) सात सात कूट है (रुप्पि महाहिमवे) रूपी और महाहिमवंत इन दोनो पर्वतोंपर (अट्ठय) आठ आठ कूट है, एवं ९४ कूट (शिखर हुए) ॥ १३ ॥

भावार्थ—शोले वक्षस्कार पर्वतोंके प्रत्येकपर च्यार २ कूट होनेसें, चोसठ कूट, फिर सोमनस और गंधमादन इन दोनोंपर सात २ कूट होनेसे चवदा व रूपी और महाहिमवंत इन दोनोंपर आठ २ कूट होनेसे शोला यह सब मिला नेसे चोराणु (९४) कूट होते है ॥ १३ ॥

चउतीस विपयेसु, विज्जुप्पह निसढ नीलवतेसु। तह मालवत सुरगिरि, नव नव कूडाइ पत्तेय ॥१४॥

अर्थ—(चउतीस वियड्ढेसु) वैताढ्यनामके चोतीस पर्वतोंपर, व (विज्जुप्पह) विद्युत् प्रभ नामका गजदंत गिरि तथा (निसह) निषध गिरि तथा (नीलवंतेसु) नीलवंत गिरि (तह) तैसेहि (मालवंत) माल्यवंत नामका गजदंत गिरित था (सुरगिरि) मेरुगिरि, यह एक कम चालीस पर्वतोंपर (पत्तेयं) प्रत्येके २ (नव नव कूडाइं) नव नव कूट है ॥ एवं पूर्वके और यह मिलकर (४४५) कूट हुए ॥ १४ ॥

भावार्थ—चोतीश लम्बे वैताढ्य व एक विद्युत्प्रभ, दुसरा निषध, तीसरा नीलवंत, चोथा माल्यवंत पांचमा सुमेरु इन चन चालीस पर्वतोंपर, नव २ कूट होनेसे तीनसो इक्यावन कूट हुए, और पूर्वके मिलानेसे (४४५) कूट होते है ॥ १४ ॥

हिम सिहरिसु इक्कारस, इय इगसट्ठि गिरीसु कूडाण। एगत्ते सव्वधणं, सय चउरो सत्तसट्ठीय ॥१५॥

अर्थ—(हिम) हिमवंत गिरितथा (सिहरिसु) शिखरी पर्वत, इन प्रत्येकपर (इक्कारस) इग्यारा २ कूट है, (इय) यह (इगसट्ठि गिरीसु) सर्व इगसठ पर्वतोंपर जो (कूडाणं) कूट है उसको (एगत्ते) एकत्र करनेसे (सव्वधणं) सर्व संख्या (सयचउरो) च्यारसे (सत्तसट्ठीयं) सड़सठ कूट (शिखर) होते हैं ॥ १५ ॥

भावार्थ—हिमवंत और शिखरी इन दोनों पर्वतोंपर इग्यारा २ कूट है, एवं सर्व इगसठ पर्वतोंपर च्यारसो सड़सठ (४६७) कूट होते हैं ॥ १५ ॥

चउसत्त अट्ठ नवगे, गारसकूडेहिं गुणह जह सख। सोलस दुदु गुणयाल, दुवेयसगसट्ठि सय चउरो ॥१६॥

अर्थ—(सोलस) षट्दस पर्वतोंके (चउ) च्यार च्यार कूट गिननेसे चोसठ होते हैं॥ (दु) दो पर्वतोंके (सत्त) सात २ कूट गिननेसे चयदे होते है (दु) और दो पर्वतोंके (अट्ठ) आठ २ कूट गिननेसे शोले होते है (गुणयालं) एक कम चालीस पर्वतोंके (नवगे) नव २ कूट गिनते तीनसो इकावन (३५१) होते है (दुवेय) दो पर्वतोंके (एगारस कूडेहिं) इग्यारा २ कूट गिननेसे बावीस होते है एवं पूर्वोक्त सर्व कूटें (गुणह) गुनतां (जहसखं) यथासंख्यासें (सय चउरो सगसट्ठि) च्यारसे सड़शठ (४६७) होते है॥ १६॥

भावार्थ—सोलेपर च्यार २ के हिसाबसें चोसठ, दोपर सात २ के हिसाबसें चयदा, दोपर आठ २ के हिसाबसें शोला उन चालीसपर नव २ के हिसाबसें तीनसो इकावन दोपर इग्यारा २ के हिसाबसे बावीस, एवं इगसठ पर्वतोंपर च्यारसे सडसठ (४६७) कूट जाणना॥ १६॥

चउतीसविजएसु, उसहकूडा अट्ठमेरु जंबुमि। अट्ठयदेवकुराइ, हरि कूड हरिस्सयसट्ठी॥ १७॥

अर्थ—(चउतीसं विजएसु) चक्रवर्तिके चोतीस (३४) विजयमें एकेक (उसहकूडा) ऋषभकूट है, और (मेरु) मेरु पर्वतके च (जंबुमि) जंबु वृक्षके (अट्ठ) आठ २ कूट है, पुनः (देवकुराई) देवकुरु अंदरभी (अट्ठ) आठ कूट

है, फिर शाल्मलि वृक्षके मध्यका (हरिकूड) हरिकूट, और (हरिस्सह) हरिसह ये दो कूट इन कूटोंके साथ मिला णेसे (सठी) साठ भूमि कूट होते हैं ॥ पंचम कूट द्वार मिति ॥ १७ ॥

भावार्थ—चोतीश विजयके चोतीश ऋषभ कूट और एक मेरु पर्वत, दुसरा जंबुवृक्ष तीसरा देवकुरु इन तीनोंके आठ २ भुमिकूट, फिर शाल्मलिवृक्षके बीच हरि कूट और हरिसह यह दो कूट, एवं भुमि कूटोंकि सख्या साठ (६०) होती है ॥ १७ ॥

मागह वरदाम पभास, तित्थविजएसु एरवय भरहे । चउतीसा तिहिंगुणिया, दुरुत्तरसयं तु तित्थाण १८

अर्थ—(विजएसु) बत्तीस विजय, व (एरवय) ऐरवत, और (भरहे) भरतक्षेत्र, इन प्रत्येक चोत्तीश स्थानोंके अन्दर, एक (मागह) मागध, दुसरा (वरदाम) वरदाम, तीसरा (पभासं) प्रभास, ये तीनो (तित्थ) तीर्थ है, अतः (चवतीसा) चवतीशको (तिहिं) तीनसें (गुणिया) गुणा करें तो (तु) फिर (दुरुत्तरसयं तित्थाणं) एकसो दो (१०२) तीर्थ होते है ॥ १८ ॥

भावार्थ—बत्तीशविजय और एक ऐरवत, एक भरत इन चोतीश क्षेत्रोंमें एक मागध दुसरा वरदाम तीसरा प्रभास यह तीन २ तीर्थ हरएक क्षेत्रमें होते है अस्तु एकसो दो (१०२) सभी तीर्थोंकी संख्या जानना ॥ १८ ॥

विज्जाहर अभिओगिय, सेढीओ दुन्निदुन्नि वेयड्ढे । इय चउगुण चउतीसा, छत्तीस सय तु सेढीण ॥१९॥

अर्थ—(वेयड्ढे) वेताढ्यके ऊपर, एक (विज्जाहर) विद्याधर और दुसरी (अभिओगिय) आभियोगिक देवोंका (दुन्निदुन्नि) दो दो (सेढीओ) श्रेणिये है तय (इय) ये (चउतीसा) चोतीश दीर्घ (लम्बे) वेताढ्योंको (चउगुण) च्यार गुणा करणेसे (उ) फिर (छत्तीस सयं सेढीणं) एकसो छत्तीस श्रेणिये जंबुद्वीपमें होती है ॥ १९ ॥

भावार्थ—प्रत्येक लम्बे वैताढ्योंपर, विद्याधर और आभियोगिक देवोंकी दो दो श्रेणिये है ॥ अतः प्रत्येकपर च्यार २ के हिसाबसे एकसो छत्तीश श्रेणिये होती है ॥ १९ ॥

चक्कीजेअव्वाइ, विजयाइं इत्थहुंति चउतीसा । महदह छ पउमाइ, कुरुसुदसगंति सोलसगं ॥ २० ॥

अर्थ—(चक्कीजे अयाइं) चक्रीजेतव्यानि, याने चक्रवर्ती जिन क्षेत्रको जीतकर उसे राज्य करे ऐसे (विजयाइं) विजय (इत्थ) इस जंबुद्वीपमे "बत्तीस महाविदेह एक ऐरवत एक भरत यह मिलकर (चउतीसा) चउतीश (हुंति) है ॥

(पउमाइ) पद्मादिक महाद्रह (छ) षट् याने १ पद्म, २ महापद्म, ३ तिगिच्छि, ४ केसरी, ५ पुंडरीक, ६ महापुण्डरीक, यह छ है, पुनः (कुरुसु) देवकुरु और उत्तरकुरु इन दोनो क्षेत्रोंमें पांच पांच द्रह है यह मिलकर (दसगंति) दशद्रह हुए इसके साथ ऊपरके मिलानेसे (सोलसग) सोलह (महद्दह) महानद्रह इस जंबुद्वीपमें जाणना ॥ २० ॥

भावार्थ—जिस क्षेत्रको चक्रवर्ती जीतकर उस्से राज्य करे उसको विजय कहते है, ऐसे विजय जंबुद्वीपमें, बत्तीश महाविदेह एक ऐरवत और एक भरत, यह चोतीश है ॥

पद्म १ महापद्म २ तिगिच्छि ३ केसरी ४ पुण्डरीक ५ और महापुण्डरीक ६ इन छके साथ देवकुरु ओर उत्तरकुरु इन क्षेत्राके पाच २ द्रह मिलानेसे सोळे महानद्रह जंबुद्वीपमें जानना ॥ २० ॥

गगा सिंधुरत्ता, रत्तवई चउनईओ पत्तेयं । चउदसहिं सहस्सेहिं, समगग वच्चति जलहिम्मि ॥२१॥

अर्थ—जंबुद्वीपके दक्षिण भरत क्षेत्रमें एक (गंगा) गंगा दुजी (सिंधु) सिन्धु यह दो बडी नदीये है, इसी तरह उत्तरकी तर्फ ऐरवत क्षेत्रमें एक (रत्ता) रक्ता दुजी (रत्तवई) रक्तवती यह दो बडी नदीये है, इन (पत्तेय)प्रत्येक २ (चउ) च्यार (नइओ) नदियोंके (चउदसहिं सहस्सेहिं) चउदा चउदा हजार नदियोंका परिवार है, और इनकी (समगग) समग्र याने सर्व संख्या, छप्पन्न हजार नदियें होती है और (जलहिम्मि) समुद्रके अंदर जाके (वच्चंति) मिलती है ॥ २१ ॥

भावार्थ—जंबुद्वीपके भरत क्षेत्र आश्री एक गंगा, दुजी सिन्धु, और ऐरवत क्षेत्र आश्री एक रक्ता, दुजी रक्तवती, यह च्यारों नदिये अपने २ चउदह २ हजार नदियोंके परिवारसें समुद्रमें जाके मिलती है ॥ २१ ॥

एव अब्भिंतरिया, चउरो पुण अट्ठवीस सहस्सेहिं । पुणरवि छप्पन्नेहिं, सहस्सेहिंजंति चउसलिला ॥२२॥

अर्थ—(पुण)फिर (एवं) ऐसेहि एक हेमवत दुजा ऐरण्यवत इन दो युगलियोंके (अब्भितरिया) अभ्यतर क्षेत्रकी नदिये एक रोहिता दुजी रोहितांशा तीजी रूपकूला और चोथी सुवर्णकूला, यह (चउरो) च्यारों नदिये

अपनी २ (अट्ठवीस सहस्सेहिं) अट्ठाइस २ हजार नदियोंके परिवार सहित समुद्रमें आके मिलती है, (पुणरवि) पुन रपि एक हरिवर्ष दुजा रम्यक इन दो युगलियोंके क्षेत्रकी, एक हरिकांता दुजी हरिसलिला, तीजी नरकांता और चोथी नारिकांता ये (चउसलिला) च्यारों नदिये अपनी २ (छप्पन्नेहिं सहस्सेहिं) छप्पन, २ हजार नदियोंके परिवार सहित समुद्रमें (जंति) जाती है ॥ २२ ॥

भावार्थ—हेमवत और ऐरण्यवत इन दो युगलियोके अभ्यंतर क्षेत्रकी, रोहिता १ रोहितांशा २ रूपकूला ३ और सुवर्णकूला ४ यह च्यारों नदिये अपने २ अठाईस २ हजार नदियोंके परिवारसें, व हरिवर्ष, और रम्यक इन दो क्षेत्रोंकी हरिकांता १ हरिसलिला २ नरकंता ३ और नारिकांता ४ यह च्यारों नदियें अपने २ छप्पन २ हजार नदियोंके परिवारसें समुद्रमें जाके मिलती है ॥ २२ ॥

कुरु मज्झे चउरासि, सहस्साइं तहय विजय सोलसेसु । बत्तीसाण नईण, चउदस सहस्साइ पत्तेय ॥२३॥

अर्थ—(कुरु मज्झे) देवकुरु और उत्तरकुरु इन दोनो क्षेत्रोंकी क्रमसें सीतोदा और सीता नदियोंमें छ छ अंतर नदियें मिलती है और उन छ छ नदियोंका याने प्रत्येक छ नदियोंका परिवार (चउरासि सहस्साइं) चोराशी हजार नदिये है, (तहय) तैसेंहि, पश्चिम महाविदेहकी (विजय सोलसेसु) सोले विजयके अन्दर प्रत्येकमें, रक्ता और रक्तवती यह दो दो नदिये गिणनेसें (बत्तीसाण नईणं) बत्तीस नदियें होती है, और यह (पत्तेयं) प्रत्येक २ अपने २ (चउदस सहस्साइं) चउदह २ हजार नदियोंके परिवारसे है ॥ २३ ॥

भावार्थ—उत्तरकुरु और देवकुरु इन दोनो क्षेत्रोकी क्रमसें, सीता और सीतोदा नदियोंमें छ छ अंतर नदिये मिलती है और प्रत्येक नदीका परिवार चउदह २ हजार नदियोंका है ॥

फिर पश्चिम महाविदेहकी, शोळे विजयोंमें प्रत्येक विजयके अन्दर, रक्ता और रक्तवती, इन नामकी दो नदिये होनेसे बतीश नदियें होती है और इन प्रत्येकका चौदह २ हजार नदियोंका परिवार है ॥ २३ ॥

चउदस सहस्स गुणिया, अडतीस नइओ विजय मझिल्ला। सीओयाए निवडंति, तहय सीयाइ एमेव २४

अर्थ—(विजय मझिल्ला) महाविदेहकी पश्चिम शोळे विजयके अन्दरकी ३२ व छ अंतर नदिये यह मिलाकर, (अडतीस नइओ) अडतीस नदियोंको (चउदस सहस्स गुणिया) चौदह हजारसे गुणा करते पांच लाख बतीस हजार (५३२०००) नदिये होती है यह सर्व (सीओयाए) सीतोदाके अन्दर (निवडंति) मिलती है, (तहय) ऐसेही (सीयाइ) सीता नदीके अन्दरभी (एमेव) एसेही याने पूर्व शोळे विजयकी, और छ उत्तरकुरु क्षेत्रकी अंतर नदिये यह सब मिलकर पूर्व संख्यावत् (५३२०००) नदिये मिलती है ॥ २४ ॥

भावार्थ—पश्चिम शोळे विजयके अन्दरकी बतीस पश्चिम विदेहक्षेत्रकी अन्तरनदिये छ इन अडतीश नदियोंको चौद हजारसे गुणा करनेपर "पांच लाख बतीश हजार (५३२०००) नदियें होती है और यह सब सीतोदा नदीमें आके मिलती है" एसेहि पूर्वी शोळे विजयकी बतीश और पूर्वविदेह क्षेत्रकी अन्तर छ यह अडतीश नदियेंभी पूर्वोक्त हिसाबसे (५३२०००) के परिवारसे सीता नदीमें आके मिलती है ॥ २४ ॥

सीया सीओया विय, बत्तीस सहस्स पंचलक्खेहिं। सवे चउदस लक्खा, छप्पन्न सहस्स मेलविया ॥२५॥

अर्थ—प्रत्येक (सीया सीओयाविय) सीता और सीतोदा यह दोनो नदियें अपने २ (बत्तीस सहस्स पंचलक्खेहिं) पांच लाख और बत्तीस हजार नदियो सहीत समुद्रमे जाती है, एवं (सवे) सर्व इस जंबुद्वीपके अन्दर (चउदस लक्खा) चौदह लाख (छप्पन्न सहस्स) छप्पन हजार नदियें (मेलविया) मिलानेसें होती हैं ॥ २५ ॥

भावार्थ—सीता और सीतोदा यह दोनो अपनी २ पांच २ लाख बत्तीश २ हजार नदियाके परिवारसे समुद्रमें जाके मिलती है ॥ एवं इस जंबुद्वीपमें सब नदियोंकी संख्या चौदह लाख छप्पन हजार होती है ॥ २५ ॥

छज्जोयण सकोसे, गंगा सिंधुण वित्थरो मूले। दसगुणिओ पज्जते, इय दुदु गुणणेण सेसाण ॥ २६ ॥

अर्थ—(गंगा सिंधूण) गंगा और सिंधु इन दो नदियोंका (मुले) मूलमें याने जहा पद्मद्रहसे निकली है वहां (सकोसे) कोशसहित (छ जोयण) छ योजन (वित्थरो) विस्तार है॥ याद विस्तार बधते २ (दसगुणिओ) दशगुणायाने साढा बासठ योजन (पज्जते) पर्यंत हो समुद्रमें मिलती है (इय) एसे (दुदु गुणणेण) दुगणी २ (सेसाण) शेष पूर्वोक्त नदियोंका निर्गमन और प्रवेश अनुक्रमसें जानना ॥ २६ ॥

भावार्थ—जहांसे गंगा और सिंधु यह दोनो नदिये निकली है वहा इसका सवा छ योजनका विस्तार है॥ और

इन्हीका जहां समुद्रमें जाके मिली है वहां साढाबासठयोजनका विस्तार है इसी तरह इनसे दुणा २ क्रमवार शेष नदियोंका निर्गमन और प्रवेश विस्तार जानना ॥ २६ ॥

जोयण सयमुच्चिट्ठा, कणयमया सिहरि चुल्लहिमवता। रुप्पि महाहिमवता, दुसुउच्चारुप्प कणयमया २७॥

अर्थ —एक (सिहरि) शिखरी दुसरा (चुल हिमवंता) लघु हिमवंत ये दो पर्वत (सय) एकसो (जोयण) योजन (मुच्चिठा) उंचे पनेमे, और (कणयमया) स्वर्णमयी है पुनः एक (रुप्पि) रुपी दुसरा (महाहिमवंता) महाहिमवंत ये दो पर्वत (दुसुच्चा) दोसो योजन उंचे पनेमें है, इसमे रुपी पर्वत (रुप्प) चांदीमयी और महाहिमवत्त (कणयमया) स्वर्णमई है ॥ २७ ॥

भावार्थ—शिखरी और छोटाहिमवत यह दो पर्वत एकसो योजन उंचे और स्वर्णमयी है, रुपी और महाहिमवंत यह दो पर्वत दोसो योजन उंचे और क्रमसे स्वर्ण और रुप्यमयी है ॥ २७ ॥

चत्तारि जोयणसए, उच्चिट्ठो निसढ नीलवतोय। निसढो तवणिज्जमओ, वेरुलिओ नीलवंतोय ॥ २८ ॥

अर्थ—(निसढ नीलवंतो) निषध और नीलवंत यह दोनो पर्वत (चत्तारि जोयणसए) च्यारसें योजन (उच्चिठो) उंचे है, इसमे (य) जो (निसढो) निषध पर्वत है वो (तवणिज्जमओ) रक्त स्वर्णमयी याने छालवर्णी और दुसरा (नीलवंतो) नीलवंत पर्वत जो है वो (वेरुलिओ) वैडुर्य याने नीलारत्नमइ है ॥ २८ ॥

भावार्थ—निषध और नीलवंत यह दो पर्वत च्यारसें योजन उंचे और क्रमसे तपेहुए सोनेके और नीलेरत्नके है ॥ २८ ॥

सवेवि पव्वयरा, समयखित्तम्मि मदरविहुणा । धरणि तलेमुवगाढा, उस्सेह चउत्थ भायम्मि ॥ २९ ॥

अर्थ—इस (समय खित्तम्मि) समयक्षेत्र याने जिस क्षेत्रमें समयकी गिणना होती है उसमें (मदर विहुणा) पांच मेरु पर्वतोंको छोड शेष जितने शास्वते (पव्वयरा) पर्वत है वो (सवेवि) सर्व अपने (उस्सेय) उच्च प्रमाणसें (चउत्थ भायम्मि) चोथा भाग (धरणितले) जमीनके अंदर (उवगाढा) अवगाह्य याने दटे हुए है ॥ और समयक्षेत्र जिसको अढाइ द्वीप समझना चाहिये उसमें जो पांच मेरु पर्वत है इन पांचोंके अन्दर जंबुद्वीपका जो मध्य मेरु है वो निन्नाणुं हजार योजन उंचा और एकहजार योजन जमीनके अन्दर है एवं यह मेरु सब मिलकर एक लाख योजनका है ॥ अत एव शेष च्यार मेरु एक २ हजार योजन जमीनमें और चउरासी २ (८४) हजार योजन उंच पनेमें है ॥ २९ ॥

भावार्थ—इस समय क्षेत्रयाने अढाइ द्वीपमें पांच मेरु पर्वतोंको छोड शेष जितने शास्वते शैल है उनकी उचाइ भागके चौथे हिस्सेका भाग भूगर्भमें है, और पांच मेरु पर्वतोंके अदर जो जंबुद्वीपका मध्य मेरु है वो निन्नाणुहजार योजन उंचा और एकहजारयोजन भूतले, एवं लाखयोजनका जानना ॥ शेष च्यारों मेरु एक २ हजार योजन भूगर्भमें और चउरासी २ हजार योजन उंचपनेमें है ॥ २९ ॥

खडाईगाहाहिं, दसहिं दारेहिं जंबुद्दीवस्स । संघयणी समत्ता, रइया हरिभद्दसूरीहिं ॥ ३० ॥

अर्थ—इस तरह (खंडाई गाहाहिं) खंडादिकोंकी गाथा ये (दसहिं दारेहिं) दशद्वारकरके (हरिभद्दसूरीहिं) श्रीहरिभद्रसुरिजी महाराजनें (रइआ) रचि है एसी (जंबुद्दीवस्स) जंबुद्वीप आश्रीकी (संघयणी समत्ता) लघुसंघयणी नामका प्रकरण समाप्त हुआ ॥ ३० ॥

भावार्थ—एसे श्रीहरिभद्रसुरि महाराजने यह लघुसंघयणी नामका प्रकरण जिसमें जंबुद्वीपके शास्वते खंडादिकोंका विवरण दशद्वार करके रचा समाप्त किया ॥ ३० ॥ इत्यलम् ॥

॥ इति लघुसंघयणी प्रकरणम् ॥



ॐ श्रीसर्वज्ञाय नमः ।

अथ ।

श्रीपंडितदेवचंद्रजीकृत—आगमसार ।

भव्यजीवने प्रतिबोधवा निमित्ते मोक्षमार्गनी वचनिका कहे छे तिहां प्रथम जीवअनादिकालनो मिथ्यात्वीहतो ते काललब्धि पामीने त्रणकरण करे छे तेनानाम—पहेलु यथाप्रवृत्तिकरण, बीजुं अपूर्वकरण, अने त्रीजुं अनिवृत्तिकरण

तेमा पहेलुं यथाप्रवृत्तिकरण कहे छे १ ज्ञानावरणी, २ दर्शनावरणी, ३ वेदनी, ४ अंतराय, एचारकर्मनी त्रीस कोडाकोडीसागरोपमनी स्थिति छे, तेमांथी उगणत्रीस कोडाकोडी खपावे अने एककोडाकोडी बाकी राखे, तथा १ नामकर्म, २ गोत्रकर्म, ए बेकर्मनी वीसकोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे, तेमांथी उगणीस खपावे अने एककोडा कोडी राखे, अने मोहनीयकर्मनी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे, तेमाथी अगणोत्तेर खपावे, बाकी एकको डाकोडी राखे । एवीरीते एक आयुकर्म वर्जीने बाकी सातेकर्मनी एकपल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून एकको- डाकोडी सागरोपमनी स्थिति राखे, एवुं जे वैराग्यरूप उदासी परिणाम ते यथाप्रवृत्तिकरण कहिये ए पहेलुं करण सर्वसंज्ञी पंचेंद्रीजीव अनन्तीवार करे छे

हवे बीजुं अपूर्वकरण कहे छे ते एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिमाहेथी एकमुहूर्त अने अनादि मिथ्यात्व के अनंतानुबंधीआनी चोकडी ते खपायवाने अज्ञान हेय ते छांडवुं अने ज्ञान उपादेय पटले आदरवुं, ए वांछारूप अपूर्व कहेतां पहेलां क्यारे नाव्यो एवो जे परिणाम ते अपूर्व करण कहिये, ए बीजुंकरण ते समकितयोग्य जीवने थाय

हवे त्रीजुं अनिवृत्तिकरण कहे छे ते मुहूर्त रूपस्थिति खपावीने निर्मल शुद्ध समकित पामे मिथ्यात्वनो उदय मटे त्यारे जीव उपशम समकित पामे, एवो जे परिणाम ते अनिवृत्ति करण कहिये ए करण कीधाथी गंठीभेदथयो कहिये उक्तंच आवश्यक निर्युक्तौ "जागंठीतापढम । गंठीसमयछेओ भवेबीओ ॥ अनिअट्टिकरणं पुण । समत्तपुरक्खडेजीवे ॥ १ ॥ ऊसर देसं दड्ढुलिअं च । विज्झाइ वणदवोपप्प ॥ मिच्छत्तस्सअणुदए । उवसमसम्मं [illegible] जीवो ॥ २ ॥ एम मिथ्यात्वनो उदयमट्याथी जीव समकित पामे, ते समकितनी सद्दहणाना बे भेद छे, एक व्यवहार समकितसद्दहणा, बीजी निश्चय समकित सद्दहणा

देवश्रीअरिहंत देवाधिदेव अने गुरु सुसाधु जे सूधो अर्थ कहे ते तथा धर्म केवलीनो परुप्यो जे आगममां सातनय तथा एक प्रत्यक्ष बीजुं परोक्ष ए बे प्रमाण अने चार निक्षेपेकरी सद्दहे, एवी सद्दहणा ते व्यवहार समकित कहिये ए पुण्यनुं कारण तथा धर्म प्रगट करवानुं कारण छे एवी रुची ज्ञानविनापण घणाजीवोने उपजे

बीजुं निश्चयसमकित ते आवीरीते के निश्चयथेय ते आपणोज आत्मा जीव मिथ्यात्वरूपी सिद्ध ते संग्रहनयनीस-

चागयेपतां तथा निश्चयगुरु ते पण आपणो आत्माज तत्त्वरमणी अने निश्चयधर्म ते आपणा जीवनो स्वभावज छे एवी सद्दहणा ते मोक्षनुं कारण छे केमके जीव स्वरूप ओलख्या विना कर्मक्षपे नहीं एवी शुद्ध सद्दहणा ते निश्चयसमकित

हवे ज्ञाननुं स्वरूप कहे छे ते ज्ञानना बे भेद छे एक व्यवहारज्ञान, बीजुं निश्चयज्ञान, तेमां जे अन्यमतिनां सर्व-शास्त्र जाणवां अथवा जैनागममध्ये कह्या जे एकगणितानुयोग ते क्षेत्रमान, बीजो चरणकरणानुयोग ते क्रियाविधि, त्रीजो धर्मकथानु योग ए त्रण अनुयोगनुं जाणवापणु ते सर्वव्यवहारज्ञान छे अथवा अन्तरउपयोगविना जे सूत्रना अर्थकरवा ते पण व्यवहारज्ञान कहियें

हवे निश्चयज्ञान ते छे द्रव्य तथा तेनागुण अने पर्याय सर्वने जाणे तेमां पांच अजीवद्रव्य छे ते हेयकेता छांडवा योग्य जाणी छांडवा अने एक जीवद्रव्य ते निश्चयेकरी सिद्धसमान मोक्षमयी मोक्षनोजाणनार मोक्षनु कारण मोक्षनो जायाघाळो मोक्षमांजरहे छे एहवो आपणो जीव अनंतगुणी अरूपी छे तेनेज ध्यावे ते निश्चयज्ञानकहियें

हवे एकधर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय, त्रीजो आकाशास्तिकाय, चोथो पुद्गलास्तिकाय, पांचमो जीवास्तिकाय, अने छट्ठो काळ ए छे द्रव्य शाश्वता छे तेनु ज्ञान कहे छे ए छेद्रव्यमध्ये पांच अजीव द्रव्य छे अने एक जीवद्रव्य ते चेतनालक्षणवंत छे उपादेय छे

हवे ए छद्रव्यना गुण कहे छे पहेलो धर्मास्तिकाय तेना चार गुण एक अरूपी बीजो अचेतन त्रीजो अक्रिय चोथो गतिसहायगुण, अने बीजो अधर्मास्तिकाय तेना पण चारगुण छे एक अरूपी बीजो अचेतन त्रीजो अक्रिय चोथो स्थिति

सहायगुण, अने त्रीजो आकाशास्तिकायद्रव्य तेना चार गुण छे एक अरूपी बीजो अचेतन त्रीजो अक्रिय चोथो अवगाहना दानगुण, हवे काळद्रव्यना चारगुण कहे छे एक अरूपी बीजो अचेतन त्रीजो अक्रिय चोथो नवापुराणवर्तना लक्षण, हवे पुद्गलद्रव्यना चारगुण कहे छे एकरूपी बीजो अचेतन त्रीजो सक्रिय चोथो मिळणविखरणरूप पूरणगलन गुण, हवे जीवद्रव्यना चार गुण कहे छे एक अनंतज्ञान बीजो अनंतदर्शन त्रीजो अनन्तचारित्र चोथो अनंतवीर्य ए छद्रव्यना गुण कह्या ते नित्यध्रुव छे

हवे छद्रव्यना पर्याय कहे छे धर्मास्तिकायना चारपर्याय छे एक खंध, बीजो देश, त्रीजो प्रदेश, चोथो अगुरुलघु, अधर्मास्तिकायना चारपर्याय एकखंध, बीजोदेश, त्रीजाप्रदेश, चोथो अगुरुलघु पुद्गल द्रव्यना चारपर्याय एकवरण बीजो गंध, त्रीजो रस, चोथो स्पर्श अगुरुलघुसहित, तथा आकाशास्तिकायनाचार पर्याय एकखंध, बीजो देश, त्रीजो प्रदेश, चोथो अगुरुलघु काळद्रव्यना चारपर्याय एकअतीत काळ, बीजो अनागतकाळ, त्रीजो वर्तमानकाळ, चोथो अगुरुलघु अने जीव द्रव्यना चारपर्याय एक अव्याबाध, बीजो अनवगाह, त्रीजो अमूर्तिक, चोथो अगुरुलघु ए छे द्रव्यनापर्याय कह्या

हवे छ द्रव्यना गुणपर्यायनुं साधर्म्यपणु कहे छे अगुरुलघुपर्याय सर्वद्रव्यमां सरीखो छे अने अरूपीगुण पांच द्रव्यमां छे एक पुद्गलद्रव्यमां नथी, तथा अचेतनगुण पांच द्रव्यमां छे एकजीवद्रव्यमां नथी, अने सक्रियगुणजीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्यमां छे बाकी चारद्रव्यमां नथी तथा चलणसहायगुण एकधर्मास्तिकायमां छे. बीजा पांचद्रव्यमां नथी,

यली स्थिर सहायगुण एक अधर्मास्तिकायमां छे बीजा पांच द्रव्यमा नथी तथा अवगाहनागुण ते एक आकाशद्रव्यमां छे, बीजा पांच द्रव्यमा नथी; अने वर्तनागुण ते एक काळद्रव्यमाज छे, बीजा पांच द्रव्यमा नथी; तेमज मिळणविखरणगुण ते पुद्गलमां छे, बीजा द्रव्यमां नथी तथा ज्ञानचेतनागुण ते एक जीवद्रव्यमा छे, पण बीजा द्रव्यमां नथी ए मूलगुण कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमां मिळे नहीं एक धर्म बीजो अधर्म त्रीजो आकाश ए त्रण द्रव्यना त्रण गुण तथा चार पर्याय सरिखा छे अने त्रणगुणें करी तो काळद्रव्य पण ए समान छे

हवे वली अत्यार बोलेकरी छ द्रव्यना गुणजाणवाने गाथा कहे छे

परिणामिजीवमुत्ता, सपएसा एगखित्तकिरिआ य । निच्च कारणकत्ता, सव्वगयइयरअप्पवेसे ॥ १ ॥

अर्थ—निश्चयनयथी आप आपणा स्वभावे छए द्रव्य परिणामी छे अने व्यवहारनयथी जीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्य परिणामी छे तथा एक धर्म, बीजो अधर्म, त्रीजो आकाश, अने चोथो काळ, ए चार द्रव्य अपरिणामी छे तथा छे द्रव्यमां एक जीव द्रव्य ते जीव छे, बीजा पांच द्रव्य अजीव छे तथा छे द्रव्यमा एक पुद्गल मूर्तिवन्त रूपी छे अने पांच द्रव्य अमूर्तिवंत अरूपी छे छ द्रव्यमां पांच द्रव्य सप्रदेशी छे, अने एक काळद्रव्य अप्रदेशी छे तेमां एक धर्मास्तिकाय बीजो अधर्मास्तिकाय ए बे द्रव्य असंख्यातप्रदेशी छे अने एक आकाशद्रव्य अनंतप्रदेशी छे जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे, पुद्गलपरमाणु अनंत प्रदेशी छे; परमाणुआ अनंता छे, एम पांच द्रव्य सप्रदेशी छे अने छट्ठो काळ अप्रदेशी छे

छे द्रव्यमां एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय, त्रीजो आकाशास्तिकाय ए त्रण ते एकेक द्रव्य छे, तथा एक जीवद्रव्य बीजो पुद्गलद्रव्य त्रीजो कालद्रव्य ए त्रण द्रव्य अनेक अनेक छे, छ द्रव्यमा एक आकाशद्रव्य क्षेत्र छे, अने बीजा पांच द्रव्य क्षेत्री छे। निश्चयनयथी छे द्रव्य पोतपोताना कार्ये सदा प्रवर्त्ते छे माटे सक्रिय छे। अने व्यवहारनयथी जीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्य सक्रिय छे, तेमां पण पुद्गल सदा सक्रिय छे, अने जीवद्रव्य तो संसारी थको सक्रिय छे; पण सिद्धअवस्थायें थको संसारी क्रियाकरवाने अक्रिय छे, तथा बाकीना चार द्रव्य तो अक्रिय छे; निश्चयनयथी छे द्रव्य नित्य छे ध्रुव छे; अने उत्पादव्ययेंकरी अनित्यपणे पण छे तथा व्यवहारनयें जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य अनित्य छे, बाकीना चार द्रव्य नित्य छे, यद्यपि उत्पादव्यय ध्रुवपणे सर्व पदार्थ परिणमे छे तोपण एक धर्म, बीजो अधर्म, त्रीजो आकाश, चोथो काल, ए चार द्रव्य सदा अवस्थित छे ते माटे नित्य कह्यां

छे द्रव्यमा एक जीवद्रव्य अकारण छे अने पांच द्रव्य कारण छे केमके पांचे द्रव्य जीवने भोगमां आवे छे माटे कारण कहिये केमके धर्मास्तिकाय चालवानो साह्य आपे छे अधर्मास्तिकाय थिर रहेवानो साह्य आपे छे आकाशास्ति काय अवकाश आपे छे पुद्गलास्तिकाय जीवने मधुरादि सुरभिगंधादिक तथा सकोमल स्पर्शादिक भोगपणे थाय छे तथा कालद्रव्य ते जीवने जरा बाल तारुण्य अवस्थादिप छे तथा अनादि संसारी जीव भवस्थिति परिपाक छता एक अतर मुहूर्त्तकालमां सकलकर्म निर्जरी मोक्ष पहोंचे तिहां सिद्ध अवस्थायें अनंतोकाल पर्यंत जीव अनंता सुखने विलसे माटे काल द्रव्यपण जीवने भोग थाय छे पण एक जीव द्रव्य कोइने भोग आवतो नथी माटे अकारण कह्युं अने

पांच द्रव्य भोग आवे माटे कारण कह्या तथा "घणी प्रतोमां तो सक्षेपे पटलुं छे जे छ द्रव्यमा एक जीव द्रव्य कारण छे पांच द्रव्य अकारण छे ए पण वात घणीरीते मळती छे माटे जे बहुश्रुत कहे ते खरु मारीधारणा प्रमाणे जीव द्रव्य कारण अने पांच द्रव्य अकारण एम संभवे छे" निश्चयनयथी छए द्रव्य कर्ता छे अने व्यवहारनयें एक जीवद्रव्य कर्ता छे बाकी पांच द्रव्य अकर्ता छे छ द्रव्यमां एक आकाशद्रव्य सर्व व्यापी छे अने पांच द्रव्य लोक व्यापी छे छए द्रव्य एक क्षेत्रमां एकठां रह्या छे पण एक बीजा साथे मळी जाय नहीं ए छ द्रव्यनो विचार कह्यो

हवे एकेका द्रव्यमा एक नित्य, बीजो अनित्य त्रीजो एक चोथे अनेक, पांचमो सत्, छट्ठो असत्, सातमो वक्तव्य, आठमो अवक्तव्य, ए आठ आठ पक्ष कहे छे

धर्मास्तिकायना चार गुण नित्य छे तथा पर्यायमां धर्मास्तिकायनो एक संध नित्य छे बाकीना देश प्रदेश तथा अगुरुलघु पर्याय अनित्य छे अधर्मास्तिकायना चार गुण तथा एक लोक प्रमाण संध नित्य छे अने एक देश बीजो प्रदेश त्रीजा अगुरुलघु ए त्रण पर्याय अनित्य छे तथा आकाशास्तिकायना चार गुण तथा लोकालोकप्रमाणसंध नित्य छे अने एक देश बीजो प्रदेस त्रीजो अगुरुलघु ए त्रण पर्याय अनित्य छे तथा कालद्रव्यना चार गुण नित्य छे अने चार पर्याय अनित्य छे पुद्गल द्रव्यना चार गुण नित्य छे अने चार पर्याय अनित्य छे जीवद्रव्यना चार गुण तथा त्रण पर्याय नित्य छे अने एक अगुरुलघु पर्याय अनित्य छे ए रीते नित्यानित्य पक्ष कह्यो

हवे एक अनेक पक्ष कहे छे एक धर्मास्तिकाय बीजो अधर्मास्तिकाय ए बे द्रव्यनो संधलोकाकाश प्रमाण एक छे

अने गुण अनंता छे पर्याय अनंता छे प्रदेश असंख्याता छे तेणेंकरी अनेक छे, आकाशद्रव्यनो लोकालोक प्रमाण स्वक्षेत्र एक छे अने गुण अनंता छे पर्याय अनंता छे प्रदेश अनंता छे माटे अनेक छे, काळ द्रव्यनो वर्त्तनारूप गुण एक छे अने गुण अनंता छे पर्याय अनंता छे समय अनंता छे केमके अतीत काले अनंता समय गया अने अनागतकाले अनंता समय आवशे तथा वर्त्तमानकाले समय एक छे माटे अनेक पण छे पुद्गल द्रव्यना परमाणु अनंता छे ते एकेक परमाणुमां अनंतागुण पर्याय छे ते अनेक पणु छे अने सर्व परमाणुमां पुद्गलपणु ते एकज छे माटे एक छे

जीवद्रव्य अनंता छे एकेका जीवमां प्रदेश असंख्याता छे तथा गुण अनंता छे पर्याय अनंता छे ते अनेकपणु छे पण जीवितव्यपणुं सर्व जीवोनुं एकसरीखुं छे माटे एक पणु छे इहां शिष्य पूछे छे जे सर्व जीव एक सरीखा छे तो मोक्षना जीव सिद्ध परमानंदमयी देखाय छे अने संसारी जीव कर्म वश पड्या दुःखी देखाय छे अने ते सर्व जुदाजुदा देखाय छे ते केम? तेहने गुरु उत्तर कहे छे के निश्चयनये तो सर्व जीव सिद्ध समान छे माटेज सर्व जीव कर्म खपावीने सिद्ध थाय छे तेथी सर्व जीवनी सत्ता एक छे

फरि शिष्य पुछे छे के जो सर्व जीव सिद्ध समान कहो छो तो अभव्य जीव पण सिद्ध समान छे एम ठर्युं अने ते तो मोक्ष जता नथी तेहने उत्तर के अभव्यने कर्म चीकणा छे अने अभव्यमा परावर्त्त धर्म नथी तेथी सिद्ध थता नथी माटे तेनो एहवोज स्वभाव छे जे मोक्षे जवुंज नथी अने भव्य जीवमां परावर्त्त धर्म छे माटे कारण सामग्री मिले पलटण पामे गुणश्रेणी चढी मोक्षे करी सिद्ध थाय पण जीवना मुख्य आठ रुचक प्रदेश जे छे ते निश्चय नयथी भव्य

तथा अभव्य तथा सयना सिद्ध समान छे माटे सर्व जीवनी सत्ता एक सरीखी छे केमके ए आठ प्रदेशने बिलकुल कर्म लागता नथी ते "श्री आचारांग सूत्रनी श्री सिलांगाचार्य—कृत टीकाना लोकविजयाध्ययने प्रथमोद्दशके साख छे तिहांथी सविस्तर पणे जोवु"

हये सत् तथा असत् पक्ष कहे छे ए छद्रव्य ते स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल अने स्वभावपणे सत् एटले छता छे अने पर द्रव्य परक्षेत्र परकाल तथा परभावपणे असत् एटले अछता छे तेनी रीत थवायवाने अर्थे छए द्रव्यनो द्रव्य क्षेत्र काल भाव कहिये छैये

धर्मास्तिकायनो मूलगुण चलण सहायपणो ते स्वद्रव्य, अधर्मास्तिकायनो मूलगुण स्थिति सहायपणो ते स्वद्रव्य, आकाशास्तिकायनो मूल गुण अवगाहपणो ते स्वद्रव्य, कालद्रव्यनो मूल गुण वर्त्तनालक्षणपणो ते स्वद्रव्य, तथा पुद्गलनो मूलगुण पुरण गलनपणो ते स्वद्रव्य, अने जीवद्रव्यनो मूलगुण ज्ञानादिक चेतनालक्षणपणो ते स्वद्रव्य ए छद्रव्यनो स्वद्रव्यपणो कह्यो

हये स्वक्षेत्र ते द्रव्यनो प्रदेशपणो छे ते देखाडे छे तिहां एक धर्मास्तिकाय बीजो अधर्मास्तिकाय ए बे द्रव्यनो स्वक्षेत्र असंख्यात प्रदेश छे अने आकाशद्रव्यनो स्वक्षेत्र अनंतप्रदेश छे कालद्रव्यनो स्वक्षेत्र समय छे पुद्गलद्रव्यनो स्वक्षेत्र एक परमाणु छे ते परमाणु अनता छे जीवद्रव्यनो स्वक्षेत्र एक जीवना असख्याता प्रदेश छे

हये स्वकाल ते छए द्रव्यमा अगुरुलघुनोज छे अने ए छ द्रव्यना पोतपोताना गुण पर्याय ते सर्व द्रव्यनो स्वभाव

जाणवो एटले धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य क्षेत्र काल भाव छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी तथा अधर्मास्तिकाय द्रव्यमध्ये पण स्वद्रव्यादिक चार छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी एमज आकाशास्तिकायने विषे आकाशनाज स्वद्रव्यादिक चार छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी कालद्रव्यमां कालना द्रव्यादिक चार छे बीजा पांच द्रव्यना नथी अने पुद्गलना द्रव्यादिक चार ते पुद्गलमांज छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी तथा जीव द्रव्यना स्वद्रव्यादिक चार ते जीवमां छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी

जे द्रव्य ते गुण पर्यायवंत द्रव्यथी अभेदपर्याय होय ते द्रव्य कहियें तथा स्वधर्मनो आधारवंतपणो ते क्षेत्र कहियें अने उत्पाद व्ययनी वर्त्तना ते काल कहियें तथा विशेषगुण परिणति स्वभाव परिणति पर्यायप्रमुख ते स्वभाव कहियें

इहां १ भेदस्वभाव २ अभेदस्वभाव ३ भव्यस्वभाव ४ अभव्यस्वभाव ५ परमस्वभाव ए पांच स्वभाव कहेवा तेमां द्रव्यना सर्वधर्मने पोतपोताना स्वस्वकार्यने करवेकरी भेद स्वभाव छे अने अवस्थानपणे अभेदस्वभाव छे अणपलटण स्वभावें अभव्य स्वभाव छे तथा पलटण स्वभावे भव्यस्वभाव छे अने द्रव्यना सर्वधर्म ते विशेष धर्मने अनुयायीज परिणमे ते माटे ते परमस्वभाव कहियें ए सामान्यस्वभाव जाणवा ए रीते छए द्रव्य स्वगुणे सत् छे अने परगुणे असत् छे

हवे वक्तव्य तथा अवक्तव्यपणुं कहे छे ए छ द्रव्यमां अनंता गुण पर्याय ते वक्तव्य एटले वचने कहेवा योग्य छे अने अनंता गुण पर्याय ते अवक्तव्य एटले वचने कह्या जाय नहीं एवा छे तिहां केवली भगवंते समस्त भाव जीवा

तेने अनंत मे भागे जे वक्तव्य एटले कहेवा योग्य हता ते कह्या पछी तेनोपण अनंतमो भाग श्रीगणधर देवे सूत्रमां गुंथ्यो ते सूत्रमां गुंथ्या तेने असंख्यातमे भागे हमणां आगम रह्या छे ए छ द्रव्यनां आठ पक्ष कह्या

हवे नित्य तथा अनित्य पक्षथी चौभंगी उपजी ते कहे छे एक जेनी आदि नथी अने अंत पण नथी ते अनादि अनंत पहेलो भांगो अने जेनी आदि नथी पण अंत छे ते अनादिसांत बीजो भांगो तथा जेनी आदि पण छे अने अंत एटले छेहडो पण छे ते सादिसांत त्रीजो भांगो पछी जेहने आदि छे पण अंत नथी ते सादिअनंत नामे चोथो भांगो जाणवो

हवे ए चार भांगा छ द्रव्यमां फलावी देखाडे छे जीवद्रव्यमां ज्ञानादिक गुण ते अनादि अनंत छे नित्य छे अने भव्य जीवने कर्म साथे संबन्ध तथा संसारी पणानी आदि नथी पण सिद्धपणाय तेवारे अंत आव्यो तेथी ए अनादिसांत भांगो छे अने देवता तथा नारकी मनुष्यना भवकरवा ते सादिसांत भांगो छे अने जे जीव कर्म खपावी मोक्ष गया तेनी सिद्धपणे आदि छे अने पाछो संसारमां कोइ काले आववु नथी माटे अंत नथी तेथी ए सादि अनंत भांगो छे ए जीव द्रव्यमां चौभंगी कही जीवद्रव्यना चार गुण अनादि अनंत छे जीवने कर्मसाथे संयोग ते अनादि सांत छे केमके केवारे पण कर्म छूटेहें

हवे धर्मास्तिकायमां चार गुण तथा खंधपणो ते अनादि अनंत छे अने अनादि सांत भांगो नथी तथा १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ए सादि सांत भांगो छे तथा सिद्धना जीवमां धर्मास्तिकायना जे प्रदेश रह्या छे ते प्रदेश आश्र

पीने सादि अनत भांगो छे एवीज रीतें अधर्मास्तिकायमा पण चौभगी आणवी अने आकाशद्रव्यमां गुण तथा संध अनादि अनत छे बीजो भागो नथी अने १ देश २ प्रदेश तथा ३ अगुरु लघु सादि सांत छे तथा सिद्धना जीवनी साथे सम्बन्ध ते सादि अनंत छे

पुद्गल द्रव्यमा गुण अनादि अनत छे जीव पुद्गलनो सम्बन्ध अभव्यने अनादि अनत छे भव्यजीवने अनादि सात छे पुद्गलना खंध सब सादि सात छे जे खंध बांध्या ते स्थिति प्रमाणे रही खरे छे वली नवा बंधाय छे माटे सादि अनत भांगो पुद्गलमां नथी

कालद्रव्यमा गुण चार अनादि अनत छे पर्यायमां अतीत काल अनादि सात छे अने वर्तमानकाल सादि सांत छे अनागत काल सादि अनत छे ए कालनु स्वरूप ते सर्व उपचारथी छे ए रीतें कालद्रव्यमा चौभंगी कही

हवे द्रव्यक्षेत्र काल तथा भावमा चौभंगी कहे छे जीवद्रव्यमा स्वद्रव्यथी ज्ञानादिक गुण ते अनादि अनत छे स्वक्षेत्रे जीवना प्रदेश असख्याता छे ते सादि सांत छे तसोद्वर्त्तनापणे फरे छे ते माटे अथवा अवगाहना माटे सादि सात छे पण छतीपणे तो अनादि अनंत छे स्वकाल अगुरुलघुने गुणे अनादि अनत छे अने अगुरुलघु गुणनो उपजवो तथा विणशवो ते सादि सान्त छे तथा स्वभाव गुणपर्याय ते अनादि अनत छे अने भेदान्तरे अगुरुलघु ते सादि सात छे

धर्मास्तिकायमां स्वद्रव्य जे चलण सहाय गुण ते अनादि अनंत छे अने स्वक्षेत्र असंख्यात प्रदेश लोकप्रमाण छे ते अवगाहना पणे सादि सात छे स्वकाल ते अगुरुलघु गुणे करी अनादि अनंत छे अने उत्पाद व्यय ते सादि सात छे

स्वभाव ते चार गुण अगुरुलघु अनादि अनंत छे १ खंध २ देश ३ प्रदेश ते अवगाहनाने प्रमाणे सादि सांत छे एम अधर्मास्तिकायना पण द्रव्यादि चार भांगा आणवा तथा आकाशास्तिकायमां स्वद्रव्य अवगाहना दान गुण ते अनादि अनंत छे अने स्वक्षेत्र लोकालोक प्रमाण अनंत प्रदेश ते अनादि अनंत छे स्वकाल ते अगुरुलघु गुण सर्वथा पणे अनादि अनंत छे अने उपजवे तथा विणसवे सादि सांत छे स्वभाव ते चार गुण तथा खंध अने अगुरुलघु ते अनादि अनंत छे तथा देश प्रदेश ते सादिसांत छे ते आकाश द्रव्यना बे भेद छे एक चौदराजलोकनो खंध लोकाकाश ते सादिसांत छे बीजो अलोकाकाशनो खंध ते सादि अनंत छे

काल द्रव्यमां स्वद्रव्य जे नव पुराणवर्त्तना गुण ते अनादि अनंत छे स्वक्षेत्र समय काल ते सादिसांत छे केमके वर्त्तमान समय एक छे ते माटे तथा स्वकाल ते अनादि अनंत छे स्वभाव ते गुण चार अने अगुरुलघु अनादि अनंत छे अतीत काल अनादि सांत छे अने वर्त्तमान काल सादि सांत छे अनागत काल सादि अनंत छे

पुद्गल द्रव्यमां स्वद्रव्य ते द्रव्यपणे जे पूर्णगलन धर्म ते अनादि अनन्त छे अने स्वक्षेत्र परमाणु ते सादिसांत छे स्वकालस्थिति अगुरुलघु गुण ते अनादि अनंत छे अगुरुलघुनो उपजवो विणशवो ते सादि सांत छे स्वभाव ते गुण चार अनादि अनंत छे वर्णादिपर्याय चार एटले वर्ण गंध रस स्पर्श ते सादि सांत छे ए द्रव्यादि चारमां चोभंगी कही

हवे छ द्रव्यना संबन्ध आश्री चोभंगी कहे छे, तिहां प्रथम आकाशद्रव्य छे तेमां अलोकाकाशमां कोइ द्रव्य नथी, अने लोकाकाशमां छ द्रव्य छे, तिहां लोकाकाश द्रव्य तथा बीजुं धर्मास्तिकायद्रव्य अने त्रीजु अधर्मास्तिकायद्रव्य

ते अनादि अनंत संबंधी छे जे लोकाकाशना एकेक प्रदेशमां धर्मद्रव्य तथा अधर्मद्रव्यनो एकेक प्रदेश रह्यो छे तेपण क्यारे विछडसे नही माटे अनादि अनंत संबंधी छे आकाश क्षेत्रलोकसर्व अने जीवद्रव्यनो अनादि अनंत संबंध छे, अने संसारी जीव कर्म सहित तथा लोकना प्रदेशनो सादि सांत संबन्ध छे लोकांत सिद्धक्षेत्रना सिद्धजीवोनो आकाश प्रदेश साथे सादि अनंत संबन्ध छे, लोकाकाश अने पुद्गल द्रव्यनो अनादि अनंत संबन्ध छे आकाश प्रदेशनी साथे पुद्गल परमाणुनो सादि सांत संबन्ध छे एम आकाश द्रव्यनी परे धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकायनो पण सर्व संबन्ध जाणवो जीव अने पुद्गलना संबंधमां अभव्य जीवने पुद्गलनो अनादि अनंत संबंध छे केमके अभव्य जीवना कर्म क्यारें खपशे नही माटे अने भव्य जीवने कर्मनुं लागवुं अनादि कालनुं छे पण ते क्यारेक छुटशे माटे भव्य जीवने पुद्गल संबंध अनादि सांत छे तथा निश्चे नयकरी छ द्रव्य स्वभाव परिणाम परिणम्या छे ते परिणामी पणो सदा शाश्वतो छे ते माटे अनादि अनंत छे अने जीव तथा पुद्गल बेहु द्रव्य मलि संबंध भाव पामे छे ते पर परिणामी पणो छे ते परपरिणामिपणो अभव्य जीवने अनादि अनंत छे अने भव्य जीवने अनादि सांत छे अने पुद्गलनो परिणामी पणो ते सत्तायें अनादि अनंत छे अने पुद्गलनो मिलवो विछडवो ते सादि सांत छे एटले जीव द्रव्य पुद्गल साथे मिल्यो सक्रिय छे अने पुद्गल कर्मथी रहित थाय तेवारें जीव द्रव्य अक्रिय छे अने पुद्गल द्रव्य सदा सक्रिय छे

हवे एक, अनेक-पक्षथी निश्चे ज्ञान कहेवाने नय कहे छे, सर्व द्रव्यमां अनेकस्वभाव छे, ते एक वचनथी कह्या जाय नही माटे मोटो मार्ग नय करी संक्षेप पणे कहे छे, तिहां मूल नयना बे भेद छे एक द्रव्यार्थिक बीजो पर्याया

थिक तेमां उत्पाद व्यय पर्याय गौण पणे अने प्रधान पणे द्रव्यनो गुण सत्ताने ग्रहे ते द्रव्यार्थिकनय कहियें तेना दश
मेद छे १ सर्व द्रव्यनित्य छे ते नित्यद्रव्यार्थिक २ अगुरु लघु अने क्षेत्रनी अपेक्षा न करे मूल गुणने पिंडपणे ग्रहे ते
एकद्रव्यार्थिक ३ ज्ञानादिक गुणे सर्व जीव एकसरीखा छे माटे सर्वने एक जीव कहे स्वद्रव्यादिकमे ग्रहे ते सत् द्रव्या
र्थिक जेम सत् लक्षणं द्रव्य ४ द्रव्यमां कहेवा योग्य गुण अंगीकार करे ते वक्तव्य द्रव्यार्थिक ५ आत्माने अज्ञानी
कहेवुं ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक ६ सर्व द्रव्य गुणपर्याय सहित छे एम कहवुं ते अन्वय द्रव्यार्थिक ७ सर्व जीवद्रव्यनी मूल
सत्ता एक छे ते परम द्रव्यार्थिकनय ८ सर्व जीवना आठ प्रदेश निर्मल छे ते शुद्ध द्रव्यार्थिकनय ९ सर्व जीवना असं
ख्यात प्रदेश एकसरीखा छे ते सत्ता द्रव्यार्थिकनय १० गुणगुणी द्रव्य ते एक छे ते परमभावग्राहक द्रव्यार्थिक
जेम आत्मा ज्ञानरूप छे इत्यादिक ए द्रव्यार्थिक नयना दश मेद कह्या

हवे पर्यायार्थिक नयना छ मेद कहे छे जे पर्यायने ग्रहे ते पर्यायार्थिक नय कहियें, तेना छ मेद छे १ द्रव्यपर्याय
ते जीवने भव्यपणुं तथा सिद्धपणुं कहेवुं २ द्रव्यव्यंजनपर्याय ते द्रव्यनुं प्रदेशमान ३ गुणपर्याय जे एक गुणथी
अनेकता थाय जेम धर्माधर्मादि द्रव्य पोताना चलण सहकारादि गुणथी अनेक जीव तथा पुद्गलने सहाय करे ४ गुण
व्यंजन पर्याय जे एक गुणना घणा मेद छे ५ स्वभाव पर्याय ते अगुरु लघु पर्यायथी जाणवुं ए पांच पर्याय सर्व द्रव्यमां
छे अने छट्ठो विभाव पर्याय ते जीव पुद्गल ए बे द्रव्य मां छे तिहां जीव जे चार गतिना नवा नवा भव करे ते जीवमां
विभाव पर्याय तथा पुद्गलमां खंध पणुं ते विभाव पर्याय जाणवो

हवे पर्यायना बीजा छ भेद कहे छे १ अनादि नित्यपर्याय ते जेम पुद्गल द्रव्यनो मेरु प्रमुख २ सादि नित्य पर्याय ते जीव द्रव्यनुं सिद्धपणु ३ अनित्यपर्याय ते समय समयमा द्रव्य उपजे विणसे छे ४ अशुद्ध अनित्यपर्याय ते जन्म मरण थाय छे तेणे करी कहेवुं ५ उपाधिपर्याय ते कर्म संबंध ६ शुद्धपर्याय जे मूलपर्याय सर्व द्रव्यना एक सरीखा छे ए पर्यायार्थिकनुं स्वरूप कह्युं

हवे सात नय कहे छे १ नैगम, २ संग्रह, ३ व्यवहार, ४ रुजुसूत्र ५ शब्द ६ समभिरूढ ७ एवभूत—ए सात नयना नाम जाणवां, तेमां पहेलो नैगम नय कहे छे नथी एक गमो ते नैगम कहियें गुणनो एक अंश उपनो होय तो नैगम नय कहियें दृष्टान्त—जेम कोइक मनुष्यने पायली लाववानो मन थयो तेवारें जंगलमां लाकडु लेवा चाल्यो रस्तामां कोइक मनुष्य मल्यो तेणें पूछ्युं तु क्यां जाय छे तेवारें तेणें कह्युं के पायली लेवा जाउ छुं ते पायली तो हजी घडी नथी पण मनमा चिंतवी ते [illegible] एम गण्युं तेम नैगम नय सर्व जीवने सिद्ध समान कहे केमके सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश निर्मल सिद्ध रुप छे तेथी एक अंशें सिद्ध छे ते माटे सिद्ध समान सर्व जीव कह्या ते नैगम नयना त्रण भेद छे १ अतीत नैगम २ अनागत नैगम ३ वर्तमान नैगम ए नैगम नय कह्यो

हवे संग्रह नय कहे छे संसाग्रहे ते संग्रह जे एक नाम लीधोथी सर्व गुण पर्याय परिवार सहित आवे ते संग्रहनय जाणवो तेनो दृष्टान्त—जेम कोइक मनुष्ये प्रभातें दातण करवाने अर्थे पोताना घरना बारणे बेशीने चाकर पुरुषने कह्यु जे दातण लइ आवो तेवारें ते चाकर मनुष्य पाणीनो लोटो तथा रुमाल अने दातण एम सर्व चीज लइ आव्यो

हवे शेठें तो एक दातण नाम छइने मगाव्यु हतुं पण सर्वनो संग्रह करी चाकर लेइ आव्यो तेमज द्रव्य एवुं नाम कह्युं तो द्रव्यना गुण पर्याय सर्व आव्या ए संग्रह नयना बे भेद छे एक जे द्रव्य पणो सामान्य पणे बोलतां जीव तथा अजीव द्रव्यनो भेद पड्यो नहीं ते पेहेलो सामान्य संग्रह तथा बीजो विशेषताने अंगीकार करे छे जे जीव द्रव्य एम कह्युं तो अजीव सर्व टल्या ते विशेष संग्रह

हवे व्यवहार नय कहे छे जे बाह्यस्वरूप देखीने भेदनी वेहेचण करे अने जे बाहेर देखता गुणनेज माने पण अंतरंग सत्ता न माने एटले ए नयमां आचार क्रिया मुख्य छे अंतरंग परिणामनो उपयोग नथी केमके नैगम तथा संग्रह नय तो ज्ञान रूपध्यानना परिणाम विना अंश तथा सत्ता माही छे तेम इहां करणी मुख्य छे ते व्यवहार नय पणो जीवनी व्यवस्था अनेक प्रकारे छे तिहां नैगम तथा संग्रह नय करी सर्व जीव सत्तायें एक रूप छे पण व्यवहार नयथी जीवना बे भेद छे एक सिद्ध बीजा संसारी ते वली संसारी जीवना बे भेद छे एक अयोगी चौदमा गुण ठाणा वाला तथा बीजा सयोगी ते सयोगीना बे भेद एक केवली बीजा छद्मस्थ, छद्मस्थना बे भेद एक क्षीणमोही बारमा गुण ठाणे वर्तता मोहनीय कर्म खपाव्युं ते बीजा उपशान्त मोह ते उपशान्त मोहना वली बे भेद एक अकषायी इग्यारमा गुणठाणाना जीव बीजा सकषायी ते सकषायीना व भेद छे एक सूक्ष्मकषायी दशमां गुण ठाणाना जीव बीजा बादर कषायी ते बादर कषायीना वली बे भेद छे एक श्रेणी प्रतिपन्न, बीजो श्रेणीरहित ते श्रेणीरहितना बे भेद एक अप्रमादी बीजो प्रमादी ते प्रमादीना बे भेद एक सर्वविरति बीजो देशविरति देशविरतिना बे भेद एक मति

परिणामि बीजा अप्रति परिणामि अप्रतिना बे भेद एक अप्रति समकेति बीजा अप्रति मिथ्यात्वी ते मिथ्यात्वीना बे भेद एक भव्य बीजा अभव्य ते भव्यना बे भेद एक भवीभेदी बीजा अभवीअभेदी एवी रीते जे जीव जेवो देखाय तेने तेवो माने ए व्यवहार नय छे एमज पुद्गलना भेद करवा ते कहे छे पुद्गल द्रव्यना बे भेद छे एक परमाणुं, बीजो खंध, खंधना बे भेद एक जीवने लागा ते जीव सहित बीजा जीव रहित ते घडो प्रमुख अजीवनो खंध हवे जीव सहित खंधना बे भेद छे एक सूक्ष्म खंध बीजो बादर खंध

हवा वर्गणानो विचार लखीये छैयें तिहां पुद्गलनी वगर्णा आठ छे १ औदारिकवर्गणा २ वैक्रियवर्गणा ३ आहारकवर्गणा ४ तेजसवर्गणा ५ भाषावर्गणा ६ उसासवर्गणा ७ मनोवर्गणा ८ कार्मणवर्गणा–ए आठ वर्गणानां नाम कह्यां बे परमाणु भेळाथाय त्यारे द्वयणुकखंध कहेवाय त्रण परमाणु भेळाथाय तेवारे त्र्यणुकखंध थाय एम संख्याता परमाणु मिळे संख्याताणुकखंध थाय तेमज असंख्याते असंख्याताणुकखंध थाय तथा अनंता परमाणु मिळे अनंताणुकखंध थाय ए खंध ते सर्व जीवने अग्रहण योग्य छे अने जेवारें अभव्यथी अनंत गुणअधिक परमाणु मेळाथाय तेवारें औदारिक शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय

एमज औदारिकथी अनंत गुणा अधिक वर्गणामां दल भेळा थाय तेवारें वैक्रिय वर्गणा थाय वळी वैक्रिय थकी अनंत गुणा परमाणु मिळे तेवारें आहारकवर्गणा थाय एम सर्व वर्गणाना एकेकथी अनंतगुणा अधिक परमाणु मिळे तेवारें ते वर्गणा थाय एटले पहेलीथी बीजी वर्गणा बीजीथी त्रीजी एम सातमी मनोवर्गणाथी आठमी कार्मणवर्गणामां अनंत

गुण परमाणु अधिक छे इहां १ औदारिक, २ वैक्रिय, ३ आहारक, ४ तैजस, ए चार वर्गणा बादर छे तेमां पांच वर्ण-बे गन्ध-पांच रस-आठ स्पर्श ए वीस गुण छे तथा १ भाषा २ उसास ३ मन ४ कार्मण ए चार वर्गणा सूक्ष्म छे एमां पांच वर्ण-ब गन्ध पांच रस-चार स्पर्श-ए सोळ गुण छे अने एक परमाणुमां एक वर्ण-एकगंध-एकरस-बे स्पर्श ए पांच गुण छे एम पुद्गल सघना अनेक भद छे

ए व्यवहार नयना छ भेद छे १ शुद्धव्यवहार ते आगला गुण ठाणानुं छोडवुं अने ऊपरना गुणठाणानुं ग्रहण करवुं अथवा ज्ञान-दर्शन-चारित्र गुण ते निश्चयनय एकरूप छे पण ते शिष्यने समजाववाने जूदा जूदा भेद कह्या ते शुद्ध व्यवहार छे २ जीवना अज्ञान राग द्वेष लाग्या छे त अशुद्ध पणुं छे माटे अशुद्ध व्यवहार ३ जे पुण्यनी क्रिया करवी ते शुभ व्यवहार ४ जेथकी जीव पापरूप अशुभकर्म करे ते अशुभ व्यवहार ५ धन-घर-कुटुंब प्रत्यक्ष सर्व आपणाथी जूदा जूदा छे पण जीवें अज्ञानपणे आपणा करी जाण्या छे ते उपचरित व्यवहार ६ शरीरादिक परवस्तु यद्यपि जीवथी जुदी छे तोपण परिणामिक भाव ढोलीपणे एकठा मिली रह्या छे तेने जीव आपणा करी जाणे छे ते अनुप चरित व्यवहार जाणवो ए व्यवहार नय कह्यो

हवे ऋजु सूत्र नयनो विचार कहे छे जे अतीत काल अने अनागत कालनी अपेक्षा न करे पण वर्तमान काले जे वस्तु जेवा गुणें परिणमे वर्ते ते वस्तुने तेवेज परिणामे माने माटे ए नय परिणामग्राही छे जेम कोइक जीव गृहस्थ छे पण अतरंग साधुसमान परिणाम छे तो ते जीवने साधु कहे अने कोइक जीव साधुने वेषे छे पण मनना परिणाम

विषयाभिलाप सहित छे तो ते जीव अप्रतीत छे एम ऋजुसूत्रनुं मानवुं छे ते ऋजुसूत्रना बे भेद छे एक सूक्ष्म ऋजु सूत्र ते एम कहे जे सदा काल सर्व वस्तुमां एक वर्त्तमानसमय वर्ते छे एटले जे जीव गयाकालें अज्ञानी हतो अने अनागत कालें अज्ञानी भावें अज्ञानी थशे एम बेहुकालनी अपेक्षा न करे पण एक वर्त्तमान समये जे जेवो तेने तेवो कहे ते सूक्ष्म ऋजु सूत्र कहियें अने मोटा भावपरिणामग्रहे ते स्थूल ऋजुसूत्र नय जाणवो एटले ऋजुसूत्र नय कह्यो

हवे शब्दनय कहे छे जे वस्तु गुणवत अथवा निर्गुण ते वस्तुने नामकरी बोलावियें जे भाषावर्गणाथी शब्द पणें वचन गोचर थाय ते शब्द नय जे कारणे अरूपी द्रव्य वचनथी प्रकाशाय नहीं पण वचनथी कहेवा ते शब्द नय कहियें इहां जे शब्दनो अर्थ होय तेपणो जे वस्तुमां वस्तुपणे पामियें तेवारें ते वस्तु शब्दनय कहियें जेम घटनी चेष्टाने करतो होय ते घट ए शब्दनयमां व्याकरणथी नीपना अने बीजा पण सर्व शब्द लीधा ते शब्दनयना चार भेद छे १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ भाव—अने चार निक्षेपाना पण एहिज नाम छे

१ पहलो नाम निक्षेपो ते आकार तथा गुणरहित वस्तुने नाम करी बोलाववो जेम एक लाकडीनो कटको छेइने कोइके तेहने जीव एवुं नाम कर्युं ते नाम जीव जाणवुं जेम काली दोरीने सांपनी बुद्धियें करी घावहणे तेहने सापनी हिंसा लागे ए नाम सर्प थयुं एवीज रीते नाम तप अथवा नाम सिद्ध जेम यक्ष प्रमुखने सिद्धवड एम कही बोलावे छे ते नाम निक्षेपो कहियें ए सूत्र सार्थे छे

२ स्थापना निक्षेपो कहे छे जे कोइक वस्तुमा कोइक वस्तुनो आकार देखीने तेहने ते वस्तु कहे जेम चित्राम अथवा

काष्ट पाषाणनी मूर्त्ति तेने घोडा-हाथीनो आकार छे तो ते घोडा हाथी कहेवाय ते स्थापना जाणवी ए स्थापना निक्षेपो नाम निक्षेपें सहित होय जेम स्थापना जिन जिनप्रतिमा प्रमुख ते सद्भाव स्थापना पण होय अने असद्भाव स्थापना पण होय अकृत्रिम जिनप्रतिमा ते नंदीश्वरद्वीप प्रमुखने विषे, अने जेह श्रावकोनी जिनप्रतिमाते कृत्रिम ते सर्व स्थापना जाणवी जेम चित्रामनी स्त्री जिहां मांडी होय तिहां साधु रहे नहीं कारण के स्थापना स्त्री छे ते स्त्री तुल्य जाणवी तेमज जिनप्रतिमा जिनसमान जाणवी इहां कोइक अज्ञानी जीव कहे छे, जे स्थापनामां ज्ञानादि गुण नथी तेथी स्थापनाने मानवी पूजवी नहीं तेने उत्तर कहे छे के स्थापनारूप स्त्रीमां स्त्रीपणाना गुण नथी तो पण ते विकारनुं कारण थाय छे तेमज जिनप्रतिमा पण ध्याननु कारण छे अने जे एम पुछे के हिंसा थाय छे अने भगवंते तो दयाने धर्म कह्यो छे तेहने एम कहेवुं जे परदेशी राजा केसी गुरुने वांदवाने अर्थे बीजे दीवसे मोहोटा आडंबरथी आव्यो ते वंदनामां हिंसा थयी पण लाभ कारण गणतां थोडो न थयो बीजो मल्लिनाथजीयें छ मित्र प्रतिबोधवाने पुतलीनो दृष्टान्त कह्यो ते हिंसा तो घणी थयी पण ते लाभना कारणमां गणी छे एम भाव शुद्ध होय तिहां हिंसा लागती नथी अथवा कोइक एम कहे छे जे अमे आपणे स्थानके बेठा नमुत्थुणं कहिसु अमने लाभ थासे ते खरो पण भगवती सूत्रमां भगवानने वंदनाने अधिकारें तो तिहा जइ वंदना करवानुं फळ महोटुं कह्यु छे तथा निक्षेपाने अधिकारें एम कह्युं जे भाव निक्षेपो एकलो थाय नहीं पण नाम स्थापना तथा द्रव्य ए त्रण मिल्या भाव निक्षेपो थाय माटे स्थापना अवश्य मानवी हवे जे स्थापना न माने तेने कहियें के चित्रामनी मूर्त्तिने हिंसाना परिणामथी फाडे तेहने हिंसा लागे

छे तेमज जिनवरनाथ्याने जिनप्रतिमा पूजतां लाभ थाय छे एम युक्ति करता तथा आगमनी साखे पण जिनप्रतिमाने जिनसमान माने ते आराधक अने जे जिनप्रतिमाने न माने तेणे स्थापना निक्षेपो उथाप्यो अने स्थापना उथापी तो द्रव्य तथा भाव निक्षेपो थापना विना थाय नहीं माटे द्रव्य तथा भाव पण उथाप्यो एम त्रण निक्षेपा उथाप्या तेवारे सिद्धान्त उथाप्यान माटे जे जिनप्रतिमाने नही माने ते विराधक जाणवो ते स्थापना इतर अने यावत् कथिक ए र मरे छे

२ द्रव्य निक्षेपो कहे छे, जेनो नाम पण होय तथा आकार थापना गुण पण होय अने लक्षण होय पण आत्मोपयोग न मिले ते द्रव्य निक्षेपो जाणवो एटले अज्ञानी जीव ते जीव स्वरूपना उपयोग विना द्रव्य जीव छे "अणुवओगोदव्वं" इति अनुयोगद्वारवचनात् यली कर्युं छे जे सिद्धान्त वांचता पूछतां पद अक्षर मात्रा शुद्ध अर्थ करे छे अने गुरुमुखे सद्दहे छे ते पण शुद्ध निश्चें पोतानी सत्ता ओलख्या विना सर्व द्रव्य निक्षेपामा छे जे भाव विना द्रव्यपणो छे ते पुण्यबंधनुं कारण छे पण मोक्षनुं कारण नथी एटले जे करणीरूप कष्ट तपस्या करे छे अने जीव अजीव पदार्थनी सत्ता ओळखी नथी तेने भगवती सूत्रमां अव्रती तथा अपच्चक्खाणी कह्या छे तथा जे एकली बाह्य करणी करे छे अने पोते साधु कहेवाय छे ते मृषा वादी छे एम उत्तराध्ययन सूत्रमां कह्यु छे "नमुणीरण्णवासेण" एवचनें "नाणेणय मुणी होइ" एवचनथी जे ज्ञानवान ते मुनि छे अने जे अज्ञानी ते मिथ्यात्वी छे तथा कोइक गणितानुयोगना नरक देवलोकना बोल भणता यकि श्रावकनो आचार जाणीने कहे जे अमे ज्ञानी छैयें ते पण ज्ञानी नथी पण ये द्रव्य गुण

पर्याय जाणे तेने ज्ञानी कहियें श्रीउत्तराध्ययने मोक्षमार्गे कह्यो छे गाथा "एयं पञ्चविहनाणं दव्वाणयगुणाणय, पज्जयाणं सव्वेसिंप नाण नाणी हिं देसियं ॥ १ ॥ माटे वस्तु सत्ता जाण्या विना ज्ञानी समजवुं नही अने नवतत्व ओलखे ते समकेति अने पढ्या ज्ञान दर्शन विना जे कहे के अमे चारित्रिआ छैयें ते पण मृषावादी छे कारण के श्रीउत्तराध्ययन सूत्र मध्ये कह्युं छे के "नाणं दंसण नाणं नाणेण विना न हुंति चरण गुणा" ए वचन छे तेमाटे आज केटलाक ज्ञान हीन क्रियानो आडंबर देखाडे छे ते ठग छे तेहनो संग करवो नही ए बाह्य करणी अभव्यजीवने पण आवे माटे ए बाह्य करणी ऊपर राचवुं नही अने आत्मानुं स्वरूप ओलख्या विना सामायक पडिक्कमणां पच्चक्खाण करवां ते सर्व द्रव्य निक्षेपामां पुण्याश्रय छे पण संवर नथी श्रीभगवती सूत्र मध्ये कह्युं छे "आया खलु सामाइयं" ए आलावाथी जाणजो तथा जीव स्वरूप जाण्या विना तप संयम पुण्य प्रकृति ते देवतानां भवनुं कारण छे "पुव तवेणं पुव संयमेणं देवलोए उववज्जंति नो चेवण आयभाववत्तव्याए" ए आलावो भगवतीमां कह्यो छे तथा जे क्रियालोपी आचारहीन छे अने ज्ञानहीन छे मात्र गच्छनी लाजें सिद्धान्त भणे वांचे छे मत पच्चक्खाण करे छे ते पण द्रव्य निक्षेपो जाणवो एम श्री अनुयोगद्वारमां कह्युं छे

जे इमे समणगुणमुक्कजोगी छकायनिरणुकंपा हयाइव उद्दामा गयाइव निरंकुसा घट्ठामट्ठा तुप्पोट्ठा ॥ पंडुरपडपाउरणा जिणाणमणाणाएसछंदा विहरिऊण उभओ काल आवस्सगस्स उवट्ठंति से तं लोगुत्तरियं दव्वावस्सयं ॥

अथ–जेने छकायनी दया नथी घोडानीपेरें उन्मद छे हाथीनीपेरें निरंकुश छे पोताना शरीरने घोयसां मसळतां

उजले कपडे शिणगार करी गच्छना ममत्वभावें माचतो स्वेच्छाचारी वीतरागनी आज्ञा भांजता जे तप क्रिया करे छे ते पण द्रव्य निक्षेपामां छे अथवा ज्योतिष वैद्यक करे छे अने पोताने आचार्य उपाध्याय कहेवरावीने लोकपासें महिमा करे छे ते पत्रीबंध खोटा रुपैया जेवा छे घणा भव भमसे माटे अवंदनीक छे ए साख उत्तराध्ययन मध्ये अनाथी मुनिना अध्ययन थकी जाणवी अने सूत्रना अर्थ गुरुमुखे सिख्याविना तथा नय प्रमाण जाण्या विना निश्चें आत्मानुं स्वरूप ओळख्या विना निर्युक्ति विना उपदेश आपे छे ते पोते तो संसारमां बुड्या छे पण जे तेमनी पासे बेसे छे तेमने पण संसारमां बुडावे छे एम प्रश्नव्याकरणसूत्र तथा अनुयोगद्वारसूत्रमां कह्यु छे "अजस्य चेव सोलसमं" इत्यादि अने भगवती सूत्रमां पण कह्यु छे "सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निजुत्तिमीसओ भणिओ, तइओ य निर वसेसो एस विही होइ अणुओगो" अने केटलाक एम कहे छे जे अमे सूत्र ऊपर अर्थ करिये छैयें तो निर्युक्ति तथा टीका प्रमुखनुं शुं काम छे तेपण मृषावाद छे केम के श्रीप्रश्नव्याकरणमां "वयणतियं लिंगतियं" इत्यादिक जाण्या विना अने नय निक्षेप जाण्या विना जे उपदेश आपे ते मृषावाद छे एम अनेक सूत्रमां कह्यु छे माटे बहुश्रुत पासे उपदेश सांभळवो श्री उत्तराध्ययन मध्ये बहुश्रुतने मेरुनी तथा समुद्रनी अने कल्पवृक्षादि सोळ उपमा दीधी छे ए द्रव्य निक्षेपो कह्यो

४ भावनिक्षेपो कहे छे जे नाम स्थापना अने द्रव्य ए त्रण निक्षेपा ते एक भावनिक्षेपा विना अशुद्ध छे जे नाम तथा आकार लक्षण गुण सहित वस्तु ते भाव निक्षेपो जाणवो उपओगोभाव इति वचनात् एटले पूजा दान शील

तप क्रिया ज्ञान ए सर्व भावनिक्षेपे सहित लाभनुं कारण छे इहां कोइ कइइजक मनना परिणाम रुद्र करीने जे करियें तेने भाव कहियें एम कहे छे ते झूटा छे ए तो सुत्रनी बाहिरे मिथ्यात्वी पण घणा करे छे ते गणावुं नहीं इहां सूत्रनी साखे वीतरागनी आज्ञा हेय उपादेयनी परिक्षा करी अजीवतत्व तथा आश्रवतत्व अने बन्धतत्व ऊपर हेय केहतां त्याग भाव अने जीवना स्वगुण जे संवर निर्जरा तथा मोक्षतत्व ऊपरें उपादेय परिणाम ते भाव कहिये एटले रूपी गुण ते द्रव्य निक्षेप छे अने अरूपीगुण ते भावनिक्षेप छे एटले मन वचन काया लेश्यादिक सर्व द्रव्य निक्षेपामां छे अने ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्य ध्यान प्रमुख सर्व गुण भावनिक्षेपामां छे ए भाव निक्षेपो ते नामस्थापना तथा द्रव्य सहित होय एटले चार निक्षेपा कह्या

हवे चार निक्षेपा पदार्थ ऊपर उतारी देखाडे छे नाम जीव ते चेतना अथवा मांचाने एक वाणने जीव कही बोलावे छे ते नाम निक्षेपे जीव, मूर्ति प्रमुख थापियें ते स्थापना जीव एकेंद्रीथी पचेंद्री पर्यंत सर्व जीव छे पण उपयोग मिले नहि ते द्रव्यजीव अने मूर्तिमां जीव स्वरूप ओलखी समकितना उपयोगमां छे ते भावजीव एम धर्मास्तिकायादिक द्रव्यमां पण जाणवुं नामथी धर्मास्तिकाय कही बोलाववो तेना नाम धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय एहवा अक्षर लखवा दृष्टांत कारणे कांइक वस्तु थापवी ते स्थापना धर्मास्तिकाय तथा धर्मास्तिकाय जे असंख्यातप्रदेशी धर्मद्रव्य छे ते द्रव्य धर्मास्तिकाय ए धर्मास्तिकायने जेवारें चलण सहाय गुणनी अपेक्षासहित ओलखियें ते भाव धर्मास्तिकाय

हवे कोइकनो साधु एहवो नाम छे ते नाम साधु अने स्थापना करियें ते स्थापनासाधु तथा जे पचमहाव्रत पाले

क्रिया अनुष्ठान करे सूत्रनो आधारलीये पण ज्ञानध्याननो जेवो उपयोग जोइये तेवो उपयोग न होय ते द्रव्यसाधु जे भाव संवरमोक्षनो साधक थइ भाव साधुनी करणी करे ते भाव निक्षेपे साधु कहिये

कोइकनो अरिहंत नाम छे ते नाम अरिहंत अने अरिहंतनी प्रतिमा ते थापना अरिहंत जेटलासुधी छद्मस्थ अवस्था मे द्रव्य अरिहंत अने केवलज्ञान पाम्या पछे लोकालोकनो भाव जाणे देखे ते भाव अरिहंत एम सिद्धमां पण कहेवो

कोइ जीवनो ज्ञान एहवो नाम अथवा भावें अजीवनो नाम ते नामज्ञान तथा जे ज्ञान पुस्तकमां लख्युं छे ते स्थापना ज्ञान ने उपयोग विना सिद्धांतनो भणवो अथवा अन्यमतिना सर्वशास्त्र भणवा तथा ज्ञशरीरादिक ते सर्व द्रव्यज्ञान ने भगवंतनुं आगमुं ते भावज्ञान

तथा कोइकनुं तप एहवुं नाम ते नामतप तथा पुस्तकमां तपनी विधीनुं लखन ते थापनातप अने पुण्यरूप मास क्षमणादिक करवा ते द्रव्यतप जे परवस्तु ऊपर त्यागनो परिणाम ते भावतप एम संवरादिक सर्वमा चार चार निक्षेपा जाणवा तथा श्रीअनुयोगद्वार मध्ये कह्युं छे—यतः "जत्थ य जं जाणिज्जा निक्खेवं निक्खिवे निरवसेसं ॥ जत्थ विय न जाणिज्जा चउक्कग निक्खिवे तत्थ ॥ १ ॥ ए चार निक्षेपा कह्या एटले शब्द नय कह्यो

हवे छठो समभिरूढ नय कहे छे जे वस्तुना केटलाक गुण प्रगट्या छे अने केटलाक गुण प्रगट्या नथी पण अवश्य प्रगटसे एहवी वस्तुने वस्तु कहे ते वस्तुना नामांतर एक करी जाणे जेम जीव चेतन तथा आत्मा एहनो एक अर्थ

कहे ते समभिरूढ नय कहियें ए नय एक अंश ओछी वस्तुने पूरे पूरी वस्तु कहे जेम तेरमो गुणठाणे केवली होय तेहने सिद्ध कहे ए नयना भेद बिलकुल नथी ए समभिरूढ नय कह्यो

हवे एवंभूत नय कहे छे जे वस्तु पोताने गुणे संपूर्ण छे अने पोतानी क्रिया करे छे तेने ते वस्तु कही बोलावे जेम मोक्षस्थानकें जे जीव पहोता तेनें सिद्ध कहे जेम पाणीथी भरेलो स्त्रीना माथा ऊपर आवतो जल धरण क्रिया करतो तेने घडो कहे ए एवं भूतनय कह्यो

हवे सात नयना दृष्टान्त श्रीअनुयोगद्वारसूत्रथी लखियें छैयें जेम कोइक पुरुषे कोइक बीजा पुरुषने पूछ्युं जे तमे किहां वसोछो तेवारें ते पुरुषे कह्युं हुं लोकमां वसुं छुं तेवारें अशुद्ध नैगमवाले पुछ्युं जे लोकना त्रण भेद छे १ अधो लोक २ तिर्छालोक ३ ऊर्ध्वलोक तेमां तुं किहां रहे छे तेवारें शुद्धनैगमें कह्युं जे तिर्छालोकमां रहुं छुं वलीपुछ्युं जे तिर्छालोकमां असंख्याता द्वीप समुद्र छे तेमां तुं कयाद्वीपमां रहे छे तेवारें विशुद्धनैगमें कह्युं जे जंबुद्वीपमां रहुं छुं ते जंबुद्वीपमां क्षेत्र घणा छे ते तेमा तुं कया क्षेत्रमा रहे छे तेवारें अतिशुद्धनैगम बोल्यो जे भरत क्षेत्रमां रहुं छुं ते क्षेत्रना छ खंड छे ते मांहेला कया खंडमां रहे छे तेवारें कह्युं जे मध्य खंडमां रहुं छुं एम क्रमे पूछतां छेले कह्युं जे आपणा देशमां रहुं छुं तेवारें फरी पुछ्युं जे देशमां तो नगरग्राम घणा छे तो तुं किहां रहे छे तेवारें कह्युं जे हुं अमुक गाममां रहुं छुं ते गाममां वली अमुक पाडो तथा अमुक घर बताव्युं तिहा सुधी नैगम नय जाणवो

अने संग्रह नयवालो बोल्यो जे मारा पोताना शरीरमां वसुं छु तथा व्यवहार नयवालो बोल्यो जे सथारे बेठो छु

तेटलाज विछानामां रहुं छुं अने ऋजुसूत्र नयवाळे कह्युं जे मारा आत्माना असंख्याता प्रदेशमा रहुं छुं पछी शब्द नय कहे जे मारा स्वभावमां रहुं छु तेमज समभिरूढ नय कहे जे हु मारा गुणमां रहु छु अने एवंभूतनयवादी कहे जे ज्ञान दर्शनगुणमां वसुं छुं ए दृष्टांत कह्यो तेम सर्व वस्तुमां कहेवुं,

तथा कोइके प्रदेशमात्र क्षेत्र अंगीकार करी पुछ्यु जे ए प्रदेश कया द्रव्यनो छे तेवारें नैगमनय बोल्यो जे छए द्रव्यनो प्रदेश छे केमके एक आकाश प्रदेशमध्ये छ द्रव्य मेळा छे तेवारे संग्रहनय बोल्यो जे काळ द्रव्य तो अप्रदेशी छे ते माटे सर्व लोकमां एक समय सरिखो छे पण ते एक आकाश द्रव्यना प्रदेशमां जूदो नथी माटे काळ विना पांच द्रव्यनो प्रदेश छे तेवारें व्यवहार नय बोल्यो के जे द्रव्य मुख्य देखाय छे तेहनो प्रदेश छे तेवारें ऋजूसूत्रनय बोल्यो के जे द्रव्यनो उपयोग देइ पुछियें ते द्रव्यनो प्रदेश छे जो धर्मास्तिकायनो उपयोग देइ पुछियें तो धर्मास्तिकायनो प्रदेश छे जो अधर्मास्तिकायनो उपयोग देइ पुछियें तो अधर्मास्तिकायनो प्रदेश छे तेवारें शब्दनय बोल्यो के जे द्रव्यनो नाम लइ पुछियें ते द्रव्यनो प्रदेश छे हवे समभिरूढ नय बोल्यो जे एक आकाश प्रदेश मध्ये धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश छे अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश छे अने जीवना अनंता प्रदेश छे पुद्गलना पण अनंता प्रदेश छे तेवारें एव भूत नय बोल्यो के प्रदेशने जे द्रव्यनी क्रिया गुण पर्याय अंगीकार करी देखियें ते समय ते प्रदेश ते द्रव्यनो गणियें ए प्रदेशमां सात नय कह्या

हवे जीवमां सात नय कहे छे प्रथम नैगमनयनी मते जे गुण पर्यायवंत शरीर सहित ते जीव एटले शरीरमां जे

बीजा पुद्गल तथा धर्मास्तिकायादिक द्रव्य छे ते सर्वं जीवमांज गण्या तेवारें संग्रहनय बोल्यो जे असंख्यात प्रदेशी ते जीव एटले एक आकाशना प्रदेश टल्या बीजा सर्वद्रव्य एमां गणाणा तेवारें व्यवहारनय बोल्यो जे विषयलेवी काम पात संभारे ते जीव इहां धर्मास्तिकाय–अधर्मास्तिकाय आकाश तथा बीजा पुद्गल सर्वं टल्या पण पांचेइन्द्री तथा मन अने लेश्या ए पुद्गल छे ते जीवमां गणाणा कारणके विषयादिकनो इंद्रियो लेछे ते जीवथी न्यारा छे पण इहां व्यवहार नय मते जीव भेळा लीधा छे तेवारें ऋजुसूत्रनय बोल्यो जे उपयोगवंत ते जीव इहां इंद्रियादिक सर्वं टल्या पण अज्ञान तथा ज्ञानना भेद टल्या नहीं हवे शब्द नय बोल्यो जे नामजीव स्थापनाजीव द्रव्यजीव भावजीव इहां जीवमां गुण–निर्गुणनो भेद पड्यो नहीं तेवारें समभिरूढ नय बोल्यो जे ज्ञानादि गुणवंत ते जीव तेवारें मतिज्ञान श्रुतज्ञान इत्यादिक साधक अवस्थाना गुण ते सर्वं जीव स्वरूपमां आव्या हवे एवंभूतनय बोल्यो जे अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंत चारित्र शुद्धसत्तावंत ते जीव ए नये जे सिद्ध अवस्थामां गुणवंता तेजग्रह्या ए सात नये जीव द्रव्य कह्यो

हवे सात नयें धर्म कहे छे नैगमनय बोल्यो जे सर्वं धर्म छे केमके सर्वं प्राणी धर्मने चाहे छे ए नय अंशरूप धर्मने धर्म एहवु नाम कहे हवे संग्रहनय बोल्यो जे वडेरायें आदर्यो ते धर्म एणे अनाचार छोड्यो पण कुलाचारने धर्म कह्यो व्यवहार नय बोल्यो जे सुखनु कारण ते धर्म एणे पुण्यकरणीने धर्म करी मान्यो ऋजुसूत्रनय मते जे उपयोग सहित वैरागरूप परिणाम ते धर्म कहियें ए नयमां यथा प्रवृत्ति करणना परिणाम प्रमुख सर्वं धर्ममां गण्यां ते मिथ्यात्वीने पण होय हवे शब्दनय बोल्यो जे धर्मनुं मूळ समकित छे माटे समकित तेज धर्म तेवारें समभिरूढनय बोल्यो

जे जीव अजीव नवतत्व तथा छ द्रव्यने ओळखीने जीव सत्ताध्यावे अजीवनो त्याग करे एहवो ज्ञान दर्शन चारित्रनो शुद्ध निश्चय परिणाम ते धर्म ए नये साधक सिद्धना परिणाम ते धर्म पणे लीधा एव भूतनय बोल्यो जे शुक्लध्यान रूपातीतना परिणाम क्षपकश्रेणी कर्म क्षयना कारण ते धर्म जे जीवनो मूळस्वभाव ते वस्तुधर्म जे मोक्षरूप कार्यने करे ते धर्म ए साते नयें धर्म कह्यो

हवे सात नयें सिद्धपणो कहे छे नैगमनयने मते सर्वजीव सिद्ध छे केमके सर्वजीवना आठरुचकप्रदेश सिद्ध समान निर्मळ छे माटे, संग्रहनय कहे जे सर्वजीवनी सत्ता सिद्धसमान छे पणे पर्यायार्थिकनयें करी कर्म सहित अवस्था ते टाळीने द्रव्यार्थिक नयें करी अवस्था अंगीकार करी तेवारें व्यवहारनय बोल्यो जे विद्या लब्धि प्रमुख गुणे करी सिद्ध थयो ते सिद्ध ए नये बाह्य तप प्रमुख अंगीकार कर्या हवे ऋजुसूत्रनय बोल्यो के जेणे पोताना आत्मानी सिद्धपणानी सत्ता ओळखी अने ध्याननो उपयोग पण तेज वर्ते छे ते समयें ते जीव सिद्ध जाणवो ए नये समकेति जीव सिद्ध समान छे एम कह्युं हवे शब्दनय बोल्यो जे शुद्ध शुक्लध्यान परिणाम नामादिक निक्षेपें ते सिद्ध तेवारें समभिरूढनय बोल्यो जे केवलज्ञान केवलदर्शन यथाख्यात चारित्र ए गुणे सहित ते सिद्ध जाणवा ए नयें तेरमा चउदमा गुणठाणाना केवलीने सिद्ध कह्या अने एवंभूतनय कहे छे के जेना सकळ कर्मक्षय थया लोकने अंते विराजमान अष्टगुण संपन्न ते सिद्ध जाणवा एरीते सिद्ध पर्दे सात नय कह्या एम सात नय मिल्या समकेति छे अने जे

एक नयने ग्रहण करे ते मिथ्यात्वी छे ए साते नयसंयुक्त ते वचन प्रमाण छे अने ए सात नयमां कोइपण नयने उथापे तेनुं वचन अप्रमाण छे

हवे प्रमाणनो विचार कहे छे प्रमाणना बे भेद छे एक प्रत्यक्षप्रमाण बीजुं परोक्षप्रमाण तेमां जे जीव पोताना उपयोगथी द्रव्यने जाणे ते प्रत्यक्ष प्रमाण कहियें जेम केवली छ द्रव्य प्रत्यक्ष प्रमाणे जाणे तथा देखे ते माटे केवळ ज्ञान ते सर्वथी प्रत्यक्ष ज्ञान छे अने मनपर्यवज्ञान ते मनो वर्गणा प्रत्यक्ष जाणे तथा अवधिज्ञान ते पुद्गल द्रव्यने प्रत्यक्ष जाणे माटे ए बे ज्ञान देशप्रत्यक्ष छे बीजुं छद्मस्थ ज्ञान ते सर्व परोक्ष प्रमाण छे

हवे परोक्ष प्रमाण कहे छे मतिज्ञाननो अने श्रुतज्ञाननो उपयोग परोक्ष प्रमाण छे केमके जे शास्त्रना बळथी जाणे ते परोक्ष प्रमाण कहियें ते परोक्ष प्रमाणना त्रण भेद छे १ अनुमाणप्रमाण २ आगमप्रमाण ३ उपमानप्रमाण तेमा अनुमाण एटले कोइक सहिनाण देखीने जे ज्ञान थाय जेम धुमाडो देखीने अग्निनुं अनुमान थाय अने आगम एटले शास्त्रनी साखथी जे वात जाणियें जेम देवलोक तथा नरक निगोद विगेरेनो विचार आगमथी जाणियें छैये ते आगम प्रमाण अने कोइक वस्तुनो दृष्टान्त आपीने वस्तुने ओळखाववी ते उपमान प्रमाण जाणवो ए प्रमाण कह्या हवे सत् असत् पक्षथी सप्तभंगी कहे छे

१ स्यात् केहतां अनेकांत पणे सर्व अपेक्षा लेइ जीवद्रव्यमा आपणो द्रव्य आपणो क्षेत्र आपणो काळ आपणो भाव एम आपणे गुण पर्यायें जीव छे तेम सर्व द्रव्य आपणे गुणपर्यायें छे ते स्यात् अस्ति नामा पहेलो भांगो थयो

२ जे जीयमां बीजा पांच द्रव्यना १ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काळ ४ भाव ते परद्रव्यना गुणपर्याय जीयमांनथी एटले पर द्रव्यना गुणनो नास्तिपणो सर्व द्रव्यमां छे ए स्यात् नास्ति बीजो भांगो थयो

३ द्रव्य स्वगुणे अस्ति अने परगुणे नास्ति ए बे भांगा एक समये द्रव्यमा छे जेम जे समये शुद्ध स्वगुणनी अस्ति छे तेज समये परगुणनी नास्ति पण छे माटे अस्ति नास्ति ए बेहुं भागा भेळा छे ते स्यात् अस्ति नास्ति त्रीजो भांगो थयो

४ अस्ति अने नास्ति ए बेहु भागा एक समयमां छे तो वचने करी अस्ति एटलो बोलतां असंख्याता समय लागे तेथी नास्ति भागो तेज वखते कहेवाणो नही अने जो नास्ति भांगो कह्यो तो अस्ति पणो नाव्यो माटे एकज अस्ति कहेतां थकां नास्तिपणो तेज समये द्रव्यमां छे ते नही कहेयाणो माटे मृषावाद लागे तेमज नास्ति कहतां अस्तिनो मृषावाद लागे माटे वचने अगोचर छे एक समयमां बेहु वचन बोल्या जाय नही केमके एक अक्षर बोलतां असं ख्याता समय लागे छे माटे वचनथी अगोचर छे ते स्यात् अवक्तव्य ए चोथो भागो कह्यो

५ ते अवक्तव्यपणो वस्तुमां अस्तिधर्मनो पण छे माटे स्यात् अस्ति अवक्तव्य पांचमो भांगो कह्यो

६ तेमज नास्ति धर्मनो पण अवक्तव्य पणो वस्तु मध्ये छे माटे स्यात् नास्ति अवक्तव्य छट्ठो भांगो जाणवो

७ ते अस्तिपणो तथा नास्तिपणो बेहु धर्म एक समये वस्तु मध्ये छे पण वचनथी अवक्तव्य छे माटे स्यात् अस्ति नास्ति युगपत् अवक्तव्य ए सातमो भांगो कह्यो

हवे ए सात भांगा नित्य तथा अनित्यपणमा लगाडे छे १ स्यात् नित्य २ स्यात् अनित्य ३ स्यात् नित्यानित्य ४

स्यात् अवक्तव्यं ५ स्यात् नित्य अवक्तव्यं ६ स्यात् अनित्य अवक्तव्य ७ स्यात् नित्यानित्य युगपत् अवक्तव्यं एमज एक अनेकना सात भांगा कहेवा तथा गुणपर्यायमां पण कहेवा केमके सिद्ध मध्ये नय नथी तोपण सप्तभंगीतो सिद्धमां छे

हवे सत्ता मोक्षसाधवाने त्रिभंगीयो कहे छे १ मिथ्यात्व दशा ते बाधकदशा २ समकित गुणठाणाथी मांडीने अयोगी केवली गुणठाणा सुधीसाधक दशा जाणवी ३ सर्वकर्मथी रहित ते सिद्धदशा १ ज्ञाननो जाणपणो ते जीवनो गुण २ तेनो ज्ञाता ते जीव ३ ज्ञेय ते सर्व द्रव्य १ ध्यान ते जीवना स्वरूपनो २ ते ध्याननो ध्याताजीव ३ ध्येय आत्मानो स्वरूप १ कर्त्ता ते जीव २ कर्मते एक मोक्ष बीजो बन्ध ३ क्रिया ते एक सवर बीजी आश्रय १ कर्म ते चेतनाने कर्म बंधना परिणाम २ कर्मनुं फल ते चेतनाने जे कर्म वेदवनापरिणाम ३ ज्ञान चेतना ते जीवनो स्वगुण ते आत्माना त्रण भेद छे १ अज्ञानी जीव शरीरादिक परवस्तुने आत्मबुद्धियें करीमाने ते पहेलो बहिरात्मा २ जे देह सहित जीव छे ते पण निश्चे सत्तागुण सिद्ध समान छे एटले पोताना जीवने सिद्ध समान करी ध्यावे ते बीजो अतर आत्मा जाणवो ३ कर्मखपावी केवल ज्ञानपाम्या ते अरिहंत तथा सिद्ध सर्व परमात्मा जाणवा ए त्रिभंगीनो विचार कह्यो एटले आठ पक्षनो विचार कह्यो

हवे एक द्रव्य मध्ये ■ सामान्य गुण छे ते कहे छे पहेलो अस्तित्व ते जे छ द्रव्य आपणा गुण पर्याय प्रदेशे करी अस्ति छे तेमां धर्म अधर्म आकाश अने जीव ए चार द्रव्यमां तीन द्रव्यनो असंख्याता प्रदेश मिल्या खंध थाय छे अने आकाशनो अनंत प्रदेशनो खंध थाय अने पुद्गलमां खंध थवानी शक्ति छे माटे ए पांच द्रव्य अस्तिकाय छे अने

छट्ठो काळ द्रव्यनो समय कोइ कोइथी मिलतो नथी केमके एक समय विणस्या पछे बीजो समय आवे छे माटे काळ अस्तिकाय नथी ए द्रव्यमां अस्तित्व पणो कह्यो

२ वस्तुत्व केहता वस्तुपणो कहे छे ते द्रव्य छए एकठा एक क्षेत्र मध्ये रह्या छे एक आकाश प्रदेशमां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो छे तथा अधर्मास्तिकायनो पण एक-प्रदेश रह्यो छे अने जीव अनताना अनता प्रदेश रह्या छे पुद्गल परमाणु अनता रह्या छे ते सर्व पोतानी सत्ता लीधा थका रह्या छे पण कोइ द्रव्य कोइ द्रव्य साथे मिळी जातो नथी ते वस्तु पणो

३ द्रव्यत्व केहतां द्रव्यपणो ते सर्व द्रव्यपोतपोतानी क्रिया करे एटले धर्मास्तिकायमां चलणगुण ते सर्व प्रदेश मध्ये छे सदा काळे पुद्गल तथा जीवने चलाववा रूपक्रिया करे छे इहां कोइ पुछे जे लोकान्त सिद्धक्षेत्रमां धर्मास्तिकाय छे ते सिद्धना जीवने चलाववापणो करती नथी ते केम? तेने उत्तर कहे छे जे सिद्धना जीव अक्रिय छे माटे चालता नथी पण ते क्षेत्रमां जे सूक्ष्म निगोदना जीव तथा पुद्गल छे तेहने धर्मास्तिकाय चलावे छे माटे पोतानी क्रिया करे छे तेमज अधर्मास्तिकाय जीव तथा पुद्गलने स्थिर राखवानी क्रिया करे छे तथा आकाशद्रव्य ते सर्व द्रव्यने अवगाहना रूपकार्य करे छे इहां कोइ पूछे के अलोकाकाशमां तो बीजु कोइ द्रव्य नथी तो अलोकाकाश कया द्रव्यने अवगाह दान आपे छे तेने उत्तर कहे छे जे अलोकाकाशमां अवगाह करवानी शक्ति तो लोकाकाश जेवीज छे परतु तिहां

अवगाहनो दान छेनार द्रव्य कोइ नथी माटे अवगाहदान करतो नथी अने पुद्गल द्रव्य मिलया विखरवारूप क्रिया करे छे तथा काळद्रव्य वर्तनारूप क्रिया करे छे अने जीवद्रव्य ज्ञान लक्षण उपयोगरूप क्रिया करे छे एम सर्व द्रव्य पोताने परिणामी स्वसत्तानी क्रिया करे छे ए द्रव्यत्वपणो कह्यो

४ प्रमेयत्व केहता प्रमेयपणो, जे छ द्रव्यमा प्रमेयपणो छे तेनो प्रमाण केवली पोताना ज्ञानथी करे छे जे धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय एकेक द्रव्य छे अने जीव द्रव्य अनंता छे तेहनी गणति कहे छे संज्ञी मनुष्य संख्याता छे असंज्ञी मनुष्य असंख्याता छे नारकी असंख्याता छे देवता असंख्याता छे तिर्यच पंचेन्द्री असंख्याता छे बेंद्री असंख्याता छे तेन्द्री असंख्याता चौरेंद्री असंख्याता छे ते थकी पृथ्वीकाय असंख्याता अपकाय असंख्याता तेउकाय असंख्याता वायुकाय असंख्याता प्रत्येक वनस्पति जीव असंख्याता ते थकी सिद्धना जीव अनंता ते थकी बादर निगोदना जीव अनंत गुणा एटले बादर निगोद ते कंदमूल आदु सूरण प्रमुख एहने सुइने अग्रभागें अनंता जीव छे ते सिद्धना जीवथी अनंत गुणा छे अने सूक्ष्म निगोद सर्वथी अनंत गुणा छे ते सूक्ष्म निगोदनो विचार कहे छे जेटला लोकाकाशना प्रदेश छे तेटला गोला छे ते एकेक गोलामा असंख्याता निगोद छे निगोद शब्दनो अर्थ ए छे जे अनंता जीवनो पिंडभूत एक शरीर तेहने निगोद कहियें ते एकेकी निगोद मध्ये अनंता जीव छे ते अतीत कालना सर्व समय तथा अनागतकालना सर्व समय अने वर्तमान कालनो एक समय तेने भेला करी अनंत गुणा करियें एटला एक निगोदमां जीव छे एटले अनंता जीव छे ए संसारी जीव एकेकाना असंख्याता प्रदेश छे अने एकेका

प्रदेशे मनंतिकर्मवर्गणा लागी छे ते एकेक वर्गणा मध्ये अनंता पुद्गल परमाणु छे एम अनंता परमाणु जीवसाथे लाग्या छे ते थकी अनंत गुणा पुद्गल परमाणु जीवथी रहित छुटा छे

गोलाय असंखिज्जा, असंखनिगोयओ हवइ गोलो । इक्किक्कम्मि निगोए, अनंतजीवा मुणेयव्वा ॥१॥

अर्थ—लोकमांहे असंख्याता गोळा छे एकेका गोळा मध्ये असंख्याति निगोद छे एकेक निगोदमां अनंता जीव छे

सत्तरससमहिआ, किर इगाणुपाणुम्मिहुंति खुड्डभवा । सगतिससयतिहुत्तर, पाणु पुण इगमुहुत्तंमि ॥१॥

अर्थ—निगोदिया जीव ते मनुष्यना एक श्वासमां सत्तर १७ भव झाझेरा करे छे अने सडत्रीससो तिहुतेर ३७७३ श्वासोश्वास एक मुहूर्तमा थाय

पणसट्ठिसहस्स पणसय, छत्तिसा इगमुहुत्त खुड्डभवा । आवलियाण दो सय, छपन्ना एगखुड्डभवे ॥ १ ॥

अर्थ—निगोदना जीव एक मुहूर्तमा ६५५३६ भव करे अने निगोदनो एक भव २५६ आवळीनो छे क्षुल्लक भवनो ए प्रमाण छे

अत्थि अनंताजीवा, जेहिं न पत्तो तसाइपरिणामो । उववज्जंति चयंति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेव ॥ १ ॥

अर्थ—निगोदमां अनंता जीव एहवा छे जे जीव त्रस पणो पहेला क्यारें पाम्या नथी अनंतो काळ पूर्वे गयो अने अनंतो काळ जाशे पण ते जीव वारवार तिहांज उपजे छे अने तिहांज चवेछे एम एक निगोदमां अनंता जीव छे ते

निगोदना बे भेद छे एक व्यवहारराशीनिगोद अने बीजो अव्यवहारराशीनिगोद तेमां जे बादरएकेंद्रीपणो भावें त्रसपणो पामीने पाछा निगोदमां आइ पड्या छे ते निगोदिया जीवने व्यवहार राशीया कहियें अने जे जीव कोइपण काले निगोदमांथी निकल्या नथी ते जीव अव्यवहारराशीया कहियें अने इहां मनुष्यपणाथी जेटला जीव कर्म खपा वीने एक समयमां मोक्ष जाय छे तेटला जीव तेज समये अव्यवहार राशी सूक्ष्म निगोदमांथी निकळीने उचां आवे छे जो दशजीव मोक्षजायतो दशजीव निकले कोइक वेलाए भव्यजीव ओछा निकले तो ते ठेकाणे एक बे अभव्य निकले पण व्यवहारराशीमा जीव कोइ वधे घटे नही एवा निगोदना असंख्याता लोकमांहेला गोलाते छ दिशीना आव्या पुद्गलने आहारादि पणे लेछे ते सकल गोला कहेवाय अने लोकने अंतना प्रदेशे जे निगोदना गोला रह्या छे तेने त्रण दिशीना आहारनी फरसना छे माटे विकल गोला कहियें ए सूक्ष्म निगोदमां पांच थावरना सूक्ष्म जीव ते सर्व लोकमां काजलनी कुपलीनीपेरे भर्यायका व्यापी रह्या छे अने साधारणपणो ते मात्र एक वनस्पतिमांज छे पण चार थावरमां नथी ए सूक्ष्म निगोदमां अनंतु दुःख छे तेनुं उदाहरण कहे छे सातमी नरकनु आवष्य तेत्रीस सागरोपमनुं छे तेत्रीस सागरोपमना जेटला समय थाय तेटला वखत सातमी नरकमां उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपमने आयुषे कोइक जीव उपजे तेटला भवमां जेटलु छेदन भेदननुं दुःख थाय ते सर्व एकठुं करियें तेथी अनंतगुणुं दुःख निगोदना जीव एक सम यमां भोगवे छे दृष्टान्त जेम कोइक मनुष्यने साडा त्रण क्रोड लोमनी सुइने अग्निथी तपावीने कोइक देवता समकाले घोमे तेने जे वेदना थाय तेथी अनंत गुणी वेदना निगोद मध्ये छे अने भव्य जीवने निगोदनुं कारण ते अज्ञान दशा

छे माटे तेहनो त्याग करो ए निगोदनो विचार कह्यो ए सर्व प्रमेयनो प्रमाता आत्मा पोताना ज्ञान गुणे करी प्रमेयनो प्रमाण करे ए प्रमेयत्व पणो कह्यो

५ सत्यपणो ते छ द्रव्य एक समयमा उपजे विणसे छे अनेस्थिरपणे छे उत्पाद व्यय ध्रुवपणो तेहिज सत्पणो (उत्पाद व्ययध्रुवयुक्तं सत्) इति तत्वार्थ वचनात् ते विस्तारथी कहि देखाडे छे जे धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेश छे तिहां एक प्रदेशमां अगुरुलघु असंख्यातो छे अने बीजा प्रदेशमां अनंतो अगुरुलघु छे त्रीजा प्रदेशमा असंख्यातो अगुरु लघु छे एम असंख्याता प्रदेशमां अगुरुलघु पर्याय घटतो वधतो रहे छे ते अगुरुलघु पर्याय चल छे ते जे प्रदेशमां असंख्यातो छे ते प्रदेशमां अनंतो थाय छे अने अनंताने ठेकाणे असंख्यातो थाय छे एम लोकप्रमाण असंख्यात प्रदेशमां सरीखो समकाले अगुरु लघु पर्याय फिरे छे ते जे प्रदेशमां असंख्यातो फिटीने अनंतो थाय छे ते प्रदेशमां असंख्यातपणानो विनाश छे अने अनंत पणानो उपजवो छे अने अगुरुलघु पणे गुण ध्रुव छे एम उपजवो विणसवो अने ध्रुव ए त्रणे परिणाम छे

अधर्मास्तिकायमां पण ए त्रणे परिणाम असंख्यात प्रदेशें सदा समय समयमां परिणामी रह्या छे तेमां पण उपजे विणशे अने थिररहे छे एम आकाशना अनंता प्रदेशमा पण एक समयें त्रण परिणाम परिणमे छे अने जीवना असंख्याता प्रदेश छे ते मध्ये पण उपजे विणशे थिर रहे तथा पुद्गल परमाणुमा पण समय समय थाय छे अने काळनो वर्तमान समय फिटीने अतीत काळ थाय छे तो ते समयमां वर्तमानपणानो विनाश छे अने अतीतपणानो उपजवो छे

काळ पणे ध्रुव छे ए स्थूल थकी उत्पाद व्यय ध्रुवपणो कह्यो अने वस्तुगते मूलपणे ज्ञेयने पलटवे ज्ञाननो पण ते भासन पणे परिणमवो थाय ते पूर्व पर्यायना भासननो व्यय अने अभिनव ज्ञेयना पर्याय भासननो उत्पाद तथा ज्ञान पणानो ध्रुव ए रीते सर्व गुणना धर्मनी प्रवृत्तिरूप पर्यायनो उत्पाद व्यय श्रीसिद्ध भगवन्तमां पण थइ रह्यो छे एमज धर्मास्तिकायना प्रदेशें जे क्षेत्रगत असंख्याता पुद्गल तथा जीवने पहेले समय चलण सहायी पणो परिणमतो हतो अने बीजे समय अनन्त परमाणु तथा अनन्ता जीव प्रदेशने चलण सहायी थयो तेवारें असंख्याता चलण सहायनो व्यय अने अनंता चलण सहायनो उपजवो अने गुणपणे ध्रुव एम धर्मद्रव्य मध्ये उत्पाद व्यय थयी रह्यो छे तेमज अधर्मा दिक द्रव्यने विषे पण भावबु तथा वळी कार्य कारण पणे उत्पाद व्यय तथा अगुरुलघुना चलणनो उत्पाद व्यय पंचा स्तिकायने विष कहेवु तथा काल द्रव्य ते उपचार छे तेनु स्वरूप सर्व उपचारथीज कहेवुं ए रीते सर्व द्रव्यमां सत् पणो छे जो अगुरु लघुनो भेद न थाय तो पछे प्रदेशनो मांहोमांहे भेद कहवो थाय ते माटे अगुरुलघुनो भेद सर्वमां छे अने जेनो उत्पाद व्यय रूप सत्पणो एक छे ते द्रव्य एक छे तथा जेनो उत्पाद व्यय सत्पणो जूदो ते द्रव्य पण जूदो छे एटले सत् केहतां सत्यपणो कह्यो

९ अगुरुलघुत्व पणो कहे छे जे द्रव्यनो अगुरुलघु पर्याय छे ते छ प्रकारनी हानि वृद्धिकरे तेमा छ प्रकारनी वृद्धि छे १ अनन्त भागवृद्धि २ असंख्यात भागवृद्धि ३ संख्यात भागवृद्धि ४ संख्यात गुणवृद्धि ५ असंख्यात गुणवृद्धि ६ अनंत गुणवृद्धि हवे छ प्रकारनी हानी कहे छे १ अनंत भागहानि २ असंख्यात भागहानि ३ संख्यात भागहानि ४

संख्यात गुणहानि ५ असंख्यात गुणहानि ६ अनंत गुणहानि ए रीते छ प्रकारनी वृद्धि तथा छ प्रकारनी हानि ते सर्व द्रव्यमां सदा समय समय थयी रही छे वृद्धि ते उपजवो अने हानि ते व्यय कहियें ए अगुरुलघु पणो कह्यो नहीं गुरु तथा नही लघु ते अगुरुलघु स्वभाव कहियें ए सर्व द्रव्य मध्ये छे ते श्रीभगवतीसूत्रें "समस्मा समगुणा समपएसा सव पज्जया सयद्धा अगुरुलहुआए" अगुरुलघु स्वभावने आवरण नथी तथा आत्मा मध्ये जे अगुरुलघु गुण ते आत्माना सर्व प्रदेशो क्षायक भाव थये सर्व गुण सामान्य पणे परिणमे पण अधिका ओछा परिणमे नही ते अगुरुलघुगुणनु प्रव र्तन जाणवुं ते अगुरुलघु गुणने गोत्रकर्म रोके छे ए अगुरुलघु स्वभाव ते सर्व द्रव्यमां छे

हवे गुणनी भावना कहे छे तिहां जेटला छए द्रव्यमां सरीखा गुण छे ते सामान्य गुण कहियें अने जे गुण एक द्रव्यमां छे अने बीजा द्रव्यमां नथी ते विशेष गुण कहियें जे गुण कोइक द्रव्यमां छे अने कोइक द्रव्यमां नथी ते साधारण असाधारण गुण कहियें एम ए छ द्रव्यमा अनंत गुण अनन्त पर्याय अनन्त स्वभाव सदा शाश्वता छे जेम श्रीकेवली भगवतें परूप्या ते सर्व जेरीतें छे तेरीतें सद्दहणा पूर्वक यथार्थ उपयोगथी श्रुतज्ञानादिकथी यथार्थ पणे जाणवा सद्दहवा ए निश्चे ज्ञान ते मोक्षनु कारण छे जे जीव ज्ञान पाम्यो ते जीव विरति करे छे ते चारित्र कहियें ज्ञाननुं फल विरतिपणो छे ते मोक्षनु तत्काल कारण छे

हवे निश्चेचारित्र अने व्यवहार चारित्रनो विचार कहे छे तेमां प्रथम व्यवहार चारित्र ते जे प्राणातिपात विरमण प्रमुख पंचमहाव्रतरूप ते सर्वविरति कहियें अने स्थूल प्राणातिपात विरमणव्रतादिक श्रावकना बारव्रत ते देशविरति

चारित्र जाणवु ए व्यवहार चारित्र सुखनुं कारण छे एवी करणीरूप श्रावकना बारव्रत अने यतिनां पांच महाव्रत ते अभव्यने पण आवे तेथी देवतानी गति पामे पण सकाम निर्जरानु कारण न थाय इहां कोइ पूछेके मोक्षनु कारण नथी तो एटलुं कष्ट शायास्वे करियें तेने उत्तर जे त्याग गुणी निश्चें ज्ञानसहित चारित्र ते मोक्षनु कारण छे माटे निश्चें चारित्र सहित व्यवहार चारित्र पाळवुं ते निश्चें चारित्र कहे छे शरीर इन्द्रिय विषय कषाय योग ए सर्व पर वस्तु जाणी छांडवा तथा आहार ते पुद्गल वस्तु जाणी छांडवो आत्मा अणाहारी छे ते माटे मुझने आहार करवो घटे नही आहार ते पुद्गल छे आत्मा अपुद्गली छे ते माटे त्याग करवो तद्रूप जे तप ते तप निश्चें चारित्रमां आणवुं चारित्र कहेवा चंचलता रहित थिरतानो परिणाम अने आत्मस्वरूपने विषे एकत्वपणे रमण तन्मयता स्वरूप विश्राति तत्वानुभव ते चारित्र कहियें ते चारित्रना ब भेद छे एक देशविरति बीजो सर्व विरति तिहां देश विरति केहवा श्रावकना बारव्रत निश्चें तथा व्यवहारथी कहे छे

१ प्राणातिपात विरमण व्रत ते परजीवने आपणा जीवसरीखो जाणी सर्व जीवनी रक्षा करे ते व्यवहार दया थयी माटे व्यवहार प्राणातिपातविरमण व्रत जाणवु अने जे आपणो जीव कर्मवशपडयो दुःखी थाय छे ते आपणा जीवने कर्मबंधनथी मुकाववुं अने आत्मगुण रक्षा करी गुणवृद्धि करवी ते स्वदया बंधहेतु परिणति निवारी स्वरूपगुणने प्रगटपणे करवा जे गुण प्रगट थयो ते राखवो एटले ज्ञाने करी मिथ्यात्व टाली आपणा जीवने निर्मल करे ते निश्चेंथी प्राणातिपात विरमण व्रत कहियें

२ मृषावाद विरमणव्रत कहे छे जुठु वचन विलकुल बोलवुं नही ते व्यवहार मृषावाद विरमणव्रत अने जे पर पुद्‌गलादिक वस्तुने आपणी कहेवी ते मृषावाद वचन छे अने जीवने अजीव कहे तथा अजीवने जीव कहे इत्यादिक अज्ञान भाव ते सर्व निश्चे मृषावाद छे अथवा सिद्धान्तना अर्थ खोटा कहे ए मृषावाद जेणे छांड्यो ते निश्चे मृषावाद विरमणव्रत कहियें एटले बीजा अदत्तादानादिक व्रत जो भांजे तो तेनो मात्र चारित्र भंग थाय पण ज्ञान दर्शननो भंग न थाय अने जेणे निश्चे मृषावादनो भंग कर्यो तेणे समकेत तथा ज्ञान अने चारित्र ए त्रणेनो भंग कर्यो तथा आगममां एम कह्यु छे जे एक साधुयें चोथो व्रत भंग कर्यो अने एक साधुयें बीजो मृषावाद व्रत भंग कर्यो तो जेणे चोथो व्रत भंग कर्यो ते आलोयण लेइ शुद्ध थाय पण जे सिद्धान्तना अर्थनो मृषा उपदेश आपे ते आलोयण लीये पण शुद्ध थाय नही

३ अदत्तादान विरमण व्रत कहे छे जे पारकुं धन वस्तु छुपावे चोरी करे ठगबाजी करी लीये ते चोरी छे एटले पारकी वस्तु धणीना दिधा विना लेवी नही ए व्यवहारथी अदत्तादान विरमण व्रत जाणवुं अने जे पांच इंद्रियना त्रेवीस विषय आठ कर्म वर्गणा इत्यादिक परवस्तु लेवी नही तथा तेनी वांछा न करवी ते आत्माने अग्राह्य छे माटे ते निश्चेथी अदत्तादान विरमण व्रत कहियें इहां कोइ पूछे जे विषयनी अने कर्मनी वांछा कोण करे छे तेने उत्तर जे पुण्यने लेवा योग्य छे ते जीव कर्मनी वांछा करे छे जे पुण्यना ४२ भेद छे ते चार कर्मनी शुभ प्रकृति छे एटले जे व्यवहार अदत्तादान तो नथी लेता पण अंतरंग पुण्यादिकनी वांछा छे तेने निश्चे अदत्तादान लागे छे

४ मैथुन विरमण व्रत कहे छे जे पुरुष परस्त्रीनो परिहार करे तथा जे स्त्री परपुरुषनो परिहार करे इहां साधुने स्त्रीनो सर्वथा त्याग छे अने गृहस्थने परणेली स्त्री मोकली छे परस्त्रीनो पच्चखाण छे ते व्यवहारथी मैथुननुं विरमण कहियें अने जे विषयना अभिलाषनुं तथा ममता तृष्णानो त्याग परभाव वर्णादिक परद्रव्यना स्वामित्वादिक तेनो अभोगी पणो आत्मा स्वगुण ज्ञानादिकनो भोगी छे अने ए पुद्गलस्कंध ते अनंता जीवनी एठछे तेने केम भोगवे ए रीते त्याग ते निश्चेथी मैथुन विरमण कहियें जेणे बाह्य विषय छांड्यो छे अने अंतरंग लालच छूटी नथी तो तेहने ते मैथुनना कर्म लागे छे

५ परिग्रह परिमाणव्रत कहे छे परिग्रह धन–धान्य–दासदासी–चौपद–जमीन–वस्त्र–आभरणनो त्याग तेमा साधुने तो सर्वथा परिग्रहनो त्याग छे तथा श्रावकने इच्छा परिमाण छे जेटली इच्छा होय तेटलो परिग्रह मोकलो राखे बीजानी व्रती करे ए व्यवहारथी कह्यो अने जे कर्म रागद्वेष अज्ञानद्रव्य ज्ञानावरणी प्रमुख आठ कर्म अने शरीर इन्द्रियनो परिहार एटले कर्मने परिग्रह जाणी छांड्यो ते निश्चेथी परिग्रहनो त्याग एटले परवस्तुनी मूर्छा छांडवी जेणे मूर्छा छोडि तेणे परिग्रह छोड्योज छे एम जाणवु

६ दिसिपरिमाण व्रत कहे छे तिहां तिरछि चार दिशी पांचमी अधो छठ्ठी ऊर्ध्व ए छदिशीना क्षेत्रनो मान करी मोकलो राखे ते व्यवहारथी दिशी परिमाण कहियें अने चार गतिमा भटकवु ते कर्मनुं फल छे एम जाणी तेथी उदासीनपणो अने सिद्ध अवस्थानुं उपादेय पणो ते निश्चेदिसिपरिमाण व्रत कहियें

७ भोगोपभोग परिमाण व्रत कहे छे जे एकवार भोगवंवु ते भोग अने जे वारंवार भोगवंवु ते उपभोग तेनो परिमाण करे ते व्यवहार भोगोपभोग व्रत कहियें अने जे व्यवहारनयें कर्मनो कर्ता भोक्ता जीव छे अने निश्चय नये तो कर्मनो कर्ता कर्म छे आत्मा अनादिनो परभाव भोगी थयो छे तेथी परभावग्राहक अने परभावरक्षक थयो एटले आत्मानी ज्ञायकता ग्राहकता भोग्यता रक्षकता वीगरे कर्ता पणो वीगड्यो तेवारें परभाव कर्ता थयो ते पण परभाव रंगीपणें आठ कर्मनो कर्ता थयो छे पण सत्तायें तो स्वभावनो कर्ता छे पण उपगरण अवराणा तेथी स्वकार्य करी शकतो नथी विभावने करे छे अज्ञान पणे जीवनो उपयोग मल्यो छे पण न्यारो छे पोताना ज्ञानादिक गुणनो कर्ता भोक्ता छे एहवो स्वरूपानुयायी परिणाम ते निश्चें भोगोपभोग व्रत त्याग जाणवो

८ अनर्थदण्ड विरमण व्रत कहे छे जे काम विना जीवनो वध करवो पारकावास्ते आरंभ प्रमुख करवानी आज्ञा प्रमुख आपवी ते व्यवहार अनर्थ दंड अने शुभाशुभ कर्म ते मिथ्यात्व अविरति कषाय योगथी बंधाय छे तेने जीव आपणा करी जाणे ए निश्चेंथी अनर्थदंड

९ सामायक व्रत कहे छे जे मनवचनकायाना आरंभ टालीने तेने निरारंभपणे वर्त्तावे ते व्यवहार सामायक जाणवो अने जे जीवना ज्ञान दर्शन चारित्र गुण विचारे सर्व जीवना गुणनी सत्ता एक समान जाणी सर्व जीव साथे समता परिणामें वर्त्ते ते निश्चेंथी समतारूप सामायक कहियें

१० देशावगाशिक व्रत कहे छे जे मन वचन कायाना योग एक ठोर करी एकस्थानकें बेसी धर्म ध्यान करवो ते

व्यवहार देशावगाशिक कहियें अने जे श्रुत ज्ञाने करी छ द्रव्य ओलखीने पांच द्रव्यनो त्याग करे अने ज्ञानवंत जीवने ध्याये ते निश्चें देशावगाशिक व्रत कहियें

११ पोशह व्रत कहे छे जे चार पहोर अथवा आठ पहोर सुधी समता परिणामें सावद्य छोडी निरारंभपणे शिक्षा वख्यानमां प्रवर्ते ते व्यवहार पोशह कहियें अने पोताना जीवने ज्ञान ध्यानथी पोषीने पुष्ट करे ते निश्चेंथी पोशह व्रत कहियें जीवने पोतानां स्वगुणे करी पोषीजे तेने पोशह कहियें

१२ अतिथिसंविभाग व्रत कहे छे जे पोशहने पारणे अथवा सदा सर्वदा साधुने तथा जैनधर्मि श्रावकने पोतानी शक्तिप्रमाणे दान देवुं ते व्यवहार अतिथिसंविभाग कहियें अने पोताना जीवने अथवा शिष्यने ज्ञाननु दानते भणवुं भणाववुं सुणवु सुणाववुं ते निश्चेंथी अतिथि संविभाग व्रत कहियें एटले श्रावकना बारव्रत कह्यां ते समकित सहित जे निश्चें तथा व्यवहारथी धार व्रतधारे ते जीवने पांचमें गुणठाणे देशविरति श्रावक कहियें देश केहतां देशथकी थोडीशी व्रतिपणो छे माटे अने यतिने सर्वथी व्रतिपणो छे तेथी पांच महाव्रतज छे साधुने पांच महाव्रतमा सर्व व्रत आव्यां ए निश्चें त्यागरूप ज्ञान ध्यान संवर निर्जरामा थिरताना परिणाम ते निश्चें चारित्रना एक उत्सर्ग बीजो अपवाद ए बेमार्ग छे तेमां जे उत्कृष्ट तीक्ष्ण परिणाम ते उत्सर्ग अने जे उत्सर्ग राखवाने कारणरूप ते अपवाद—उक्तंच ॥ "संथरणमि असुद्धं, दुण्हवि गिण्हंतदेंतयाणऽहियं ॥ आउर दिट्ठंतेण, तं चेवहियं असंथरणे" ॥१॥ एटले ज्यां सुधी साधक भावने बाधक नथवे त्यांसुधी जेहनी नाकही ते आदरवो नही अने जो साधक परिणाम रहेता न दीठा तेवारें जेहनी ना ते

आचरे तेने अपवादमार्ग कहियें जे आत्मगुण राखवाने करवो ते अपवाद अने गुणीने रागे भक्तियें करवो ते प्रशस्त ए बे तो साधन छे अने जे उदेकने असमथायी करवुं ते अतिचार छे तथा सघलो अने उदेक माटे प्रधान पणे करवुं ते परिणाम छे ते मध्ये अपवाद मार्ग ते परिणाम ढळ रहे तेम आचार्यें करवो

हवे चार ध्यान कहे छे १ आर्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान तिहां पहेला बे ध्यान ते अशुभ कहियें अने पाछला बे ध्यान ते शुद्ध छे तिहां मनमां आहट दोहटना परिणाम ते आर्तध्यान कहियें तेना चार पाया छे १ भाइ मित्र सज्जन माता पिता स्त्री पुत्र धन प्रमुख इष्ट वस्तुनो वियोग थयाथी विलाप करे ते पहेलो इष्ट वियोगनामा आर्तध्यान तथा २ अनिष्ट जे भुंडां दुःखना कारण दुस्मन दरिद्रीपणो तथा कुपुत्रादि मळयाथी मनमां दुःख चिंता उपजे ते अनिष्ट संयोग नाम आर्तध्यान ३ शरीरमां रोग उपना थका दुःखकरे चिंतावणी करे ते रोगचिंता नामा आर्तध्यान ४ मनमां आगळना वखतनो सोच करे जे आवर्षमां आकाम करशुं आवता वर्षमां अमुक काम करशु तो अमुक लाभ थशे अथवा दान सील तपनुं फल मांगे जे आ भवमा तप कीधो छे माटे आवते भवें इंद्र चक्रवर्तिनी पदवि मळे एहवी आगळा भवनी वांछा छे ते अग्रशोच आर्तध्याननो चोथोपायो जाणवो ए आर्तध्यानना चार भेद कह्या ए तिर्यंच गतिना कारण छे ए ध्यानना परिणाम ते पांचमा अथवा छट्ठा गुणठाणा सुधी होय

२ जे कठोरपरिणामनुं चिंतवन ते रौद्रध्यान तेना चार भेद छे १ जीव हिंसाकरीने हर्ष पामे अथवा बीजो कोइ हिंसा करतो होय तेने देखी खुशी थाय अथवा गुरुजी अनुमोदना करे ते हिंसानुबंधी रौद्रध्यान २ जुठुं बोलिने मनमां हर्ष

पामे के जुओ में केवोपदेखखमयो मारा डहापणानी खबर कोइने पडी नहीं एवो मृषावाद रूप परिणाम ते मृषानु बंधी रौद्रध्यान ३ चोरी करी अथवा ठगाइ करी मनमा खुशी थाय के मारा जेवो ओरथर कोण छे हुं पारको माल लाव छु एवो परिणाम ते चोरानुबंधि रौद्रध्यान ४ परिग्रह धन धान्य परिवार घणो थवानी लालच होय ते धन अथवा कुटुंबने माटे गमे तेवुं पाप करे अथवा घणो परिग्रह मिल्याथी अहंकार करे ते परिग्रह रक्षणानुबंधी रौद्रध्यान ए रौद्रध्यानना चारभेद कह्या ए ध्यान नरकगति पमाडवानु कारण छे महाअशुभकर्मबंधनुं कारण छे ए पांचमा गुण-ठाणा सुधी छे अने छट्ठे गुणठाणे पण एक हिंसानुबंधी रौद्रध्यानना परिणाम कोइक जीवने होय

हवे धर्म ध्यान कहे छे जे व्यवहार क्रियारूप कारण ते धर्म तथा श्रुतज्ञान अने चारित्र ए उपादानपणे साधन धर्म तथा रत्नत्रयी भेदपणे ते उपादान शुद्ध व्यवहार उत्सर्गोऽनुयायी ते अपवाद धर्म जाणवो अने अभेदरत्नत्रयी ते साधन शुद्ध निश्चे नये उत्सर्ग धर्म अने (धम्मो वत्थु सहावो) जे वस्तुनो स्वभाव शुद्ध परिणामिक स्वगुण प्रवृत्ति कर्षायिक अनंतानंद रूप सिद्धावस्थायें रह्यो ते एवंभूत उत्सर्ग उपादान शुद्ध धर्म ते धर्मनुं भासन रमण एकाग्रतापणे चिंतन तन्मयतानो उपयोग एकत्वनो चिंतवबो ते धर्म ध्यान कहियें तेना पाया चार छे ते कहे छे

१ आज्ञाविचयधर्मध्यान ते जे वीतराग देवनी आज्ञा साची करी सद्दहे एटले भगवंते छ द्रव्यनुं स्वरूप नय प्रमाण निक्षेपा सहित सिद्ध स्वरूप निगोद स्वरूप जेम कह्या तेम सद्दहे वीतरागनी आज्ञा नित्य अनित्य स्याद्वाद पणे निश्चे

व्यवहार पणे माने सद्दहे ते आज्ञा प्रमाणे यथार्थ उपयोग भासन थयो तेने हर्षे करी ते उपयोग मध्ये निरधार, भासन रमण अनुभवता एकता तन्मय पणो ते आज्ञाविचयधर्मध्यान कहियें

२ अपायविचयधर्मध्यान ते जीवमां अशुद्धपणे कर्मना योगथी संसारी अवस्थामा अनेक अपाय केहतां दूषण छे ते अज्ञान राग द्वेष कषाय आश्रव ए मारा नथी हु एथकी न्यारो छु हु अनंतज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यमयी शुद्ध, बुद्ध अविनाशी छुं अज, अनादि, अनंत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अकल, अमल, अगम्य, अनमी, अरूपी, अकर्मा, अबंधक, अनुदय, अनुदीरक, अयोगी, अभोगी, अरोगी, अभेदी, अवेदी, अछेदी, अखेदी, अकषायी, असखाइ, अलेशी, अशरीरी, अणाहारी, अव्याबाध, अनवगाही, अगुरुलघुपरिणामी, अतेंद्री, अप्राणी, अयोनी, असंसारी, अमर, अपर, अपरपर, अव्यापी, अनाश्रित, अकप, अविरुद्ध, अनाश्रय, अलख, अशोकी, असंगी, अनारक, लोकालोक ज्ञायक एवो शुद्ध चिदानंद मारो जीव छे एहवो एकाग्रतारूप ध्यानते अपायविचयधर्मध्यान जाणवो

३ विपाकविचयधर्मध्यान कहे छे जे एहवो जीव छे तो पण कर्म वशें दुखी छे ते कर्मनो विपाक चिंतवे जे जीवनो ज्ञानगुण ते ज्ञानावरणी कर्मे दाब्यो छे अने दर्शनावरणी कर्मे दर्शनगुण दाब्यो छे एम आठ कर्मे जीवना आठगुण दाब्या छे एटले आ संसारमां भमतां थकां जीवने जे सुखदुःख छे ते सर्व कर्मना कीधां छे माटे सुख उपने राचवुं नही अने दुःख उपने दिलगीर थवुं नही कर्म स्वरूपनी प्रकृति स्थिति रस अने प्रदेशनो बंध उदय उदीरणा तथा सत्ता चिंतववानु एकाग्रता परिणाम ते विपाकविचयधर्मध्यान

४ संस्थानविचयधर्मध्यान कहे छे ते चउदराजमान लोकनुं स्वरूप विचारे जे ए लोक ते चउदराज ऊंचो छे ते मध्ये काइक अधिक सात राज अधो लोक छे विचमां अढारसो योजन मनुष्य क्षेत्र त्रिछो लोक छे ते ऊपर कांइक ऊणो सात राज ऊर्ध्व लोक छे तेमां सर्व वैमानिक देवता वसे छे अने ऊपरें सिद्ध शिला सिद्धक्षेत्र छे ए रीते लोकनुं प्रमाण छे ए लोकनुं संस्थान वैशाख छे अनतो काल आपणा जीवें संसारमां भमतां सर्व लोकने जन्ममरण करी फरस्यो छे एवुं जे लोक स्वरूप तथा लोकने विषे पंचास्तिकायनुं अवस्थान तथा परिणमन द्रव्यमध्ये गुण पर्यायनुं अवस्थान तेनो जे एकाग्रताये तन्मयचिंतवण परिणाम एहवु जे ध्यान ते संस्थानविचयधर्मध्यान कहियें ए धर्मध्यानना चार पाया कह्या ए धर्मध्यान चोथा गुणठाणाथी मांडीने सातमा गुणठाणा सुधी छे

हवे शुक्लध्यान कहे छे शुक्लकेहतां निर्मलशुद्ध परमालंबन विना आत्माना स्वरूपने तन्मय पणे ध्यावे एहवुं ध्यान तेने शुक्लध्यान कहियें तेहना पाया चार छे ते कहे छे

१ पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार ते पृथक्त्व केहतां जीवथी अजीव जूदा करवा स्वभाव विभाव तेने जूदा पृथक्रूपणे वहें-चण करवी स्वरूपने विषे पण द्रव्य तथा पर्यायमां पृथक्रूपणे ध्यान करी पर्याय ते गुणमां संक्रमावे अने गुण ते पर्या-यमां संक्रमण करे एरीते स्वधर्मने विषे धर्मांतर भेद ते पृथक्त्व कहियें अने तेनो वितर्क ते जे श्रुतज्ञाने स्थिर उपयोग अने सप्रविचार ते सविकल्पोपयोग एटले एक चिंतव्या पछि बीजो चिंतवयो तेने विचार कहियें एटले निर्मल विकल्प

मक्ति पोतानी मनाने ध्यावे ते पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार पेहेलो पायो ए आठमा गुण ठाणाथी मांडी इग्यारमा गुण ठाणा सुधी छे

२ एकत्ववितर्कअप्रविचार नामा बीजो पायो कहे छे जे जीव आपणा गुण पर्यायनी एकताकरी ध्यावे ते आपी रीत के जीवना गुण पर्याय अने जीवते एकज छे अने महारो जीव सिद्धस्वरूप एकज छे एवो एकत्व स्वरूप तन्मय पणे मनेता आत्म धर्मनो एकत्वपणे ध्यान वितर्क केहतां श्रुतज्ञानावलंबी पणे अने अप्रविचार केहतां विकल्प रहित दर्शन ज्ञाननो समयांतरें कारणता विना रत्नत्रयीनो एक समयी कारण कार्यता पणे जे ध्यान वीर्य उपयोगनी एका ग्रता ते एकत्ववितर्क अप्रविचार जाणवो ए पायो बारमा गुणठाणे ध्यावे ए बेहु पायामां श्रुतज्ञानावलंबनी पणो छे पण मरुदेवि मनपर्यव ज्ञानोपयोगें वर्त्ततो जीव कोइ ध्यान करी सके नही ए बे ज्ञान परानुयायी छे माटे ए ध्याननथी घनघातिया चार कर्म खपावे निर्मल केवल ज्ञान पामे पछे तेरमें गुणठाणे ध्यानतरिका पणे छे तेरमाना अंते अने चउदम गुणठाणे ए बे पाया ध्यावें

३ सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाति पायो कहे छे ते सूक्ष्म मन वचन कायाना योग रुंधे शैलेशी करण करी अयोगी थाय ते ने अप्रतिपाति निमळवीर्य अचळताऋपपरिणाम ते सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति ध्यान जाणवुं इहां सत्ताये ८५ प्रकृति रही तेमांथ ७२ खपावे

४ उच्छिन्नक्रियानुवृत्ति पायो कहे छे जे योग निरुध कीधापछे तेर प्रकृति खपावे अकर्मा थाय सर्व क्रियाथी रहित

थाय ते समुच्छिन्न क्रिया निवृत्ति शुक्लध्यान कहियें ए ध्यान ध्यावता शेष रहे तारण रुप क्रिया उच्छेदे अवगाहना देहमानमांथी त्रीजो भाग घटाडे शरीर मूकी इहांथी सात राज ऊपर लोकने अंते जाय सिद्ध थाय इहां शिष्य पूछे जे चौदमे गुणठाणे तो अक्रिय छे तो सातराज उच्चो गयो ए क्रिया केम करे छे तेने उत्तर जे सिद्ध तो अक्रिय छे परंतु पूर्व प्रेरणायें तुंबीने दृष्टान्ते जीवमां चालवानो गुण छे धर्मास्तिकाय मध्ये प्रेरणा गुण छे तेथी कर्म रहित जीव मोक्षे जता लोकने अंते आवी रहे इहां कोइ पूछे जे आगल कंयो अलोक छे तहां किम जातो नथी तेने उत्तर जे आगल धर्मास्तिकाय नथी माटे न जाय वली कोइ पुछे जे तो अधोगतियें अथवा तिरच्छी गतियें केम नथी जातो तेने उत्तर जे कर्मना भारथी रहित थयो हलुवो थयो माटे निचो तथा डाबो जिमणो न जाय कारण के प्रेरक कोइ नथी तथा कपे नही केमके अक्रिय छे माटे तथा कोइ पूछे जे सिद्धने कर्म केम लागता नथी तेने कहे छे जे कर्म तो जीवने अज्ञानथी तथा योगथी लागे छे ते सिद्धना जीवने अज्ञान तथा योग नथी माटे कर्म लागे नही ए चार ध्याननों अधिकार कह्यो

हुवे वली बीजा चार ध्यान कहे छे १ पदस्थ २ पिंडस्थ ३ रुपस्थ ४ रुपातीत तेमां पहेलु पदस्थ ध्यान कहे छे जे अरिहंतादिक पांच परमेष्ठीना गुण समारे तेनो चित्तमां ध्यान करे ते पदस्थ ध्यान २ पिंडस्थ केहतां शरीरमा रह्यो जे आपणो जीव तेमां अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय अने साधुपणाना गुण सर्व छे एहवो जे ध्यान ते पिंडस्थ ध्यान अथवा गुणीना गुण मध्ये एकत्वता उपयोग करवो ते पिंडस्थ ध्यान ३ रुपमां रह्यों थको पण ए मारो जीव अरुपी

भर्ता गुर्ण छे ते वस्तुनो स्वरूप अतिशयपणाथी धारा पछे आत्मानुं रूप एकता पणो पहयो जे ध्यान ते रूपस्थ ध्यान ए त्रण ध्यान धर्म ध्यानमां गणया ४ निरंजन निर्मळ संकल्प विकल्प रहित अभेद एकशुद्धता रूप चिदानंद तत्त्वामृत असंग अखंड अनंतगुण पर्यायरूप आत्मस्वरूपनुं ध्यान ते रूपातीत ध्यान जाणवु इहां मार्गणा गुणठाणा नयप्रमाण सविभारिक ज्ञान क्षयोपशम मात्र सर्व छोडवा योग्य थया एक सिद्धना मूळ गुणने ध्यावे ते रूपातीत ध्यान जाणवो पदने मोक्षनु कारण ए ध्यान ते कह्यु

हर भावना कहे छे तेमां धर्म ध्याननी चार भावना कहे छे १ मैत्रीभावना ते सर्व जीव साथे मित्रतानो भाव चिंतवो सर्वनु भलुं थाओ पण कोइनु माठुं चिंतवयु नही सर्व जीव ऊपर हितबुद्धि राखवी ते मैत्रीभावना २ गुणवंत मन ज्ञानादिक गुण ऊपरें राग ते बीजी प्रमोदभावना १ जे धर्मवंत ऊपर राग अने मिथ्यात्वी ऊपर राग नही तेम द्वेष पण नही कारण के हिंसक ऊपरें पण उत्तम जीवने करुणा ऊपजे जो उपदेश थकी सारामार्गे आवे तो तेने शुद्ध मार्गे आणवो कदाचित-मार्गे न आवे तोपण द्वेष न राखवो केमके ते अजाण छे एम समजवु एहवा जे परिणाम ते माध्यस्थभावना ४ सर्व जीवनी पोताने सुख्यजाणी दया पाळे कोइने हणे नही तथा जे दुःखी अथवा धर्महीन तेहना ऊपर करुणा सेना दुःख टाळवानो परिणाम तथा धर्महीन जीव देखीने एवो चिंतवे जे ए जीव किवारें धर्म पामशे यथार्थ मार्गसाधन पामी स्वरूप रमने किवारें अवलंबशे एवो परिणाम ते चोथी करुणा केहतां दयाभावना ए चार भावना कही

१ हवे चार भावना कहे छे शरीर कुटुंब धन परिवार सर्व विनाशी छे जीवनो मूळ धर्म अविनाशी छे एम चिंतववुं ते पहेली अनित्यभावना २ संसारमा मरणसमये जीवने शरण राखनार कोइ नथी एक धर्मनो शरण छे एवुं चिंतववुं ते बीजी अशरण भावना ३ मारा जीवे संसारमां भमता सर्व भवकीधा छे ए संसारथी हु केवारें छुटीश ए संसार मारो नथी हु मोक्षमयी छु एम विचारवु ते त्रीजी संसारभावना ४ ए मारो जीव एकलो भोगवशे एम चिंतववुं ते चोथी एकत्वभावना ५ आ संसारमां कोइ कोइनो नथी एम चिंतववु ते पांचमी अन्यत्वभावना ६ आ शरीर अपवित्र मळमूत्रनी खाण छे रोग–जरानी भर्यो छे ए शरीरथी हुं न्यारो छुं एम चिंतववो ते छट्ठी अशुचिभावना ७ रागद्वेष अज्ञान मिथ्यात्व प्रमुख सर्व आश्रव छे एम चिंतववु ते सातमी आश्रवभावना ८ ज्ञानध्यानमां वर्तवो जीव नवा कर्म बांधे नही ते आठमी संवरभावना ९ ज्ञानसहित क्रियाते निर्ज्जरानु कारण छे ते नवमी निर्ज्जराभावना १० चउदराज लोकनु स्वरूप विचारवुं ते दशमी लोकस्वरूपभावना ११ संसारमां भमता जीवने समकित ज्ञाननी प्राप्ति पामवी दुर्लभ छे अथवा समकित पाम्यो पण चारित्र सर्व विरति परिणाम रूप धर्म पामवो दुर्लभ छे ते इग्यारमी बोधदुर्लभभावना

१२ धर्मना कहेणहारगुरु तथा शुद्ध आगमनु सांभळवु एहवी ओगवाइ मळवि दोहेली छे ते बारमी धर्मदुर्लभभावना एटले बार भावना कही ए चारित्रनु स्वरूप संपूर्ण कह्यु

एवो समकित सहित ज्ञान चारित्र ते मोक्षनुं कारण छे तेना ऊपर भव्य प्राणीयें विशेषें उद्यम करवो अने जो तेवुं

नन्न कीन नथी जे गोतम पमिद्ध रागानी गरे गहहना शुद्ध रागनो जो गमकित शुद्ध छे वो मोक्ष नजीक छे गम
कित विना ज्ञान ध्यान किया गर्व निष्फल छे एम आगममां कह्यो छे

नागंदइ न विरइ, अहवा न गसेइ तहय मग्गइ। सदहमाणो जीवो, पावइ अयरामर ठाण ॥ १ ॥

अर्थ—हे जीव! तुं करी नहु गो कर भन जो न करी शके तोपण जेणे वीतरागे धर्म कह्यो ते रीते गदहने गदहतां
शुद्ध गमकित जीव अजरामर स्थानक ते मोक्ष पदवी पामे

हवे गमकितनो भाग कहे छे १ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य ४ पाप ५ आश्रव ६ संवर ७ निर्जरा ८ बंध ९ मोक्ष—
ए नव तत्व छे तेमां मोक्ष कारण जीव छे अने संवर तथा निर्जरा ए ५ गुण छे एटले जीव संवर निर्जरा मोक्ष ए
नव तत्त्व छ अने बीजा बंध रूप छे एहवा परिणाम तने गमकित ज्ञान कहियें ते गमकित ध्यानभक्तोत्र थाय तिहां
अनुयोगद्वारमां कह्यो छे

पावमि निदिआवं, अगिद्दिगवे अ इत्थ अत्थमि। जइनमेयइयजो, सो उवएसो नओनाम ॥ १ ॥

अर्थ—ग्रहवी छ इत्य अर्थने ग्रहण योग्य राख में में अने छांडवा योग्य छांडे एवो जे उपदेश ते नय उपदेश
जाणवा ए गमकितनो उत्कृष्ट कहे छे

जिनेन्द्र ए विषय रूप करी जीवादि नवतत्त्व जाण आश्रव त्यागे संवर आदरे वीतरागना कह्या भाव ते छ द्रव्य

ते द्रव्य क्षेत्र काळ भावसहित जाणे नामादिचार निक्षेपा पोतानी बुद्धिथी जाणे सद्दहे वीतरागना भाख्या भाव ते सत्य छे एवी सद्दहणा होय

२ उपदेशरुचि नवतत्व तथा छ द्रव्यने गुरु उपदेशथी आणी सद्दहे ते उपदेशरुचि

३ आज्ञारुचि ते रागद्वेष मोह जेमना गया छे अज्ञान मिथ्यु छे एहवा अरिहंतदेव तेणे जे आज्ञा कही तेने माने सद्दहे ते आज्ञारुचि

४ सूत्ररुचि १ आचारांग २ सुयगडांग ३ ठाणांग ४ समवायांग ५ भगवती ६ ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकदशांग ८ अंतगडदशांग ९ अनुत्तरोववाइ दशांग १० प्रश्नव्याकरण ११ विपाक ए इग्यार अंग तथा बारमुं अंगदृष्टिवाद जेमां चउद पूर्व हता ते हमणा विच्छेद गया छे तथा १ उववाइ २ रायपसेणी ३ जीवाभिगम ४ पन्नवणा ५ जंबुद्वीपपन्नति ६ चंदपन्नति ७ सूरपन्नति ८ कप्पिआ ९ कप्पवडंसिया १० पुप्फिआ ११ पुप्फचुलीआ १२ वन्हिदशा ए बार उपांग जाणवा अने १ व्यवहार सूत्र २ बृहत्कल्प ३ दशाश्रुतस्कंध ४ निशीथ ५ महानिशीथ ६ जीतकल्प ए छ छेदग्रंथ तथा १ चौसरण २ संथारापयन्ना ३ तंदुलवेयालिया ४ चंदाविजय ५ गणिविजय ६ देविंदथुओ ७ वीरथुओ ८ गच्छाचार ९ जोतिकरंड १० आयुःपच्चखाण ए दश पयन्नाना नाम तथा १ आवश्यक. २ दशवैकालिक ३ उत्तराध्ययन ४ ओघनिर्युक्ति ए चार मूळसूत्र तथा १ नंदि २ अनुयोगद्वार एपिस्तालीस

आगम ते १ मूल सूत्र तथा २ निर्युक्ति ३ भाष्य ४ चूर्णी ५ टीका ए पंचांगीना वचन जे जीव माने तथा आगम सांभळवानी तथा भणवानी जेने घणी चाहना होय ते सूत्ररुचि जाणवी

५ जे जीव गुरुमुखथी एक पदनो अर्थ सांभळीने अनेक पद सद्दहे ते बीजरुचि

६ अभिगमरुचि ते जे सूत्र सिद्धान्त अर्थ सहित जाणे अने अर्थ विचार सांभळवानी घणी चाहना होय ते अभिगमरुचि

७ जे छ द्रव्यना गुण पर्यायने चार प्रमाण तथा सात नये करी जाणे ते विस्ताररुचि

८ क्रियारुचि ते दर्शन ज्ञान चारित्र तप विनय सुमति गुप्ति बाह्य क्रिया सहित आत्मधर्म साधे जेने रुचि घणी होय ते क्रियारुचि

९ संक्षेपरुचि ते जे अर्थने ज्ञानमां थोडो कही शके घणो जाणीने कुमतिमां पडे नही जिन मतमां प्रतीति माने ते संक्षेपरुचि

१० जे पांच अस्तिकायनुं स्वरूप जाणे श्रुतज्ञाननो स्वभाव अतरंग सत्ता सद्दहे ते धर्मरुचि

हवे समकितना आठ गुण कहे छे १ निशंका ते जिनागम मध्ये सूक्ष्म अर्थ कह्या ते सांचा सद्दहे तेमां संदेह आणे नही तथा सात भयथी पण डरे नही २ निकंखा गुण ते पुण्यरूप फळनी चाहना न राखे केमके जिहां इच्छा तिहां कर्मनो बंध छे माटे ३ निर्वितिगिच्छागुण ते शुभ अशुभ पुद्गल एकसरिखा छे तेमां पुण्यना उदयथी शुभयोग मिल्या

खुशी थइ अहंकार न करवो तथा पापना उदयथी दु:खसयोग मिल्या दिलगीर थावुं नहीं ४ अमूढ दृष्टि गुण ते जे आगममां सूक्ष्म निगोदना तथा छ द्रव्यना सूक्ष्म विचार कह्या छे ते सांभळवो थको मुझाय नहीं जे पोतानी धारणामां आवे ते धारी राखे अने जे धारणामां न आवे तेने सद्दहे ५ उपवृंहगुण जे ए आपणा जीवमां अनंत ज्ञानादिक गुण छे ते छुपायवा नहीं शुद्ध सत्ता जेवी तेवी कहेवी राग द्वेष अज्ञान ते कर्मनी उपाधि छे जीव ए उपाधीथी न्यारो छे ६ स्थिरिकरण गुण ते आपणा परिणाम ज्ञानमां स्थिर करवा डगाववा नहीं अथवा कोइ भव्य प्राणी धर्मथी पडतो होय तेने सारुदेइ उपदेश आपी स्थिरकरवो ७ वात्सल्यतागुण ते जेनी साथें ज्ञान ध्यान तप पडिक्कमणो भेळो करता होइये अने सद्दहणा पण एकज होय ते आपणो साधर्मिभाइ छे तेनी भक्ति करवी अथवा सर्व जीवना ज्ञानादि गुण आपणा समान छे माटे सर्व जीव ऊपर दया करवी अथवा बीजा जीवना पण आपणा तुल्य ज्ञानादिगुण छे ते जीवने पोषवा योग्य ज्ञानध्याननो घणो अभ्यास करावे ८ प्रभावक गुण ते भगवंतना धर्मनी प्रभावना महिमा करवी अथवा पोताने ज्ञानादि गुणवधारवा दान शीळ तप भाव पूजा करी घणी महिमा करवी ए समकितना आठ गुण

हवे समकितना पांच भूषण कहे छे १ उपशमभावभूषण ते विवेकी प्राणी मायें कषाय न करे अने जो कदाचित कषाय करे तो पण तरत मनने पाछोवाळे २ आस्ताभूषण ते भगवंतना वचन ऊपर शुद्ध प्रतीत राखें भगवंतें जेम आगममां आज्ञा करी तेम सद्दहे ३ दयाभावभूषण ते सर्व जीव पोताना सरीखा जाणी दया पाळवी ४ संवेगभूषण जे संसारथी तथा धनथी शरीरथी उदासी पणो राखवो ५ निरवेदभूषण ते इन्द्रियना सुख जीवें अनती वार

भोगव्या पण ते दुःखना कारण छे एक चिदानंद मोक्षमयी अतींद्रिय सुखने आपणा करी जाणे ए समकेतना पांच भूषण कह्या

हवे छ आयतन कहे छे १ निश्चयकुगुरु ते भगवंतना वचनना खोटा अर्थ करे खोटी परुपणा करे २ व्यवहारकुगुरु ते योगी संन्यासी ब्राह्मण अने आचारहीन वेषधारी यति तेपण छोडवा ३ निश्चय कुदेव ते जिणे श्रीवीतरागदेवनुं स्वरूप नथी जाण्युं ४ व्यवहार कुदेव ते जे सरागीदेव कृष्ण महादेव क्षेत्रपाळ देवी पितर प्रमुख तेपण छोडवा ५ निश्चयी कुधर्म ते जे एकांत मार्ग बाह्यकरणी ऊपर राच्या छे अंतरंगज्ञान नथी ओळख्यो ते ६ व्यवहार कुधर्म ते पारका अन्य दर्शनीना मत सर्व छांडवा एटले कुदेव कुगुरु तथा कुधर्मने छोडी शुद्धदेव गुरु तथा धर्म सद्दहे ते समकितनी सद्दहणा जाणवी समकितना श्रद्धान पन्नवणा सूत्रथी कहे छे

परमत्थसंथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणावावि । वावन्न कुदंसणवज्जणाय समत्तसद्दहणा ॥ १ ॥

अर्थ—परमार्थ छ द्रव्य नवतत्वना गुण पर्याय मोक्षनुं स्वरूप एटले जे परमार्थ सूक्ष्म अर्थ छे ते जाणवानो घणो परचो करे अथवा जाणवानी घणी चाहना राखे अने सुदिट्ठ केहता भली रीते दीठा जाण्या छे परमार्थ छ द्रव्य मोक्ष मार्ग जेणे एहवा गुरुनी सेवा करे एटले ज्ञानी गुरु धारवा अने वावन्न केहतां जिनमति यतिना नाम धरावीने जे क्षेत्रपाळ प्रमुखने समकित विना माने एवा गुरुनो संग वर्जे अने कुदर्शनी जे अन्यमति तेनो सग न करे एवा जे परिणाम ते समकितनी सद्दहणा जाणवी

विरया सावज्जाओ, कषायहीणा महव्वयधरावि । सम्मदिट्ठिविहुणा, कयाविमुक्ख न पावति ॥ २ ॥

अर्थ—जे सावद्य आरंमथी विरम्या छे क्रोधादि चार कषाय जीत्या छे अने शुद्ध पांचमहाव्रतपाळे छे पण समकित विना छे ते जीव मोक्ष पामे नहीं

हवे समकित ते सी वस्तु छे ते विषे गाथा कहे छे

नयभंगपमाणेहिं, जो अप्पा सायवायभावेण । जाणइ मोक्खसरूव, सम्मदिट्ठिउ सो नेओ ॥ ३ ॥

अर्थ—नय तथा भंगेकरी तथा प्रमाणेकरी जे पोताना आत्माने जाणे ओळखे स्याद्वाद आठ पक्षे जाणे अने एम स्याद्वादपणे मोक्ष निष्कर्मोऽवस्थाने पण जाणे परवस्तुने हेय जाणे जीवगुण उपादेय जाणे तेने समकिति जाणवा

हवे जीवस्वरूप ध्यान करवाने गाथा कहे छे

अहमिक्को खलु सुद्धो, निम्ममओ नाण दसण समग्गो । तम्मि दिट्ठिओ तच्चित्तो, सव्वे ए ए खय नेमि॥४॥

अर्थ—ज्ञानी जीव एहवुं ध्यान करे के हुं एकछुं परपुद्गलथी न्यारोछु निश्चय नयकरी शुद्धछु अज्ञानमळथी न्यारोछु निर्मळछु ममताथी रहित छु ज्ञानदर्शनथी भर्यो छुं हुंमाराज्ञानस्वभाव सहित छुं हुमारागुणमां रह्यो छुं चेतनागुणते महारीसघा छे हुंमाराआत्मस्वरूपने ध्यावतो सर्व कर्म क्षय करुं छुं

निरजण निकल अयल, देवअणाइ अणाइ अणतं । चेयणलक्खण सिद्धसम, परमप्पासिवसत ॥५॥

अर्थ—कर्म मलनथी रहित निरजन छुं कलंकरहित छुं अचल केहता पोताना स्वरूपथी कियारे चलायमान थाउं नही परमदेव छु जेनी आदि नथी तथा जेनो अंत नथी चेतना लक्षण छुं सिद्ध समान छु संतसत्ता मयी छु

जीवादिसद्दहण, सम्मत्त एस अधिगमो नाण । तत्थेव सया रमण, चरण एसो हु मुरकपहो ॥६॥

अर्थ—जीवादिक छ द्रव्य जेवा छे तेवा सद्दहवा ते समकित अने छ द्रव्य जेवा छे तेहवा गुणपर्यायसहित जाणे ते ज्ञान जाणवु ते छ द्रव्य जाणीने अजीवने छांडे अने जीवना स्वगुणमा स्थिर थयीने रमे ते चारित्र कहियें ए ज्ञानदर्शन चारित्र शुद्धरत्नत्रयी ते मोक्षनो मार्ग छे माटे ए ज्ञानदर्शन चारित्रनो घणो यत्न करवो ए रत्नत्रयी पामीने प्रमाद करवो नही तिहां निश्चय व्यवहारनी गाथा

निच्छय मग्गो मुरको, ववहारो पुन्नकारणो वुत्तो । पढमो सवररूवो, आसवहेउ तओ बीओ ॥७॥

अर्थ—निश्चे नयनो मार्ग ज्ञान सत्तारूप ते मोक्षनु कारण छे एटले मोक्ष छे अने व्यवहार क्रिया नय ते पुन्यनु कारण कह्यो पहेलो निश्चयनय संवर छे अने निश्चयसवर निश्चे नय ते एकज छे जूदा नथी बीजो व्यवहार नय ते आश्रव नवा कर्म लेवानो हेतु छे एटले शुभ पुन्यकर्मनो आश्रव थाय छे अने अशुभ व्यवहारें अशुभ कर्मनो आश्रव थाय छे कोइ पूछे जे व्यवहार नय आश्रवनु कारण छे तो अमे व्यवहार नही आदरशु एक निश्चे मार्ग आदरशु तेने उत्तर कहे छे

जइ जिणमयं पवज्जह, ता मा ववहारनिच्छयमुयह। एकेणविणा तित्थ, छिज्जई अन्नेणओ तच्च ॥ ८ ॥

अर्थ—अहो भव्य प्राणी! ओतमने जिनमतनी चाहना छे अने जो तुमे जिनमतने इच्छो छो मोक्षने चाहो छो तो निश्चे नय अने व्यवहार नय छांडशो नही एटले बेहु नय मानजो व्यवहार नय चालजो अने निश्चय नय सद्दहजो जो तुमे व्यवहार नय उथापशो तो जिन शासनना तीर्थनो उच्छेद थाशे जेणे व्यवहार नय नमान्यो तेणे गुरु वदना जिन भक्ति तप पचखाण सर्व नमान्या एम जेणे आचार उथाप्यो तेणे निमित्त कारण उथाप्यो अने निमित्त कारण विना एकलो उपादान कारण ते सिद्ध नथाय माटे निमित्त कारण रूप व्यवहार नय जरूर मानवुं अने जो एकलो व्यवहार नय मानियें तो निश्चय नय ओळख्या विना तत्वनु स्वरूप जाण्युं नही माटे तत्वमार्ग अने मोक्षमार्ग ते निश्चय नय विना पामियें नही अने तत्व ज्ञानविना मोक्ष नथी एटले निश्चयविना व्यवहार निःफल छे अने निश्चय सहित व्यवहार ते प्रमाण छे तेनो दृष्टान्त—जेम सोनाना आभूषणमां उपधातु अथवा किणजो मिल्यो होय तोपण वंचा सोनाने भावें लेइ राखियें छैयें अने जो ते किणजो तथा सोनुं जूदु करियें तो सहु कोइ सोनाने ले पण कोइ किणजो के कुधातु ते लीये नही तेम निश्चय नय सोना समान छे माटे निश्चय नय सहित सर्व भला छे अने निश्चय नय विना सर्व अलेखे छे माटे आगममा निश्चय व्यवहार रूप मोक्ष मार्ग छे ते कह्यो

पछी शरीर ऊपर मोह करे नही ते विषे

च्छिज्जो भिज्जो जाय खओ, जो इह मे तु शरीर। अप्पा भावे निम्मलो, ज पाव भवतीर ॥ ९ ॥

अर्थ—भव्य प्राणी एम चिंतवे जे ए सरीर छीजजाओ भेदीजजाओ क्षयथइजाओ विणशीजाओ ए माहारुं सरीर पुद्गलीक छे परवस्तु छे ते एकदिवसें मूकवु छे माटे रे प्राणी! तुं आपणी आत्माने निर्मल पणे ध्याव तो संसारथी तरीने कांठो पामीश

एहिज अप्पा सो परमप्पा, कम्म विसेसोई जायोजप्पा।

इयमे देवज्जाजुसो परमप्पा, वह्व तुझे अप्पो अप्पा ॥ १० ॥

अर्थ—अहो भव्य जीव! एहीज आपणो आत्मा छे ते शुद्ध ब्रह्म छे पण कर्मने वश पड्यो जन्ममरण करे छे पण ए शरीरमा जे जीव छे ते देव छे परमात्मा छे माटे तुमे आपणो आत्मा ध्यावो तरण तारण जिहाज ए आपणो आत्माज छे एम श्री हेमाचार्ये वीतराग स्तोत्रमां कह्यो छे

य परात्मा पर ज्योति, परम परमेष्ठिनाम्। आदित्यवर्णोतमस, परस्तादामनति य ॥ १ ॥

सर्वे ये नोदमूल्यत, समूला क्लेशपादपा इत्यादि ॥

अर्थ—परमात्मा छे परमज्योति छे पंचपरमेष्ठीथी पण अधिक पूज्य छे केम के पंचपरमेष्ठीतो मोक्षमार्गना देखाडनारा छे पण मोक्षमां जवावाळो तो आपणो जीव छे अज्ञानतो मिटावनार छे सर्व कर्म क्लेशनो खपावनार छे एवो

आत्मा ध्यावो एहिज परम श्रेयनुं कारण छे शुद्ध छे परम निर्मल छे एहवो आत्मा उपादेय जाणी सद्दहे अने जेथो पोतायी निरवाह थाय तेथो त्याग वैरागमा प्रवर्त्ते एटले धन ते परवस्तु जाणी सुपात्रने दान आपे अने इन्द्रियना विकार ते कर्म बंधना कारण जाणी परिहरे शील पाले जे आहार छे ते पुद्गलीक वस्तु छे शरीर पुष्टीनुं कारण छे अने शरीरपुष्ट कीधाथी इंद्रियोना विषयनो पोष थाय माटे ते परस्वभाव छे अज्ञान संसारनुं कारण छे माटे आहारनो त्याग करवो तेने तप कहियें तथा पूजा ते जे श्री अरिहंत देवें मोक्षमार्ग उपदेश्यो ते आपणे आप्यो माटे आपणा उपकारी छे ते उपकारीनी बहुमान सहित भक्ति करियें माटे श्री अरिहंत देवाधिदेवनी पूजा करवी एम दानशील तप पूजा सर्व जीव अजीवनुं स्वरूप ओलख्याविना जे करवुं ते पुण्यरूप इंद्रिय सुखनुं कारण छे अने जे जीवने उपादेय करी वांछा विना करणी करे छे ते निर्जरानु कारण छे एम दयापण श्रीभगवती सूत्रमां सातावेदनी कर्मनुं कारण छे एटले सम्यक् ज्ञानीने सर्व करणी ते निर्जरारूप छे अने ज्ञान विना सर्व करणी बंधनु कारण छे माटे ज्ञाननो घणो अभ्यास करवो ए भगवतें सीखामण दीधी छे

तथा ज्ञाननु कारण श्रुत ज्ञान छे तेनो घणो भाव राखवो श्रीठाणांगमां तथा उत्तराध्ययनमां तथा भगवतीमां १ वाचना २ पृछना ३ परावर्तना ४ अनुप्रेक्षा ५ धर्मकथा ए सिज्झाय भणवा गुणवानुं फल मोक्ष कह्यो छे सिज्झाय करवाथी ज्ञानावरणी कर्म खपावे केमके वाचनाथी तीर्थधर्म प्रवर्ते महा निर्जरा थाय पूछवाथी सूत्र तथा अर्थ शुद्ध थाय मिथ्यात्व मोहनीय खपावे ते जेम जेम अर्थ विचार पूछे तेम तेम समकित निर्मल थाय अने अनुप्रेक्षा ते अर्थ विचारता

सात कर्मनी स्थितिना रस पातळा करे अनंतो ससार सपावीने पातळो करे तथा श्रुत ज्ञाननी आराधनाथी अज्ञान मिटे एवा फल कह्या छे

माटे वांचवा तथा भणवानो घणो उद्यम करवो केमके आज पांचमा आरामा कोइ केवळी नथी तथा मनपर्यवज्ञानी अने अवधिज्ञानी पण नथी एक मात्र श्रुतज्ञान तेहिज आगमनो आराधक छे यत—

कत्थ अम्हारिसापाणी, दुसमादोस दूसिया। हायणा हाकह हुंता, नहु तो जइ जिणागमो ॥१॥

अर्थ—हे भगवंत! अम सरिखा प्राणीनीशी गतिथात थे अमें आ दुसम पचमकाळमां अवतार लीधो हा—हति खेदे, अमे अनाथ छु जो जिनराजना कहेलां आगम न होत तो आज शु थात एटले आज आगमनोज आधार छे माटे आगम अने आगमधर जे बहुश्रुत तेनो घणो विनय करवो आगममां विनयनु फळ ते सांभळवु अने सांभळवानुं फळ ज्ञान छे ज्ञाननुं फल मोक्ष छे एम आगम सांभळी लेवा योग्य लेजो अयोग्य छाडजो सद्दहणा शुद्ध राखजो सद्दहणा ते मोक्षनु मूल छे ए इन्द्रिय सुख तो आ जीवें अनंतीवार पाम्या छे एहवी जाति—जन्म—योनी कोइ रही नथी जे आपणा जीवे नही करी होय ए जीवने ससारमा भमता अनंता पुद्गल परावर्तन थया पण धर्मनी जोगवायी मळी नही तो हवे मनुष्यभव आयककुळ निरोगशरीर पंचेंद्रि प्रगट बुद्धि निर्मळ एटला संयोग मळ्या थकी श्रीवीतरागनी वाणीना केहेनारा शुद्ध गुरुनी जोगवाइ पामीने अहो भव्यलोको! तुमे धर्मने विषे विशेष उद्यम करजो फिरिथी एवी जोगवाइ मिळवी दुर्लभ छे माटे प्रमाद करवो नही ए शरीर धन कुटुंब आयुष्य सर्व चपळ छे क्षण क्षण छीजे छे माटे पांच

समवाय कारण मल्या मोक्षरूप कार्य सिद्ध करवुं ते पंचसमवायना नाम कहे छे १ काल २ स्वभाव ३ नियति ४ पूर्वकृत ५ पुरुषाकार ए पांच समवाय माने ते समकिति छे एमां एक समवाय उत्थापे तेहने मिथ्यात्वी कहियें एम सम्मति सूत्रमा कह्यो छे

कालो सहावनियइ, पुव्वकय पुरिसकारणे पंच । समवाए समत्त, एग ते होय मिच्छत्त ॥ १ ॥

अर्थ—काल लब्धिविना मोक्षरूप कार्य सिद्ध थाय नही एटले काल सर्वनुं कारण छे जे कार्य थवानो होय ते कार्य ते कालें थाय ए काल समवाय अंगीकार करी कह्यो इहां कोइ पूछे जे अभव्य जीव मोक्ष केम जता नथी तेने उत्तर जे अभव्यने कालमळे पण अभव्यमा स्वभाव नथी तेथी मोक्ष जाय नही केमके काल स्वभाव ए बे कारण जोइये तेवारें फरि पूछ्यु जे भव्यजीवमा तो मोक्षे जवानो स्वभाव छे तो सर्व भव्य केम मोक्ष जता नथी तेने उत्तर जे नियति केहवो निश्चय समकित गुण आवे तेवारें मोक्ष पामे एटले काल स्वभाव नियति ए त्रण कारण मान्या तेवारें फरि पूछ्युं जे समकित आदि कारण छे श्रेणीक राजाने हता तो मोक्ष केम न थयो तेने उत्तर जे पूर्वकृत कर्म घणा हता अथवा पुरुषाकार जे उद्यम कर्यो नही फरी पूछ्यु जे शालीभद्र प्रमुखें तो उद्यम घणो कीधो तेनुं उत्तर जे तेमना पूर्वकृत शुभकर्म खप्या नहता माटे पांच समवाय मिल्या कार्यनी सिद्धि थाय तेवारें फरि पूछ्युं जे मरुदेवामाताने तो चार कारण मिल्या पण पांचमो पुरुषाकार उद्यम कांइ कीधो नही तेने उत्तर जे क्षपक श्रेणी चढवानो शुक्ल ध्यान रूप उद्यम कीधो छे माटे पांच समवाय मील्या मोक्षरूप कार्य सिद्ध थाय

जेवारें केवलज्ञाने करी सर्व द्रव्य जेम रह्या छे तेम देखे एटले आकाशद्रव्य लोकालोक प्रमाण छे तेमां अलोकमां बीजु द्रव्य कोइ नथी लोकाकाशना एकेक प्रदेशे धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायनो एकेक प्रदेश रह्यो छे तथा अनंता जीवना अनंतप्रदेश रह्या छे अनंता पुद्गल परमाणु रह्या छे कालनो समय सर्वत्र वर्त्ते छे

हवे छ द्रव्यनी फरशना कहे छे धर्मास्तिकायना एक प्रदेशे धर्मास्तिकायना छ प्रदेश फरस्या छे ते आवी रीते के चार दिशिना चार अने पांचमो नीचे छट्ठो ऊपर ए छ प्रदेश फरस्या छे तथा एक मूल पोतें प्रदेश एम सात प्रदेशनो संबंध छे अने धर्मास्तिकायना एक प्रदेशने आकाशद्रव्य तथा अधर्मास्तिकायना सात सात प्रदेश फरशे छे ते एकज छना प्रदेशने बीजा द्रव्यनो मूलनो प्रदेश फरशे माटे सात प्रदेशनी फरशना छे अने धर्मास्तिकायना एक प्रदेशें जीव पुद्गलना अनंता प्रदेशनी फरसना छे अने लोकने अंते जे धर्मास्तिकायना प्रदेश छे तेने आकाशनी फरशना तो छए दिशीनी छे अने एकमूल प्रदेश सुद्धा सात प्रदेशनी फरशना छे अने बीजा द्रव्यनी त्रण दिशीनी फरशना छे एम सर्व द्रव्यनी फरशना छे अने आकाशथी धर्म अधर्मनी अवगाहना सूक्ष्म छे धर्म अधर्म द्रव्यथी जीवनी अवगाहना सूक्ष्म छे जीवथी पुद्गलनी अवगाहना सूक्ष्म छे

एम छ द्रव्यना गुण पर्याय सामान्य स्वभाव ११ छे अने विशेष स्वभाव दश छे ते श्रीकेवली भगवंत ज्ञानथी जाणे दर्शनथी देखे ते इग्यार सामान्य स्वभाव कहे छे १ अस्ति स्वभाव २ नास्ति स्वभाव ३ नित्य स्वभाव ४ अनित्य स्वभाव ५ एक स्वभाव ६ अनेक स्वभाव ७ भेद स्वभाव ८ अभेद स्वभाव ९ भव्य स्वभाव १० अभव्य स्वभाव ११ परम

स्वभाव ए इग्यार सामान्य स्वभाव सर्व द्रव्यमां छे ए सामान्य उपयोग दर्शन गुणथी देखे हवे दश विशेष स्वभाव कहे छे १ चेतन स्वभाव २ अचेतन स्वभाव ३ मूर्त्ति स्वभाव ४ अमूर्ति स्वभाव ५ एकप्रदेश स्वभाव ६ अनेकप्रदेश स्वभाव ७ शुद्ध स्वभाव ८ अशुद्ध स्वभाव ९ विभाव स्वभाव १० उपचरित स्वभाव ए दश विशेष स्वभाव ते कोइक द्रव्यमां कोइक स्वभाव छे कोइक द्रव्यमा कोइक स्वभाव नथी ए ज्ञानथी जाणे एटले सिद्ध भगवान लोकालोक सर्व ज्ञानोपयोगथी जाणी रह्या छे दर्शनोपयोगथी देखी रह्या छे एहवा अनंत गुणी अरूपी सिद्ध भगवान छे ते समान पोतानी आत्माने जाणे उपादेय करी ध्यावे ते समकित जाणवो

॥ दोहा ॥

अष्ट कर्म वन दाहके, भए सिद्ध जिनचन्द । ता सम जो अप्पा गणे, वंदे ताको इंद ॥ १ ॥
कर्मरोग ओषधसमी, ज्ञान सुधारस वृष्टि । शिवसुखामृत सरोवरी, जय २ सम्यक् दृष्टि ॥ २ ॥
एहिज सद्गुरु शीख छे, एहिज शिवपुर माग । लेजो निज ज्ञानादिगुण, करजो परगुण त्याग ॥ ३ ॥
ग्यान वृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल । अमर अगम पद फल लहो, जिनवर पदवी फूल ॥ ४ ॥
संयत ससर छिहुत्तरे, मनशुद्ध फागुण मास । मोटे कोट मरोट मे, वसतां सुख चोमास ॥ ५ ॥
सुविहित खरतर गच्छ सुविर, युगवर जिनचंदसूर । पुण्य प्रधान प्रधान गुण, पाठक गुणे पंडूर ॥ ६ ॥

तास शिष्य पाठक प्रवर, सुमतिसार गुणवंत । सकळ शास्त्र ज्ञायक गुणी, साधुरंग असवंत ॥ ७ ॥
तासशिष्य पाठक विबुध, जिनमत परमतजाण । भविककमळ प्रतिबोधवा, राज सार गुरुभाण ॥ ८ ॥
ग्यानधर्म पाठक प्रवर, शमदम गुणे अगाह । राजहंस गुरु गुरु शाखि, सहुजगकरे सराह ॥ ९ ॥
तासशिष्य आगमरुचि, जैनधर्मको दास । देवचंद आनंदमें, कीनो ग्रंथ प्रकाश ॥ १० ॥
आगमसारोद्धार यह, प्राकृत संस्कृत रुप । ग्रंथ कियो देवचंदमुनि, ग्यानामृत रस कूप ॥ ११ ॥
कर्यो इहां सहाय अति, दुर्गदास शुभचित्त । समजावन निज मित्रकुं, कीनो ग्रंथ पवित्र ॥ १२ ॥
धर्ममित्र जिन धर्म रत्त, भविजन समकितवंत । शुद्ध अमरपद ओलखण, ग्रंथ कियो गुणवंत ॥ १३ ॥
तत्वग्यानमय ग्रंथ यह, जोवे बाळा बोध । निजपर सत्ता सब लिखे, श्रोताळहे प्रबोध ॥ १४ ॥
ताकारण देवचंद मुनि, कीनो आगम ग्रंथ । भणसे गुणसे जे भविक, लहेशे ते शिवपंथ ॥ १५ ॥
श्रवक शुद्ध श्रोतारुची, मिळ्यो एह संयोग । तत्वग्यान श्रद्धासहित, वळी काय निरोग ॥ १६ ॥
परमागमसुं राचजो, लहेसो परमानंद । धर्मराग गुरु धर्मसें, धरजो ए सुखकंद ॥ १७ ॥
ग्रंथ कियो मनरंगसें सितपख फागुणमास । सोमवार अरु तीज तिथि, सफळ फळी मन आस ॥ १८ ॥

॥ इति श्रीआगमसारोद्धार ग्रंथ समास ॥

(पत्र ५१ दूसरी पृष्ठकी पचमी पंक्तिकी अशुद्धि है)

तथा कोइ पूछे जे प्रतिमानी पूजातो पहेला आस्रव मध्ये लखी छे तेने कहीये जे तुम्हे मृषावाद बोलो छो इहां प्रश्नव्याकरण सूत्रमां पाठ इम छे नही, जिहां पाठ छे ते । लिखीये छे अविजाणओ परिजाणओ विसयहेउ इमेहिं कारणेहिं किं ते करीसण पोक्खरणी वावि वप्पणी कूवसरतलाग चिति वेति खाति आरामविहार थूभ पागारदार गोपूर अट्टालगच–रीय सेतु संकम पासाय विकप्प भवण घर सरणि लेण आयण चेइय देवकुल चित्तसभाए वा आयत णवसई भूमिघर मडवाणं कए हिंसंति इहा पांच थावरना पांच आलावा छे तेहने छेडे कोहा माणा माया लोभा हिंसा रती इत्यादि पाठ छे ते जे जीव इंद्रीना सवादने माटे चेइम य कहेता मतिमादिक करे ते आस्रव खाते ए पाठ छे पण पूजानो पाठ नथी ते मृषा शामाटे बोलो छो तथा प्रश्नव्याकरणसूत्रे बीजे संवरद्वारे जे आलावो छे ते लिखीये छे सयगयपत्ति आयरीय उवज्झाय सेह ग्लांणीप तवस्सि सीस गुरु कुल गणसंघ चेइयट्ठे निज्जरट्ठी वेयावचं अणिस्सीओ दसविहंबहुविह करेई एआलावे आचरज प्रमुख चेइय केहेतां जिनप्रतिमानो वैयावच्च करे निर्ज्जराना

अर्थी अभिस्सीओ कहेला जस कीर्त्तिनी वांछा रहितपणे वैयावच्च दशप्रकार तथा अनेक प्रकारनो करे इहां चेईय कहेतां प्रतिमा छे तो खोटी कल्पना स्यामाटे करो छो तथा बीजे प्रश्ने पूछ्यो जे अहिंसाना ६० नाम कह्या छे अभओ सच्चस्सवि अनाघाओ सुक्खाय विसी पूया विमलप्पभा निम्मल करीयि पव भाइणी निय–गुण निम्मियाई पज्जय नामाणि हुंति अहिंसाए तिहां प्रतिमा तथा पूजानो नाम नथी तेहनो उत्तर तिहां अहिंसानो नाम जाणो तेहनो अर्थ देवपूजा छे पूजा एहवो दयानो नाम छे तो अजाण्यो इमस्यों प्ररूपणा करो छो बीजुं पूजा तो श्रीअरिहंत प्रतिमानी ते तो विनय तथा वैयावच्च ते अभ्यिंतर तपना भेद छे ते तप मोक्षनो मार्ग छे श्री उत्तराध्ययन सूत्रे २८ मे अध्य यनें तपने मोक्षनां च्यार कारण कह्या ते मध्ये गण्यो छे तथा तो पछे पुछ्यो जे वोलनी खबर न होवे ते मिथ्यात्वी घोलीये तथा श्रावके कोणे देहरा कराव्या तथा प्रतिमा पूजी तेहनो उत्तर श्रीसमवायांग सूत्रे तथा नंदी सूत्रे सर्व आगमनो सूच छे ते मध्ये ए पाठ छे तिहा उपासक दशानो नोंध छे ते आलायो छे ते लखीए छे सेकिंते उवास-गदसाओ उवासगदसासुण समणोवासगाणं नगराई उज्जाणाई चेइआई वणसंडाई समोसरणाई रायाणो अम्मा-पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इह लोइआ पारलोईया इड्ढिविसेसा भोगा परिआय सुअपरिग्गहीया तवोवहाणाई सीलव्वयगुणवेर–मण पच्चक्खाणपोसहोववास पडिवज्जणा पडिमा–ओ उवसग्गसंलिहणाओ भत्तपच्चक्खाणइया उ–वगमणं देवलोगगमणं सुकुलपच्चाया पुण बोहि–लाभो अंत किरीया आघविज्जंति ए पाठ छे इहां चेइयाई शब्दे देहरा तथा जिन प्रतिमा जाण ज्यो इहां चेइय पहलो अर्थ बीजो थाये नहीं जे वननो अर्थ करे तेतो उद्यान कहो–कहो

पाठ जूदो छे कोइ साधूनो अर्थ करे ते धम्मायरीया ए पाठ जूदो छे ज्ञाननो अर्थ करे ते सुय ए पाठ जूदो छे ते वास्ते चेइय शब्दे जिन प्रतिमानो अर्थ छे तथा तुम्हे पुछयो जे द्वारिका राजग्रहमें देहरा तथा प्रतिमानो पाठ किहां छे तेहनो उत्तर नवीसूत्रे अणुत्तरोववाइ तथा अंतगडना नोंधनो पाठ जो ज्यो तथा तुम्हे कहेस्यो इवला घोल उपासक दशा प्रमुखे दीसता नथी तेहनो उत्तर जे नवी तथा समवायांगमे जे पाठ तेहनो कोण उत्थापी शके ते जो ज्यो तथा तमे पुछ्युं जे किणे श्रावके प्रतिमा पूजी छे तेहनो उत्तर घणे श्रावके प्रतिमा पुजी छे ते पाठ श्रीभगवतीसूत्रे तुंगीया नगरीना श्रावको वरणव्या तिहां अभिगय जीवाजीवा इत्यादिक पाठ घणा छे तिहां एहयो पाठ छे असहिज्जदेवासुरनागसुवण्णजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगादी–एहिं देवगणेहिं निगाया ओपावयणाओ अणतिकम्मणिज्जा निग्गथे पावयणेनिस्संकीया निक्कंखीया लद्धट्ठा गहीयट्ठा इत्यादि जे श्रावक कोई जातिना देवतानो साहज वांछता नथी तो कोई बिजा देवतानी पूजा किम करे एहवा श्रावक जे देवने देव बुद्धि मानता हवे तेहनेज पूजे ते श्रावक, थिवर आव्या तेवारे एकवार सर्व एकठा मिल्यां एहयो विचार कर्यो जे एहवा निर्ग्रंथनो नाम सांभल्यानो पिण महा लाभ छे तो तेहनो वांदवा जातां सेवा करता तो महानिर्ज्जरा महा पर्यवसान कहेतां मोक्ष थाय इम विचारी पोते पोताने घरे गया पछी सूत्रे पाठ छे ण्हाया कयवलि कम्मा कयकोउयमंगलपा यछित्ता सुद्धा पावेसाइ वत्थपरिहीया अप्पामहग्घाभरणालंकीयशरीरा सयाओगिहाओ पडिनिक्खमति, तिहां न्हाया ते अंघोलकीधा कयवलिकम्मा, ते देवपूजा कीधीः कयकोउयमंगल ते तिलकादिक कर्या पछी वस्त्र पेह

[illegible] [illegible] [illegible] पछी परपी निकस्या पछीले सिद्धार्थ राजा तथा रितभद्रा सुदर्शनशेठ श्रम सुभद्रश्च
[illegible] देव [illegible] श्रावक कार्तिक शेठ पोहता गया छे तेणारे कणवस्मिकम्मा तथा पछी परे आपी साहमीपछठ
[illegible] [illegible] [illegible] निकस्या त्यारे [illegible] कणवस्मीकम्मा प पाठ छे इत्यादिक श्रावक अन्य देवनी पूजा न करे
[illegible] न पूजे श्रीजिन देवनेज पूजे तथा [illegible] कदरये कणवस्मिकम्मा पाठ कहीयारा प्रमुख अनेक थानके छे तेमा
[illegible] [illegible] तेहने देवबुद्धि माने ते तेहने पूजे तथा [illegible] पाठके कीमि पूजा करी हशे ते तो पाठकने मार्गिने
[illegible] [illegible] न करे [illegible] [illegible] पाठक पूजा करता दीसे छे तो कणवस्मिकम्मा प पाठनो बीजो अर्थ धारे
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दीसे छे पन जिहां देहरा प्रतिमानो पाठ नथी तेहनो उपर जे दीक्षाने उतावळा थया
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नथी जो देहरा करावता तो परे स्थाने रहे अने पहेला देहरा प्रतिमा छे ते तो नवीयत्रे
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पहेलां तथा तुमे तुम्हे ते तीर्थंकर महन्यपणे छतां साधु साध्वी श्रावक
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थया छे ते पाठ [illegible] सूत्रमां छे तथा तुमे उस्यो ते प्रतिमा एकेन्द्रिय दळ
छे तेहना [illegible] [illegible] तेहने भय न हुवे ते पोते ते फारले श्रीभगवते तो जिनप्रतिमा कहीं पोठावी छे
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तो तुमे कठोर वचन [illegible] पोतो छो तथा तुमे [illegible] पंडला करो छो ते दीसी तो
[illegible] तो [illegible] [illegible] छो जिहां तुमे कहस्यो ते मतरा मनमें जो गिर छे तो जिनपडिमा मांहता पिण प्रमाण
[illegible] गिर छे [illegible] सूत्रमध्य तुम्हा गहनी आशातना टाळवी कही छे ते पाठ अर्थीन छे ए पीण गर्य तुम्हो बहु

मान छे प्रतिमानें बहुमाने सिद्धनो बहु–मान छे तथा सुधर्मा सभामाहिं जिननी दाढा छे ते वंदनीक पूजनीक छे ते तो अजीव स्कंध छे तथा तुमे लख्यो जे परदेशी राजाए प्रतिमा कां न करी ते परदेशी श्रावक थया पछी केटलोक जीव्या छे ते तथा सर्व श्रावक एकज करणी करे एसो नियम छे तथा परदेशीए तथा आणंद श्रावके कोइक साधुने पडिलाभ्या नथी ते माटे तुम्हे साधुने विहराव्यामें दोष मानस्यो ए विचारी ज्यो ज्यो तथा लख्यु छे जे सूरीआमे जे प्रतिमा पूजी ते राजधानीना मगळीक माटे पूजाकरी ते तो खोटुं बोलो छो ए पाठ सूत्रमें नथी सूत्रमें तो एहयो पाठ छे हियाए सुहाए खेमाए निस्सेसाए आणुगामीयत्ताए भविस्सइ निःश्रेयस कहेता मोक्ष भणीए अर्थ छे तथा पच्छा शब्दे जे इह लोकनो अर्थ छे इम कहे छे ते मूढ छे दर्दुर देवताने अधिकारे पच्छा शब्दे आवता भवनो अर्थ छे तथा आचारांगसूत्रे जस्सपुव्विमिनो तस्स पच्छायिनो इहां पूर्व शब्दे पूठलो भव पच्छा शब्दे आवतो भव लीधो छे तथा ए भवे समकितनो लाभतो घणो छे तथा तीर्थंकर वांद्यानो फलनो पाठ उववाई मध्ये तथा पंचमहाव्रत पाल्यानो पाठ आचारांग मध्ये तिहां पण हियाए इत्यादिक पाठ छे ते बे ठेकाणे लाभ मानो छो तो जिनप्रतिमा ठामे ना स्याने कहोछो अने किहां जिनप्रतिमा पूजानो पाप कह्यो नथी अने होयतो देखाडो तुमें लिख्यु जे भगवंते हिंसानी ना कही छे तेतो अमे किहां कहुछु जे हिंसा करवी, पण भगवंते किसे सूत्रे प्रतिमा पूजानी ना कही नथी प्रतिमानी १७ प्रकारनी पूजा सूत्रे कही छे तथा तुमे प्रतिमानी पूजा हिंसामां गिणो छो ते इमनथी प्रतिमानी पूजातो विनय तथा वेयावच्च धर्मसा छे तथा पूजा हिंसामे गणी तो ठाणांगे नदीमें पडती साध्वीने साधु काढे तेमां हिंसा

गणी नहीं तथा आचारांगसूत्रे बीजा साधु अजाणे पण थर्करानी भूखे लूण बीहरीने पछे जाणे से लूण बीहराव्यो ते आणी ते पोते खायेठे पोते पीये तथा बीजा साधु संभोगीने आपे ते खाये पीए तथा विषम थाटे चेळने रूखने लताने गुच्छाने अवलंबी उतरे ओ पाठ आचारांगसूत्रे छे तथा भगवती सूत्रमे साधुना हरस काढे तेहने क्रिया कर्म लागे नहीं तथा मक्षिलापकी पूतळीमे कवळ मूंक्या ते माटे धर्ममाटे हिंसाकरी तथा सुबुद्धि मंत्रीए पाणी पलटाव्यो ते धर्म माटे करी पिण मतबुद्धि न कह्या छे भगवती सूत्रे २५ मे शतके साधु शासन माटे तेजो लेश्या मुके तेहने आराधक कह्यो तथा जम्बूद्वीपपन्नत्तीए निर्वाणमहोच्छव कह्यो छे धूमकर्या ते जिणमत्तिए धम्मोत्ति एपाठ छे इम केटला पाठ लीखीए अनेक पाठ छे तथा नवी सूत्रे जे आगम कह्या ते उत्थापीने ३२ मानोछो ते केनी आज्ञा छे तथा आवश्यकसूत्र पडिक्कमणा विना साधु पणो श्रावक पणो हुवेज नही ते तुम्हे आवश्यकसूत्र पडिक्कमणो मानता नथी तो श्रावकपणो ने साधुपणो केम धरावोछो श्रीभगवतीसूत्र साधु साध्वी श्रावक श्रावीका पचमा आराना छेहडा पर्यंत कह्या छे ते तुमारी श्रद्धामें हिवणां साधु साध्वी कोणछे तथा सूत्रे आचरज उपाध्याय कुल गणनी निश्राये विचरे ते आराधक ते तमे कोनी निश्राये विचरोछो ते लिखज्यो तथा श्रीभगवतीसूत्रे गाथा छे पढमो गीयत्थ विहारो, बीयोगीयत्थनीसीओ भणिओ, इत्तो तइय विहारो, नाणुन्नाओ जिणवरेहिं २ पहलो अर्थ गीतार्थ होय ते पोते विहार करे अथवा गीतार्थनी निश्राये विहार करवो एहथी तीजा विहारनी अरिहंते आज्ञा दीधी नथी, ते माटे तुमे किस्या गीतार्थनी निश्राये विहार करोछो तथा योग उपाधान वहीने सिद्धांत भण्ये तेपण श्रावक आचा–

रांगाविकसूत्र मध्ये नथी ते निशीथमां कह्यो छे जे भिक्खु अन्नउत्थीय वा गारत्थियंवा वायणं वाएई वाए जंतं साइज्जति तस्सचोमासीयं परिहार ठाणं जे गृहस्थाने सूत्र भणावे अथवा भणावताने अनुमोदे तेहने चार मासनो पाछो चरित्र आवे तथा प्रश्नव्याकरणसूत्रे अह केरीसीयं पुण सच्चमुभासियव्वं जस्यदव्वेहिं गुणेहिं पज्जवेहिं कम्मेहिं बहुविहेहिं आगमेहिं नामाक्खायनिवाय उवसग्गतद्धिअसमास संधिपय जोगउणादि कीरीयाविहीणसरधाउस रयिभत्ति वन्नजुत्तं भासियव्वं तथा अनुयोगद्वारे ७ नय, ४ निक्षेपा, ३ काल तीन लिंगातीन, आण्याविना उपदेश देवो ते मारग नथी इत्यादिक अनेक बोलछे ते गीतार्थनी सेवनाथी पामीये इतिभद्रं जेकोई श्रीजिनप्रतिमानी पूजामध्ये फूल पूजानी शंका करे तेहने कहीये जे श्रीरायपसेणीसूत्रे १७ भेदी पूजानो पाठछे पुप्फारूहण १ माला रूहण २ तह वन्नारूहणं ३ तथा पुप्फगिह ४ पुप्फपगरं ५ एतली पूजा फूलनी छे तेमाटे पूजा फूलनी ते प्रमाण छे, तथा श्रीभगवतीसूत्रे पण सूरीआभनी पेरे पूजानी भलामणना पाठ अनेक छे तथा ज्ञातासूत्रे द्रौपदीने अधिकारे १७ प्रकारी पूजानो पाठ छे समवायांगसूत्रे चौतीस अतिशयने अधिकारे जलयथलय भासुरदसद्धवन्नेण जाणु स्सेहप्पमाणमित्तेणं पुप्फपुजोवयार करेई इत्यादि पाठ छे इहां समवायांगसूत्रमें देवता मनुष्यनो नाम कह्यो नथी तथा श्रीउववाईसूत्रे कोणिकने अधिकारे श्रीवीर समोसर्या तेवारे अनेकजन चपाथी निकल्या जे अप्पेगइया वंदण वत्तियाए अप्पेगइया पूयणवत्तियाए अप्पेगइयाअसुयं सुयस्सामो अप्पेगइयाविउलाईअट्ठामो हेऊआइ य पसिणाई गहिस्सामो, इत्यादि पाठ छे तिहां पूयणवत्तीयाए ए पाठनो अर्थटीका मध्ये पूजन पुप्पमालाविना इम कह्यो छे इहा श्री तीर्थंकरने

पुप्फनी पूजादीसे छे एपाठ श्रीभगवतीसूत्रेपणछे तथा नवीसूत्रे श्रुतज्ञानने पाठे थे इमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पन्न-
नाणदंसण धरेहिं तिलुक निरक्खीय महीअ पूइएहिं पाठनो अर्थ टीकाकारे पिणमहीयशब्दे वंदनादि पूइएहिं पुप्फमा
लादिके करीने ए पाठ अनुयोगद्वारमध्ये पण छे इम पुप्फपूजाना अनेक पाठ छे ते माटे शंका न करवी वली केइक
इम कहे छे जे फूल वेधाता जरे ते चढाववा पण पोते चूंटी चढाववा नही तेपण अयाण्यु कहे छे जे श्रीजीवाभि
गमसूत्रे तवेणं से विजयदेवे पोत्थयरयणगिह्नइ पो० रयणं गिह्नित्ता० पोत्थयरयण मुयति पो० २ त्ता पोत्थयरयणं विहा
डेति पो० २ त्ता पोत्थय रयण वाएइ पो० २ त्ता धम्मियं ववसायगेण्हेतिघ० २ त्तापोत्थयरयण पडिनिक्खमति पो० २
त्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेत्ति सी० २ त्ता ववसायसभातो पुरत्थिमिल्लेण दारेणं पडिनिक्खमइपु० २ त्ता जेणेवनंदा पुक्ख
रणी तेणेव उवागच्छतिव० २ त्ता णदापुक्खरिणीं अणुप्पयाहिणि करेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसतिअ० २
त्ता पुरत्थिमिल्लेणं तिसोपाणपडिरूवेण पच्चोरूहतिप० २ त्ता हत्थपायं पक्खालेतिह० २ त्ता एग मह सेतं रजतामय
विमलसलिलपुण्ण मत्तगयमहामुहागिइसमाणं भिंगारं पगिह्नतिप० २ त्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जावसतपत्ताइं सहस्सप
त्ताइं ताइं गेह्नत्ति २ त्ताणंदातो पुक्खरिणिओ पुच्चुत्तरेइप० २ त्ताजेणेव सिद्धायतणे तेणेव पाहारेत्थगमणाए तएणं
तंविजयं देवं चत्तारी सामाणिय साहस्सीओ, जाव अण्णेबहवे वाणमंतरा देवा देवीओ अप्पेगतिया उप्पलहत्थ
गता जाव सत सहस्स पत्तहत्थगया विजय देवं पिठिओ अणुगच्छइअ० त्ता इहां फूल चूंटी लीधां छे एआलावे
विजयदेवे पोते वावडीमें उतरीने फूल चूंटी लीधां तथा सामानिक देवता तथा बीजे देवतावे पिण फूक पोताना हाथथी
२

लीधां छे इहां कोई पूछस्ये जे तिहीं कोइ माली नथी ते माटे पोते लिधा तेहनो उत्तर जे माली नथी पिण देवता चाकर
लोक घणाछे तेहनेज पासे का न मंगाये, जो पुष्प आण्यानो विधि होवे तो पण पोताना हाथथी लीधानो विधि छे ते
माटे पोते थायरी मध्ये उतरी लीधाछे तथा श्रीरायपसेनी सूत्रे सूरीयाभ अधिकारे ततेणं से सूरियामेदेवे पोत्थयरयणं
गिह्णइ पो० गिह्णित्ता पोत्थय रयण मुयइ पोत्थय रयणं विहाडेइ वि० त्ता पोत्थयरयणं वाएति वा० त्ता धम्मिय ववसायं गिह्
णइ गि० त्ति पोत्थय रयण पडिणिक्खमति० त्ता २ सिंहासणओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता ववसाय सभाओ पुरत्थिमिल्लेण दारेणं पडिनि
क्खमइ प० त्ता जेणेव नंदापोक्खरणी तेणेव उवागच्छइ उ० त्ता नंदापोक्खरणी पुरच्छिमिल्लेणं तोरणेणं तिसोपाणपडि
रूवेण -पच्चोरुहति० २ त्ताहत्थपायं पक्खालेइ २ त्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए एगं सेयमहं रययामय विमल
सलिलपुण्णं मत्तगयमुहागितिसमाण भगारं पगिह्णंति त्ता आइं तत्थउप्पलाइं जायसयसहस्स पत्ताइं गिह्णंति णंदाओ
पुक्खरिणीओ पच्चोरुहई० २ त्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए तएणं त सूरियाभ देवं चत्तारि सामा
णिय साहस्सीओ जाय सोलस आयरक्ख देव साहस्सीओअण्णेय बहवे सूरियाभविमाणे जावदेवा देवीओ अत्थे-
गईया उप्पलहत्थगया जाव सत्त सहस्स पत्तहत्थगया सूरियाभ देवं पिट्ठओ समणुगच्छंति ततेणं सूरियाभदेवं
बहवे आभिओगिय देवाय देवीओय अत्थेगइया कलसहत्थगयाओ जाव अत्थेगइया धूवकडुच्छहत्थगया हट्ठ
तुट्ठा जाय सूरियाभं देवपिट्ठओसमणुगच्छंति ततेणंसे सूरियामेदेवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव अण्णेहिं-
य ब-हुर्हि सूरियाभविमाण वासीहिं देवेहिं देवीहिंयसर्द्धि संपरिवुडे सव्वड्ढीए जावणाइयरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव

उवागच्छइ गिहइत्ता पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति० २ त्ता जेणेव जिणपडिमाउ तेणेव उवागच्छइ जिणपडि
माणं आलोए पणामं करेति० त्ता २ लोमहत्थगं गिण्हइ० त्ता २ जिणपडिमाणं लोमहत्थएणं पमज्जइ० २
त्ता जिणपडिमाओ सुरभिणागंधोदएणं ण्हाणेति ण्हाणित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाणं अणुलिंपइ २ त्ता जिण
पडिमाणं अहयाइं देवदूसाइं जुयलाइं णियंसेइ० २ त्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं चुण्णारुहणं गंधारुहणं वण्णारुहणं
वत्थारुहणं आभरणारुहणं करेइ करेत्ता आसत्तोसत्त विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ० त्ता करयलप
ब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं मुक्क पुप्फ पुंजोवयारकलियं करेति करेत्ता जिणपडिमाणं पुरतो
अच्छेहिं सण्हेहिं सेएहिं रययामएहिं अच्छरसातंदुलेहिं अट्ठट्ठ मंगले आलिहइ तंजहा सत्थिय आयदप्पण तयाणंतरं च णं
चंदप्पभ वइरवेरुलियविमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागुरु पवर कुंदरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंत गंधुत्तमाणु
विद्धं च धूववट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुयं पग्गहिय पयत्तेण धूवं दाउण जिणवराणं अट्ठसयविसुद्ध गंथ जुत्तेहिं
महावित्तेहिं अपुणरुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं संथुणइ संथुणित्ता सत्तट्ठ पयाइं ओसरइ० त्ता वामं जाणुं अंचेइ दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु
तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ० २ त्ता ईसिं पच्चुण्णमइ ईसिं पच्चुण्णमित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए
अंजलिं कट्टु एवं वयासी णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदति णमंसइ० २ त्ता एहवो पाठ छे त्यां
कोइ कहे छे पूजा कीधी छे सामानिक प्रमुख पासे मंगाव्या नथी यथा जंबुद्वीपपन्नत्तीमें जम्माभिसेके जेणेव खीरोद
समुद्दे तेणेव उवागच्छइ० त्ता खीरोदगं गिण्हंति २ त्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं पउमाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति० त्ता

इत्यादि सूत्रमे पाठ हाथना चूट्या फूल छेयाना छे तथा कोइक कहसे जे एतो चूट्या नथी सहेजे पड्या लीधां छे तेहने कहीये छे जेह इच्चार गमे सहेजे पड्या थायकी मध्ये हवेज नथी तथा नग्गइने अधिकारे नगइ राजाए ओयानी मांज रीयो पोते चूंटी लीधी तेयारे कटक सर्वे चूंटी लीधी ते पाठ उपधायी मध्ये जोजो अन्नयाणु जुत्तनिग्गमोपेच्छइ कुसुमा चूम-राइणाएगा मजरी गहीया एवंखधावारेण सेणं मखरीपत्त पयाल छयाइ गहियाइ कठाविसेसोकओ पडिनियत्तओ पुच्छइ कहे सोरुक्खो असखेणा दंसीओ कह एसअयत्योभणाइ तुम्हेहिं एगामजरी गहीया पच्छा सव्वणं गहेतेणं एवं कयो इहा गहीय शब्दे चूट्यानो अर्थ छे तथा कोइ कहेस्ये जे एतो देयताये कर्यो छे ते श्रावके कर्यानो किहां पाठ नथी तेहने कहीये जे जो देयतानी करणी तारे न करवीतो शक्रस्तव किमकरे छे तथा आम्र केम मानो छो आम्रनो कलस चोलोछो ते देयतानी करणी छे तथा सूरियामनी पूजानी भलामण द्रोपदीने पाठे छे देयतानी पूजा करणी तथा मनु ष्यनो पाठ एकज छे ते माटे देयतानी पूजा करणी श्रावक करे ए भला प्रमाण छे तथा जे फूल चूटवानी ना कहे ते वींटना जीयनि फीलामना माटे तेयारे फूलनी पूजा किम करी शके अने फूलनी पूजानो तो सूत्रे पाठ छे तथा जे पूजाने हिंसामे गणे तेहने कहीये जे श्रीप्रश्नव्याकरण सूत्रे प्रथम संवरद्वारे अहिंसा ना ६० नाम कह्या छे तिहां पूजा ते दया कही छे ते पाठ लिखीये छे अभउ सव्वस्सवि अनाघाओ चुक्खपवत्ती पूया विमलप्पभा निम्मल करती एव माइणि नियगुण निम्मीयाइ पज्जाय नामाणि हुंति अहिंसाए भगवइए इत्यादि पाठे पूजा ते अहिंसामें गणी छे तो तुम्हे हिंसामे किम गणोछो तथा भगवती सूत्रे सुभयोगं पडुच्च अणारंभी ए पाठ शुभयोग प्रवृत्तिने आरंभनी ना कही

छे विनय तथा वेयावच ते तपना भेद छे तप ते मोक्ष मार्ग मध्ये श्रीउत्तराध्ययने २८ मे अध्ययने कह्यो ते तुमे हिंसामें केम कहोछो तथा विवहार सूत्रे सिद्ध वेयावच्चेण महानिज्जरा महापज्जवसाण भवति ते माटे सिद्ध वैयावच ते पूजा छे तथा कोइ पूछे जेभावके प्रतिमा किहां पुजी छे तेहने कहेवो के श्रीभगवती सूत्रे तुंगीयानगरीने श्रावके पूजा करी छे संख पुष्कली ये पूजा करी छे तथा समवायांग सूत्रे श्रावकांगीनी हुंडीने अधिकारे उपासक दशानी हुंडी मध्ये दश श्रावकनां चैत्य पडवो पाठ छे चैत्य तो साधु थाय नही ज्ञान थाय नहीं ते सर्वना पाठ जुदा छे तथा नंदी सूत्रे पिण पाठ छे तथा नंदी मध्ये जे आगम कह्या ते सर्व माने तेज समकिति जाणवो श्रीअनुयोगद्वार सूत्रे निर्युक्तिनी हा कही छे ते निर्युक्तिमध्ये पूजाना अनेक अधिकार छे तथा तंदुलवेयालीयपयन्नानी टीकामध्ये समवसरणना फूल सचित्त ते ऊपर साधु साध्वी चाले प्रवचनसारोद्धारनी टीकाये पण ए समत छे तथा कोइ कहस्ये जे फूलने प्रोइ परोयया नहीं तेहने कहीये जे हीर प्रश्नमध्ये पाठ छे तथा वरगंधोवमेहेवेति श्लोक व्याख्यायते श्राद्धदिन कृत्ये प्रोत पूजाक्षराणी वर्त्तते तथा आद्य पद्येषु श्रीजिनवल्लभ सूरि कृत पूजा फुलके ऽपि प्रोत पुष्पाक्षराणि सति तथा हरिभद्र सूरि कृत पूजा पंचासके अहरेहड तह कीरइ ए गाथाना आशयथी पिण प्रोया फूलनी हा जणाय छे तथा उमास्वाति वाचक कृत पूजा पटलमां पिण एमज जणाय छे



इम आणी शासनरुचि । करजो श्रुतअभ्यास ॥ पामी चारित्रसपदा । लेहेसो लीलविलास ॥ १३ ॥
दीपचंद्रगुरुराजने । सुपसायें उल्लास ॥ देवचंद्र भविहितभणी । कीधो ग्रंथप्रकाश ॥ १४ ॥
सुणसे भणसे जे भविक । एह ग्रंथ मनरंग ॥ ज्ञानक्रियाअभ्यासतां । लहेशे तत्त्वतरंग ॥ १५ ॥
द्वादशसार नयचक्र छे । मल्लवादिकृत वृद्ध ॥ सप्तशतिनय वाचना । कीधी तिहां प्रसिद्ध ॥ १६ ॥
अल्पमतिना चित्तमें । नावे ते विस्तार ॥ मुख्यमूलनयभेदनो । भाख्यो अल्पविचार ॥ १७ ॥
खरतरमुनिपति गच्छपति । श्रीजिनचंद्रसरीश ॥ तास शीस पाठकप्रवर । पुन्यप्रधान मुनीश ॥ १८ ॥
तसु विनयी पाठकप्रवर । सुमतिसागर सुसहाय ॥ साधुरंग गुणरत्ननिधि । राजसार उवज्झाय ॥ १९ ॥
पाठक ज्ञानधर्म गुणी । पाठक श्रीदीपचंद ॥ तास सीस देवचंदकृत ॥ भणता परमानंद ॥ २० ॥

इति श्रीनयचक्रविवरण समाप्तम् ॥

इति जीवविचारादिप्रकरणसंग्रहः तथा

आगमसार–नयचक्रसारः समाप्तः।